राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध :

विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह

(एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध)

सिक्किम विश्वविद्यालय

में मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम. फिल.) उपाधि की आंशिक परिपूर्ति हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध

भानुभक्त बस्नेत

हिंदी विभाग

भाषा एवं साहित्य संकाय

सिक्किम विश्वविद्यालय

गंगटोक – 737102

दिसंबर – 2021

राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध :

विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह

(एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध)

अनुसंधित्सु

भानुभक्त बस्नेत

पंजी. सं. 19\M.Phil\HND\01, दिनांक 13\08\2020

हिंदी विभाग

भाषा एवं साहित्य संकाय

सिक्किम विश्वविद्यालय

गंगटोक – 737102

राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध :

विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह

(एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध)

शोध- निर्देशक

डॉ. दिनेश साहू

अनुसंधित्सु

भानुभक्त बस्नेत

हिंदी विभाग

भाषा एवं साहित्य संकाय

सिक्किम विश्वविद्यालय

गंगटोक – 737102

राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध :

विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह

(एम.फिल. लघु शोध-प्रबंध)

अनुसंधित्सु

भानुभक्त बस्नेत

पंजी. सं. 19\M.Phil\HND\01, दिनांक 13\08\2020

द्वारा

सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक, के हिंदी विभाग में मास्टर ऑफ फिलॉसफी

(एम. फिल.)

उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध

सामदुर, तादोंग - 737102
सिक्किम, भारत
3592-251212, 251415, 251656
- 251067
- www.cus.ac.in

सिक्किम विश्वविद्यालय
SIKKIM UNIVERSITY

6th Mile, Samdur, Tadong-737102
Gangtok, Sikkim, India
Ph. 03592-251212, 251415, 251656
Telefax : 251067
Website : www.cus.ac.in

(भारत के संसद के अधिनियम द्वारा वर्ष 2007 में स्थापित और नैक (एनएएसी) द्वारा वर्ष 2015 में प्रत्यायित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A central university established by an Act of Parliament of India in 2007 and accredited by NAAC in 2015)

दिनांक : 06/12/21

घोषणा-पत्र

मैं भानुभक्त बस्नेत (पंजी. सं. 19\M.Phil\HND\01, दिनांक 13\08\2020) एतद्द्वारा घोषणा करता हूँ कि मैंने सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक के हिंदी विभाग के अंतर्गत एम. फिल. उपाधि हेतु "राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध : विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह" विषय पर डॉ. दिनेश साहू के निर्देशन में अपना लघु शोध-प्रबंध पूर्ण किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मेरा मौलिक कार्य है। मेरे संज्ञान में इसे अंशतः या पूर्णतः इस विश्वविद्यालय या किसी अन्य संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

इसे सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक के सम्मुख हिंदी विषय में मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम.फिल.) की उपाधि के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है।

विभागाध्यक्ष	शोध-निर्देशक	अनुसंधित्सु
(डॉ. हरदीप सिंह)	(डॉ. दिनेश साहू)	(भानुभक्त बस्नेत)

अध्यक्ष / Head
हिंदी विभाग / Department Hindi
भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ
School of Languages and Literature
सिक्किम विश्वविद्यालय (केंद्रीय विवि)
Sikkim University (A Central University)

, सामदुर, तादोंग - 737102
सिक्किम, भारत
3592-251212, 251415, 251656
- 251067
- www.cus.ac.in

6th Mile, Samdur, Tadong-737102
Gangtok, Sikkim, India
Ph. 03592-251212, 251415, 251656
Telefax : 251067
Website : www.cus.ac.in

सिक्किम विश्वविद्यालय
SIKKIM UNIVERSITY

(भारत के संसद के अधिनियम द्वारा वर्ष 2007 में स्थापित और नैक (एनएएसी) द्वारा वर्ष 2015 में प्रत्यायित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A central university established by an Act of Parliament of India in 2007 and accredited by NAAC in 2015)

दिनांक : 6/12/21

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि भानुभक्त बस्नेत (पंजी. सं. 19\M.Phil\HND\01, दिनांक 13\08\2020) द्वारा सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक में एम.फिल. (हिंदी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत "राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध : विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह" विषयक लघु शोध-प्रबंध उनके शोधकार्य का परिणाम है। जहाँ तक मेरी जानकारी है इस विषय के अंतर्गत किसी भी विश्वविद्यालय अथवा अन्य किसी संस्था में किसी भी उपाधि हेतु अद्यावधि कोई शोध-प्रबंध प्रस्तुत नहीं किया गया है। मैं इस लघु शोध-प्रबंध को सिक्किम विश्वविद्यालय, गंगटोक में एम.फिल. (हिंदी) की उपाधि हेतु मूल्यांकन के लिए प्रस्तुत करने की संस्तुति देता हूँ।

शोध-निर्देशक

दिनेश साहू 6/12/21

(डॉ. दिनेश साहू)
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक-737102

सामदुर, तादोंग - 737102
सिक्किम, भारत
592-251212, 251415, 251656
- 251067
- www.cus.ac.in

6th Mile, Samdur, Tadong-737102
Gangtok, Sikkim, India
Ph. 03592-251212, 251415, 251656
Telefax : 251067
Website : www.cus.ac.in

सिक्किम विश्वविद्यालय
SIKKIM UNIVERSITY

(भारत के संसद के अधिनियम द्वारा वर्ष 2007 में स्थापित और नैक (एनएएसी) द्वारा वर्ष 2015 में प्रत्यायित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A central university established by an Act of Parliament of India in 2007 and accredited by NAAC in 2015)

दिनांक 06/12/21

प्लेजरिज्म चेक प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि भानुभक्त बस्नेत (पंजी. सं. 19\M.Phil\HND\01, दिनांक 13\08\2020) ने "राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध: विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह" विषय पर डॉ. दिनेश साहू (सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, सिक्किम विश्वविद्यालय) के निर्देशन में एम.फिल. हिंदी उपाधि हेतु लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को उरकुंड सॉफ्टवेर की सहायता से प्लेजरिज्म परीक्षण करने के पश्चात् 7% की साम्यता प्राप्त हुई है, जबकि सिक्किम विश्वविद्यालय के निर्धारित मानक के अनुरूप यह साम्यता 10% तक स्वीकार्य है। अत: भानुभक्त बस्नेत के लघु शोध-प्रबंध को मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने की अनुमति दी जाती है।

अनुसंधित्सु	शोध-निर्देशक	विभागाध्यक्ष	पुस्तकालयाध्यक्ष
6/12/21	6/12/21		6/12

अध्यक्ष / Head
हिंदी विभाग / Department Hindi
भाषा एंव साहित्य विद्यापीठ
School of Languages and Literature
सिक्किम विश्वविद्यालय (केंद्रीय विवि)
Sikkim University (Central University)

पुस्तकालयाध्यक्ष
Librarian
Central Library

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्राक्कथन **i – iv**

प्रथम अध्याय : शोध–परिचय **1-9**

1.1. शोध का शीर्षक
1.2. शोध का परिचय
1.3. शोध की समस्या
1.4. शोध-कार्य का उद्देश्य
1.5. पूर्व शोध कार्यों की समीक्षा
1.6. शोध प्रविधि
1.7. शोध का औचित्य एवं महत्त्व
1.8. शोध की सीमा और क्षेत्र
1.9. शोध का प्रयोजन
1.10. शोध कार्य का ढांचा

द्वितीय अध्याय : युगबोध की अवधारणा और राजेश जोशी का साहित्यिक परिचय **10-36**

2.1. युगबोध की अवधारणा
2.2. युगबोध : परिभाषा एवं स्वरूप
    2.2.1. युगबोध की परिभाषा
    2.2.2. युगबोध का स्वरूप
2.3. युगबोध के विविध आयाम
    2.3.1. सामाजिक युगबोध
    2.3.2. राजनीतिक युगबोध
    2.3.3. आर्थिक युगबोध
    2.3.4. सांस्कृतिक युगबोध
    2.3.5. धार्मिक युगबोध
2.4. राजेश जोशी की रचनाधर्मिता

तृतीय अध्याय : राजेश जोशी के काव्य में युगबोध के सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष **37-59**

3.1. सामाजिक पक्ष

3.1.1. सामाजिक विसंगतियों का चित्रण

3.1.2. स्त्री की सामाजिक स्थिति

3.2. आर्थिक पक्ष

3.2.1. भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद का प्रभाव

3.2.2. आर्थिक शोषण की समस्या

चतुर्थ अध्याय : राजेश जोशी के काव्य में युगबोध के राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष **60-100**

4.1. राजनीतिक पक्ष

4.1.1. वर्तमान राजनीति का स्वरूप

4.2. धार्मिक पक्ष

4.2.1. सांप्रदायिक विद्वेष

4.2.2. मानवतावादी दृष्टिकोण

4.3. सांस्कृतिक पक्ष

4.3.1. नैतिक मूल्यों में परिवर्तन

4.3.2. प्रकृति चित्रण

पंचम अध्याय : राजेश जोशी की कविताओं में शिल्प-विधान **101-114**

5.1. भाषागत वैशिष्ट्य

5.2. भावानुकूल चिह्नों का प्रयोग

5.3. प्रतीक योजना

5.4. बिम्ब विधान

5.5. भावात्मक शैली

5.6. व्यंग्यात्मक शैली

5.7. वर्णनात्मक शैली

उपसंहार : **115-120**

सन्दर्भ ग्रंथ सूची : **121-125**

प्राक्कथन

कविता मनुष्य के जीवनानुभवों का प्रकटीकरण है। कविता अपने माध्यम से मनुष्य जीवन की क्रियाओं को प्रकट करती है। समाज में जब राजनैतिक, आर्थिक आदि विभिन्न स्तरों पर मानवीय मूल्य घटने लगते हैं तब काव्य के माध्यम से कवि अपने दायित्व को सामने लाता है। रचनाकार अपनी कृति के माध्यम से संदर्भित युग को सहेजता है। वर्तमान समय में कविता की विभिन्न आयामों में से एक हमारे समाज की नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों या मान्यताओं को संरक्षित करना भी है। आधुनिक प्रवृत्तियों के कारण जीवन शैली निरंतर बदल रही है। इसके साथ ही साहित्य का रचना स्वरूप भी परिवर्तित हो रहा है। आज की युगीन समस्या एवं प्रवृत्तियों को दर्शाने के लिए युगानुकूल शब्दों का चयन किया जा रहा है। समकालीन समय में हिंदी कविता की भूमि में कई कवियों की उपस्थिति दर्ज है। तत्कालीन समय के कवियों की बात करें तो निस्संदेह राजेश जोशी शीर्षस्थ हैं। राजेश जोशी प्रगतिशील चेतना के कवि हैं। उन्होंने अपनी काव्य रचनाओं में निर्भीकता के साथ अपने अनुभवों का वर्णन किया है। इनकी कविताएँ वर्तमान समय की लगभग सभी मुद्दों से टकराती है जो आम आदमी की जिंदगी से सम्बद्ध है। देश एवं विश्व स्तर पर व्याप्त नवीन प्रवृत्ति जैसे- वैश्वीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद और संचारक्रांति के कारण समाज के बहुत बड़े हिस्सों को हाशिए पर खड़ा कर दिया जा रहा है। राजेश जोशी अपने काव्यों में इसी समुदाय को उद्घाटित करते हैं। समकालीन समाज की विविध परिस्थिति एवं प्रवृत्तियों को इन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा मुख्य स्वर में प्रेषित किया है। इनके काव्य में धार्मिक विद्वेष, वर्तमान समय की विडंबना, हाशिए का समाज, भ्रष्ट राजनीति का चित्रण, प्राकृतिक प्रेम, महानगरीय बोध, नैतिक मूल्यों का परिवर्तन आदि प्रवृत्तियां उपस्थित हैं। इस प्रकार इनकी कविताओं में वर्तमान समाज के सभी पहलुओं का सुन्दर चित्रण हुआ है।

विषय-वस्तु की दृष्टि से साहित्य किसी भी सीमा से परे होता है। इसकी अनेक विधाएँ हैं। रचनाकार इनमें से किसी एक विधा में या एक से अधिक विधाओं में प्रमुखता के साथ रचना कर सकता है। राजेश जोशी की रचनाशीलता भी किसी एक विधा में बंधकर नहीं रही है। इन्हें एक

बहुआयामी सर्जक के रूप में जाना जाता है। इन्होंने हिंदी कविता के साथ-साथ अन्य विधाओं में भी अपनी कलम चलाई है। कहानी, नाटक, समीक्षा, यात्रा-डायरी, बाल कविता, पटकथा लेखन के साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, रुसी, जर्मन आदि भाषाओं के साहित्य का भी हिंदी भाषा में अनुवाद किया है। इस प्रकार इनका रचना संचार व्यापक एवं विस्तृत है। अतः एक शोध-कार्य के अंतर्गत समग्र साहित्यिक यात्रा का अध्ययन करना असंभव है। इसलिए प्रस्तुत शोधकार्य के अंतर्गत इनके दो काव्य संग्रह 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' शामिल हैं।

जोशी की रचनाशीलता भी किसी एक विधा में बंधकर नहीं रही है। इन्हें एक बहुआयामी सर्जक के रूप में जाना जाता है। इन्होंने हिंदी कविता के साथ-साथ अन्य विधाओं में भी अपनी कलम चलाई है। कहानी, नाटक, समीक्षा, यात्रा-डायरी, बाल कविता, पटकथा लेखन के साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, रुसी, जर्मन आदि भाषाओं के साहित्य का भी हिंदी भाषा में अनुवाद किया है। इस प्रकार इनका रचना संचार व्यापक एवं विस्तृत है। अतः एक शोध-कार्य के अंतर्गत समग्र साहित्यिक यात्रा का अध्ययन करना असंभव है। इसलिए प्रस्तुत शोधकार्य के अंतर्गत इनके दो काव्य संग्रह 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' शामिल हैं।

यह लघु शोध प्रबंध पांच अध्यायों में विभाजित हैं। शोध प्रबंध का प्रथम अध्याय 'शोध परिचय' है। इस अध्याय में शोध विषय का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके प्रयोजन, समस्या, उद्देश्य, शोध की सीमा, शोध प्रविधि, शोध के औचित्य एवं महत्त्व के साथ ही पूर्व शोध कार्यों की समीक्षा भी की गई है।

इसका दूसरा अध्याय 'युगबोध की अवधारणा और राजेश जोशी का साहित्यिक परिचय' है। यह अध्याय चार उप-अध्यायों में विभक्त है। इसमें युगबोध की अवधारणा एवं स्वरुप के साथ-साथ उसके विभिन्न आयामों पर भी प्रकाश डाला गया है। किसी भी रचनाकार के सृजन-संसार का अध्ययन, उसकी रचनाशीलता को समझने के लिए यह अत्यंत आवश्यक साबित होता है। इस अध्याय में भी लेखक के साहित्यिक यात्रा में शामिल महत्वपूर्ण पड़ावों का अध्ययन किया गया है।

इस लघु शोध कार्य का तीसरा अध्याय 'राजेश जोशी के काव्य में युगबोध के सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष' है। इसमें क्रमशः आर्थिक और सामाजिक पक्ष को दो-दो उप-अध्यायों में विभक्त किया गया है। आर्थिक और सामाजिक युगबोध के विभिन्न पक्षों के आधार पर ही राजेश जोशी की कविताओं का मूल्यांकन एवं विश्लेषण किया गया है। राजेश जोशी ने सामाजिक विसंगति, समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति, भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद के प्रभाव के साथ ही आर्थिक शोषण की समस्याओं को किस प्रकार प्रस्तुत किया है, उसका गहन अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

इस लघु शोध कार्य के चौथा अध्याय 'राजेश जोशी के काव्य में युगबोध के राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष' है। इस अध्याय को पांच उप-अध्यायों में विभक्त करके अध्ययन किया गया है। इसमें राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध के राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आयामों को विभिन्न पहलुओं से देखा गया है। राजेश जोशी ने अपनी कविताओं के द्वारा वर्तमान राजनीति का स्वरूप, सांप्रदायिक विद्वेष, मानवतावादी दृष्टि, नैतिक मूल्यों में परिवर्तन जैसे वर्तमान समय के ज्वलंत विषय को किस रूप में प्रस्तुत किया है, उसका अध्ययन इस परिच्छेद में किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध का पांचवां अध्याय 'राजेश जोशी की कविताओं में शिल्प-विधान' है। इसे सात उप-अध्यायों में विभाजित किया गया है। इसके अंतर्गत राजेश जोशी की रचनाओं के भाषागत एवं शैलीगत वैशिष्ट्य का विस्तार से अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है। इन्होंने अपनी कविताओं को प्रभावोत्पादक एवं सहज बनाने के लिए लोकोक्तियाँ, मुहावरें, बिम्ब एवं प्रतीकों का किस रूप में प्रयोग किया है, उसका अध्ययन किया गया है।

विषय मूल्यांकन एक प्रमुख बिन्दु है। यहाँ भी अंत में विषय-मूल्यांकन करने के पश्चात् जो कुछ तथ्य प्राप्त हुए हैं वह सारे तथ्य उपसंहार में प्रस्तुत हैं। इसमें संपूर्ण शोध ग्रन्थ का एक सार रूप प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। तत्पश्चात् संदर्भ ग्रन्थ सूची है, जिसमें आधार ग्रन्थ एवं अन्य सहायक ग्रंथों की सूची दी गई है।

इस शोध कार्य के पूरा होने में कई लोगों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. दिनेश साहू का ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे विषय चयन से लेकर शोध कार्य पूर्ण होने तक अपने ढंग से कार्य करने की स्वतंत्रता दी। उनका कुशल निर्देशन, आत्मीय स्वभाव जैसे गुणों के चलते मुझे इस कार्य को पूर्ण करने में काफी सहायता मिली। मैं हिंदी विभाग के अध्यक्ष डॉ. हरदीप सिंह, सहायक प्रोफेसर डॉ. चुकी भूटिया, सहायक प्रोफेसर डॉ. प्रदीप त्रिपाठी, अतिथि प्रवक्ता डॉ. सरोज लामा, कुलदीप सिंह सर, प्रमोद सर एवं विभाग के अन्य सभी सदस्यों का आभारी हूँ, जिन्होंने शोध कार्य को पूर्ण करने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग किया।

राजेश जोशी के प्रति बहुत-बहुत आभार जिन्होंने विषय चयन से लेकर शोध कार्य से संबंधित महत्त्वपूर्ण सामग्री की जानकारी उपलब्ध कराया साथ ही शोध कार्य के दौरान उचित परामर्श भी दिए। सिक्किम विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के सभी सदस्यों के प्रति भी आभार, जिन्होंने शोध कार्य से संबंधित सामग्री संकलन में सहयोग प्रदान किया।

अंत में मैं अपने माता-पिता एवं परिवार के संपूर्ण सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने मुझे हमेशा कार्य करने के लिए सहयोग किया और मेरे साथ खड़े रहें। इसके साथ ही कृष्ण भैया, शिवम कुमार के प्रति भी आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त अग्रज, अनुज, अपने सभी मित्रों एवं जाने-अनजाने में जो नाम छूट जा रहे हैं, उन सभी के प्रति बहुत-बहुत आभारी हूँ तथा उनका बहुत बहुत शुक्रगुजार हूँ.....

भानुभक्त बस्नेत

प्रथम अध्याय

शोध परिचय

1.1. शोध कार्य का शीर्षक :

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का शीर्षक है – "राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध : विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह"

1.2. शोध का परिचय :

साहित्य और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। प्रत्येक युग के साहित्य में समाज की युगीन चेतना प्रतिबिम्बित होती है। साहित्यकार युगीन चेतना से प्रभावित और प्रेरित होकर साहित्य सृजन करता है। युगबोध प्रत्येक रचनाकार के लेखन के केंद्र में रहता है। युगबोध 'युग' और 'बोध' दो शब्दों के मेल से बना है। जिसका अर्थ काल, समय, समयावधि, जमाना आदि है। महाभारत, पुराण आदि प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में 'युग' शब्द का प्रयोग व्यापक रहा है। 'बोध' शब्द का अर्थ जानना, समझना, जानकारी, विचारना, ज्ञान आदि से है। 'युगबोध' से आशय कालावधि के प्रवृत्ति, प्रगति एवं समय आदि के बारे में जानना अथवा समझना है। इसलिए युग की मान्यताओं, स्थितियों एवं संदर्भों की समझ को युगबोध कहा जाता है।। समकालीन साहित्य में युगबोध सबसे अधिक चर्चित शब्द है। समकालीन साहित्य में इस पद का प्रयोग किसी काल विशेष की प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं की पहचान और उसकी समझ के रूप में हुआ है। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि विशेषताओं के आधार पर जब किसी भी रचनाकार की रचनाओं को अवलोकन करते हैं तो उनकी रचनाओं में वर्णित युगीन अनुभव रचनाकार के युगबोध को दर्शाता है।

हिंदी कविता की परंपरा में समकालीन हिंदी कविता का महत्त्वपूर्ण स्थान है। काल एवं समय के अनुरूप समसामयिक वस्तुस्थितियों के चित्रण को ही समकालीन कविता कहा गया है। यह समय सापेक्ष एक अवधारणा है। समकालीन हिंदी कविता तत्कालीन समाज की विविध परिस्थितियों से प्रभावित है।

समकालीन कविता में दो पीढ़ियों का संघर्ष देखा जा सकता है जिनमें - मंगलेश डबराल, केदारनाथ सिंह, आलोक धन्वा, कुंवर नारायण, राजेश जोशी, अरुण कमल, लीलाधर जगूड़ी आदि की एक पीढ़ी है, तो प्रकाश उपाध्याय, बद्री नारायण, व्योमेश शुक्ल, अनुज लुगुन आदि की

दूसरी पीढ़ी है। समकालीन हिंदी कविता के इन्हीं प्रमुख कवियों में एक राजेश जोशी हैं। उन्होंने समकालीन परिवेश के तमाम साहित्यकारों को अपने चिंतन कौशल से प्रभावित किया है। हिंदी साहित्य जगत में राजेश जोशी की कृतियाँ अत्यंत चर्चित हैं। वर्तमान हिंदी कविता की चर्चा राजेश जोशी को अंगीकार किए बिना अधूरी जान पड़ती है। समकालीन समाज की परिस्थिति की अभिव्यक्ति इनकी कविताओं में हुई है। इनके प्रथम प्रकाशित कविता 'समरगाथा (1977 लंबी कविता)' है। इसके बाद इनके द्वारा अभी तक कई कविता-संग्रहों का प्रकाशन हुआ है। इसके अलावा इन्होने कहानी, नाटक, आलोचना, डायरी, अनुवाद, पटकथा, सम्पादन आदि साहित्य की विधाओं में भी सृजन किया है।

राजेश जोशी पिछले तीन दशक से भी अधिक समयावधि से निरंतर काव्य रचना कर रहे हैं। 'समरगाथा' से लेकर 'ज़िद' तक की कविताओं में इन्होंने देश एवं विश्व स्तर पर व्याप्त समस्याओं को प्रस्तुत किया है। जोशी जी के कविताओं में सामान्य जनमानस के दुःख-दर्द का यथार्थ चित्रण हुआ है। वर्तमान समय में व्यक्ति का निजी संसार बहुत महत्त्वपूर्ण होता जा रहा है। आज भौतिक चीजें मनुष्य की हर जरूरतें पूरी कर रही है और हमलोग तकनीकी जीवन जी रहे हैं। इस प्रकार की भौतिकतावादी समय में जोशी की रचनाएँ सामूहिक जीवन की जटिलताओं और उनके संदर्भ में बात करती है। इस प्रसंग में 'चाँद की वर्तनी' में संकलित कविताओं को रेखांकित कर सकते हैं। इस संग्रह में एक कविता है 'रात किसी का घर नहीं' इस कविता का काव्य नायक बूढ़ा आदमी के माध्यम से कवि ने हमारे समाज की अद्यतन पतनशीलता की झलक प्रस्तुत की है-

"एक बूढ़ा मुझे.....

कहता है कि उसके लड़कों ने उसे घर से निकाल दिया है

की उसने पिछले तीन दिन से कुछ नहीं खाया है"[1]

इसी प्रकार उनकी कविता भूमंडलीकरण के प्रभाव से उत्पन्न समस्याओं को भी दर्शाती है। संप्रति हमारे समाज से मानव मूल्य किस प्रकार लुप्त हो रहा है और हमारे जो संयुक्त परिवार आज

कैसे खंडित हो रहा है इसकी ओर कवि का विशेष झुकाव है। इनकी कविताओं में समकालीन समाज की विसंगति एवं पूँजीवाद के प्रति दृढ़ आत्मविश्वास के साथ खड़ा होने का संकल्प दिखाई देता है। उन्होंने इसे 'झुकता हूँ' कविता के माध्यम से स्पष्ट किया है। इस कविता में उन्होंने आज के समय में चापलूस लोग अपना काम निकलने के लिए किसी भी हालात को अंगीकार कर लेते हैं। परन्तु कवि इसका विरोध करते हैं और हमें अपने स्वाभिमान की रक्षा के लिए जागरूक करते हैं।

राजेश जोशी ने 'रैली में स्त्रियाँ', 'बेटी की बिदाई', , 'अस्त व्यस्त चींजे', 'यह स्वस्थ्य के लिए हानिकारक है' 'टॉमस मोर', जैसी कविताओं की रचना की, जिसके माध्यम से हम वर्तमान समय एवं समाज के यथार्थ रूप को पहचान सकते हैं। इनकी कविताएँ देश में उपस्थित व्यवस्था के प्रति सीधा सवाल करती है एवं सत्ता के खिलाफ तीखी आलोचना करती है। इसके अलावा इनकी कविताओं में समाज के सभी वर्गो का वास्तविक चित्रण मौजूद है एवं तत्कालीन समाज के सभी परिस्थितियों का हूबहू वर्णन हुआ है।

सत्ता के खिलाफ वही लोग खड़े होते हैं जिन्हें इसके बुरे पक्षों का अनुभव होता है। वे समाज की प्रत्येक बड़ी-छोटी घटनाओं पर अपनी पैनी नजर रखते हैं। इसके साथ-साथ इन घटनाओं को व्यक्त करने के उनके पास सूक्ष्म दृष्टि भी है। अपने समय एवं समाज के प्रत्येक मुद्दों को इन्होंने वास्तविकता के साथ उद्घाटित किया है।

जोशी जी के काव्यों में धार्मिक विद्वेष, वर्तमान समय की विडम्बना, हाशिए का समाज, प्राकृतिक प्रेम, महानगरीय बोध, नैतिक मूल्यों का परिवर्तन आदि कई एसी प्रवृत्तियां दिखाई पड़ती है जिसके माध्यम से हम वर्तमान समय के अनेक वस्तुस्थितियों को जान सकते हैं। अतः इनकी कविताओं में वर्तमान समाज का स्वरूप स्पष्ट देखा जा सकता है।

1.3 शोध कार्य की समस्या :

प्रस्तुत शोध-कार्य में निम्नलिखित बिंदुओं को शोध की समस्या के रूप में देखा गया है-

- समकालीन हिंदी कविता में युगबोध की क्या क्या स्थितियाँ हैं ?

- समकालीन हिंदी कविता में राजेश जोशी का क्या स्थान है?
- राजेश जोशी के काव्य में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक युगबोध किन रूपों उभरकर आये हैं?
- राजेश जोशी के काव्य के माध्यम से समकालीन समाज को कितना समझ जा सकता हैं?
- शिल्प और प्रवृत्ति के आधार पर राजेश जोशी की कविताएँ तत्कालीन समाज में कितना सशक्त है?
- कविता के विषयों में वैश्विक चिंतन तथा मानव मूल्य का किस प्रकार चित्रण हुआ है?

1.4 शोध-कार्य का उद्देश्य :

शोध-कार्य में उल्लेखित समस्याओं का समाधान करना ही प्रस्तुत शोध का उद्देश्य है -

- प्रस्तुत लघु शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य राजेश जोशी के काव्य में निहित युगबोध का अध्ययन करना है।
- समकालीन हिंदी कविताओं में वर्णित युगबोध से परिचित हो सकेंगे।
- समकालीन हिंदी कविता में राजेश जोशी के स्थान को देख सकेंगे।
- राजेश जोशी की काव्य रचनाओं के माध्यम से युगीन के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को समझ सकेंगे।
- इनकी कविताओं के माध्यम से इनके शिल्पगत वैशिष्ट्य को जान सकेंगे।
- कविता के विषयों में वैश्विक चिंतन तथा मानव मूल्य का अवलोकन कर सकेंगे।

1.5 पूर्व शोध कार्यों की समीक्षा (साहित्यिक पुनरावलोकन)

यद्यपि पिछले कुछ समय से राजेश जोशी की रचनाओं को लेकर देश के विभिन्न स्थानों में शोध कार्य हो रहे हैं, किंतु मेरी जानकारी में अब तक इनकी कविताओं को युगबोध की दृष्टि से नहीं देखी गयी है। संभवतः प्रस्तुत शोध-कार्य राजेश जोशी की काव्य रचना को समझने के उपक्रम में एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान करेगा।

मेरे संज्ञान में अबतक इनकी कविताओं में अग्रांकित शोध-कार्य हुए हैं –

1. प्रा. पंडित साहेबराव गायकवाड ने डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद से डॉ. गणेशराज सोनाले के निर्देशन में 'राजेश जोशी-सृजन के आयाम' विषय पर शोध-कार्य किया है। उन्हें सन् 2006 ई. में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई। यह शोध-कार्य प्रा. पंडित साहेबराव गायकवाड ने राजेश जोशी का जीवन-परिचय साथ ही संपूर्ण साहित्यिक रचनाओं को भी शोध के केंद्र में रख कर अध्ययन किया है।
2. अर्चना सेन ने डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय सागर(म.प्र) से डॉ. श्रीमती छाया चौकसे के निर्देशन में 'राजेश जोशी की कविताओं में सामाजिक मूल्य परिवर्तन की अभिव्यक्ति' विषय पर शोध-कार्य किया है। उन्होंने सन् 2013 ई. में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस शोध-कार्य में अर्चना चौकसे ने राजेश जोशी के जीवन के साथ-साथ सामाजिक मूल्य परिवर्तन के विभिन्न पक्षों को शोध के केंद्र में रखा है।
3. मो. रियाज़ खान ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, बैंगलोर से 'राजेश जोशी के काव्यों में समसामयिक समस्याएं' इस विषय पर शोध-कार्य किया है।

शोध-कार्य के साथ-साथ मेरे संज्ञान में इनकी कविताओं पर एकाध आलोचनात्मक पुस्तकें भी लिखी गई है जो इस प्रकार है –

1. राजेश जोशी का काव्य: संवेदना और शिल्प – डॉ. वर्षा देशमुख,कानपुर:विद्या प्रकाशन. इस पुस्तक में डॉ. देशमुख ने राजेश जोशी की सन् 2000 ई. तक प्रकाशित काव्य कृतियों के आधार पर सामाजिक संवेदना के साथ-साथ शिल्पगत वैशिष्ट्य का अध्ययन किया है।
2. समकालीन कविता और राजेश जोशी – डॉ. अनुपम कुमार, दिल्ली:शिवालिक प्रकाशन. इस पुस्तक में डॉ. अनुपम द्वारा राजेश जोशी के काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है साथ ही अन्य कवियों के साथ उनकी तुलना की गई है।

3. राजेश जोशी : स्वप्न और प्रतिरोध – संपादन नीरज, यह पुस्तक स्वराज प्रकाशन से प्रकाशित है, यह एक लेखों का संग्रह है। इस में सं. नीरज ने विभिन्न लेखकों द्वारा राजेश जोशी की काव्य रचनाओं को केन्द्र में रखकर लिखे गये लेखों को संग्रहित किया है।

अत: स्पष्ट है कि "राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध : विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'जिद' काव्य-संग्रह" नामक विषय को लेकर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। इस दृष्टि से मेरा यह अध्ययन राजेश जोशी की कविताओं में निहीत युगीन प्रवृत्तियों को समझने का एक प्रारंभिक प्रयास है।

1.6 शोध प्रविधि :

1.6.1 अध्ययन विश्लेषण का सैद्धांतिक आधार -

प्रस्तुत शोध-कार्य में अध्ययन और आवश्यकता के अनुरूप गुणात्मक एवं मात्रात्मक प्रविधियों का उपयोग किया गया है। संकलित तथ्यों का विश्लेष्णात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही प्रस्तुत लघु शोध-कार्य आलोचनात्मक, विश्लेषणात्मक,एवं विवेचनात्मक शोध-प्रविधियों के माध्यम से किया गया है।

1.6.2 सामग्री संकलन -

प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक स्रोत के तहत आधार सामग्री के रूप में राजेश जोशी के दो प्रमुख काव्य संग्रहों 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' को लिया गया है।

द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक स्रोत के अंतर्गत विभिन्न पुस्तकालयों से शोध विषय से संबंधित सहायक ग्रंथों, पत्र-पत्रिकाओं, शोध-प्रबंधों एवं इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्रियों आदि का प्रयोग किया गया है।

1.7 शोध का औचित्य एवं महत्त्व :

प्रस्तुत शोध की समस्या और उद्देश्य के आधार पर ही इसके औचित्य एवं महत्त्व को देख सकते हैं। वर्तमान समय में हिंदी कविताएँ निरंतर लिखी जा रही है। समकालीन कवियों में सशक्त एवं प्रबल कवि राजेश जोशी की काव्य रचनाओं का अध्ययन करने के लिए एवं इसे एक भिन्न दृष्टिकोण से समझने के लिए इस शोध का महत्त्व दिखाई देता है।

1.8 शोध की सीमा और क्षेत्र :

राजेश जोशी का रचना कर्म निश्चित रूप में विस्तृत एवं व्यापक है। उनकी रचनाओं को विभिन्न दृष्टिकोण से अध्ययन किया जा सकता है। शोध की सीमा एवं समय को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत लघु शोध-कार्य राजेश जोशी के प्रमुख दो काव्य संग्रहों- 'चाँद की वर्तनी' और'ज़िद' पर आधारित हैं जिसमें वर्तमान युग के विभिन्न पक्षों को उल्लेखित किया गया है। प्रकाशन वर्ष में काफी अंतर होने के बावजूद दोनों काव्य संग्रहों में युगीन चेतना को स्पष्ट देखा जा सकता है। इन दोनों काव्य-संकलन में युगीन चेतना से संबंधित कविताओं की संख्या अधिक हैं एवं इन दोनों संग्रहों की अधिकतर कविताएँ वर्तमान समय के युग के हर एक पक्ष को प्रतिपादित करती है।

1.9 शोध-कार्य का प्रयोजन :

प्रस्तुत लघु शोध-कार्य का मुख्य प्रयोजन सिक्किम विश्वविद्यालय के भाषा और साहित्य संकाय के हिंदी विभाग के अंतर्गत एम.फिल. की उपाधि प्राप्त करना है।

1.10 शोध कार्य का ढांचा

प्रस्तुत शोध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया गया है -

प्रथम अध्याय : शोध परिचय

द्वितीय अध्याय : युगबोध की अवधारणा और राजेश जोशी का साहित्यिक परिचय

तृतीय अध्याय : राजेश जोशी के काव्य में युगबोध के सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष

चतुर्थ अध्याय : राजेश जोशी के काव्य में युगबोध के राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

पंचम अध्याय : राजेश जोशी की कविताओं में शिल्प-विधान

उपसंहार :

संदर्भ ग्रंथ सूची

संदर्भ:

1. जोशी,राजेश.(2006).*चाँद की वर्तनी*.पृ.13

द्वितीय अध्याय

युगबोध की अवधारणा और राजेश जोशी का साहित्यिक परिचय

2.1. युगबोध की अवधारणा:

समाज के विविध पहलुओं को साहित्य में अभिव्यक्ति मिलती है। साहित्य में मनुष्य के जीवन वर्णन के साथ-साथ आस-पास के परिवेश का भी चित्रण किया जाता है। समाज और साहित्य का संबंध सदियों से रहा है। मनुष्य ही समाज का निर्माता है। सामाजिक जीवन अविरल गतिशील रहती है। इसी गतिशीलता के कारण जीवन मूल्य में निरंतर प्रगति हुई है। साहित्य में मानव जीवन की अभिव्यक्ति होती है। मनुष्य के अंतःकरण पर जिन तत्वों का प्रभाव पड़ता है उन्हीं की अभिव्यक्ति साहित्य एवं समाज में होती है। मुंशी प्रेमचंद के अनुसार- "साहित्यकार बहुधा अपने देश काल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है। उसकी विशाल आत्मा अपने देश बंधुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और इस तीव्र विकलता में वह रो उठता है पर उसके रुदन में व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर ही सार्वभौमिक होता है।"[1] साहित्य जीवन के हर एक पक्ष को अभिव्यक्त करता है। साहित्य का युगबोध से प्रत्यक्ष संबंध रहता है। साहित्य समाज के युगीन विशेषताओं के अनुरूप मानव जीवन एवं समाज को दिशा निर्देशन करता है। इस प्रकार देखा जाय तो साहित्य अपने विषय में युग को ही प्रस्तुत करता है। युगबोध साहित्य की पृष्ठभूमि, चेतना और परिणति सभी स्तरों को प्रभावित करता है। इस प्रकार साहित्य और युगबोध का संबंध अटूट है। साहित्य में अभिव्यक्त अपने समय के यथार्थ वर्णनों से हम युगबोध को समझ सकते हैं। युगबोध को समझने में साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

2.2. युगबोध : परिभाषा एवं स्वरूप :

युगबोध को परिभाषित करने से पहले युग और बोध के अर्थ को समझना आवश्यक प्रतीत होता है। 'युग' को समय एवं काल के रूप में भी जाना जाता है। मानक अंग्रेजी हिंदी कोष के अनुसार Time (युग) का अर्थ है - समय, जमाना, समयावधि आदि। ज्ञान, जानकारी, एहसास आदि को भी 'बोध' का शाब्दिक अर्थ है। इससे यह ज्ञात होता है कि बोध का अर्थ ज्ञान,

जानकारी, एहसास, सजगता आदि है। नालंदा विशाल शब्द सागर युगबोध के संबंध में यह लिखा गया है कि - इतिहास का कोई ऐसा बड़ा कालखंड जिसमें बराबर एक ही प्रकार के कार्य, घटनाएं हो, युग चेतना अथवा युगबोध कहलाता है। युगीन प्रवृत्तियाँ समय के साथ-साथ निरंतर बदलती रहती है। जैसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद इत्यादि। अतः कहा जा सकता है कि किसी भी निश्चित समयावधि में किसी विशेष प्रवृत्तियों के उत्थान-पतन की अवधि को युग की संज्ञा दी जाती है।

2.2.1. युगबोध की परिभाषा :

आधुनिक रचना के क्षेत्र में सर्वाधिक चर्चित शब्द युगबोध है। युगबोध समय की मान्यताओं एवं स्थितियों के सन्दर्भ में एक जानकारी होता है। साहित्यकार व लेखक अपनी गहन दृष्टिकोण और व्यापक चिंतन के कारण समाज में घटित सभी घटनाओं अथवा परिस्थितियों को अपनी रचना में वर्णित करता है। साहित्य समाज का ही एक अंग है। इसके कारण साहित्यकार रचना के लिए समाज से ही प्रेरणा ग्रहण करता है। अपने देश एवं समाज के सभी परिस्थितियों से कोई भी रचनाकार प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। भारतीय विभिन्न विद्वानों ने युगबोध को अपने अपने तरीके से परिभाषित किया है। उनमें से कुछ प्रमुख परिभाषाएं इस प्रकार है-

1) डॉ. हरिश्चद्र वर्मा के अनुसार- "रचनाकार के मन पर अपने युग की समस्याओं का दबाव अवश्य ही रहता है। कोई भी रचनाकार अपने युग से ऊपर उठकर उन भाव सत्यों की खोज या मूल्यों की खोज करता है जिसका उसके समकालीन परिवेश में अभाव है और जिनकी उपलब्धि से युगीन विकृतियों का सांस्कृतिक समाधान खोजा जा सकता है। इस प्रकार युगबोध के तीखेपन में ही कवि की मनीषा उदात्त जीवन मूल्यों का अनुसंधान करती है।"[2]
2) डॉ. रणधीर सिंहा के अनुसार - "यह एक विशेष काल में घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी होता है।"[3]
3) दिनकर के अनुसार- "युगबोध में साहित्यकार अपनी गहन व्यापक एवं सूक्ष्म दृष्टि से समाज की सभी परिस्थितियों तथा घटनाओं का चित्रण अपने साहित्य में करता है।"[4]

इन परिभाषाओं आधार पर हम यह कह सकते हैं कि युगबोध से समय की स्थिति तथा परिवेश का ज्ञान प्राप्त होता है। युग विशेष के विविध जीवन अनुभव का इसमें उल्लेख रहता है। युगबोध में परिस्थिति के साथ-साथ युग का सर्वांगीण ज्ञान एवं उपलब्धियां भी समाहित होती है। युगबोध एक चिंतनधारा है जो चेतना के स्तर पर प्रभावित करती रहती है।

2.2.2. युगबोध का स्वरूप :

संवेदना के अनुरूप रचनाकार अपनी रचना में युगीन प्रवृत्तियों का चित्रण करता है। उनकी रचनाएं युगबोध को अन्वेषित कर आंशिक या समग्र रूप में अभिव्यक्ति देती है। युगबोध एक अवधारणा है। युग शब्द का सामान्य अर्थ काल के आयाम से लिया जाता है, किंतु उस काल के लिए एक निश्चित समय निर्धारण नहीं किया जा सकता। किसी भी युग में तत्कालीन परिस्थिति का जो रूप है उसके अनुरूप रचनाकार का साहित्य में वैसे ही बोध हो उसे युगबोध कहा जाता है।

युगबोध के माध्यम से युग की सभी परिस्थितियों को ठीक-ठीक जाना जा सकता है। समाज में प्रचलित सभी प्रकार की परिस्थितियाँ आम जनता को प्रभावित करती हैं, लेखक भी इन परिस्थितियों से प्रभावित होकर, अपनी कलात्मक चेतना के माध्यम से अपने कार्यों को निरंतर करता रहता है। हमें साहित्य के माध्यम से अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त होते हैं, जैसे - भावाभिव्यक्ति, अलौकिक अनुभूति, सहानुभूति, सौन्दर्य की अनुभूति आदि। युगबोध को अपनाकर ही लेखक अपने समय की सच्चाई को व्यक्त कर सकता है।। इसलिए किसी भी युग का निर्माण उसकी मुख्य प्रवृत्तियों के आधार पर होता है।

2.3. युगबोध के विविध आयाम :

जैसे-जैसे समय में परिवर्तन होता जाता है ठीक उसी तरह युग भी परिवर्तित होता है। युग परिवर्तन अर्थात् वैसे मूल्य जो उस युग में निर्धारित हैं, उसमें भी परिवर्तन दिखाई देता है। नए मूल्य को समाज सहजता से स्वीकार नहीं करता है, वह उसे सामूहिक स्वीकार के बाद ही स्वीकार करता है। सामाजिक मूल्य परिवर्तन में नए एवं प्राचीन अवधारणाओं में संघर्ष भी दिखाई पड़ता है। अतः

हर एक युग में नए मूल्यों का निर्माण होने में एवं अलग युगबोध की अवधारणा उत्पन्न होने में विविध आयामों की भूमिका महत्त्वपूर्ण रहती है। इन आयामों को रचनाकार अपनी रचनाओं में जगह देता है एवं इसके माध्यम से अपने अपने युग के सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओं को दिखाने का प्रयास करता है। युगबोध के विविध आयामों पर राजेश जोशी की रचनाओं में उदाहरण के माध्यम से नीचे वर्णन प्रस्तुत है।

2.3.1. सामाजिक युगबोध :

समाज का निर्माण मानव अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर करता है। द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी के शब्दों में समाज की परिभाषा इस प्रकार है- "एक ही उद्देश्य को लेकर किसी निश्चित दिशा में जाने वाले व्यक्ति समूह को समाज कहते हैं।"[5] "समाज शब्द में जब इक प्रत्यय लग जाता है तो सामाजिक शब्द का निर्माण होता है जिसका अर्थ है- समाज का, समाज के लिए, समाज द्वारा, समाज से संबंध रखने वाला आदि।"[6] इस प्रकार समाज एक ऐसा समूह है जिसमें समानवृत्ति वाले लोग सामूहिक हित की रक्षा करते हुए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

मनुष्य और समाज एक दूसरे के पूरक हैं। समाज में मानव जीवन के विभिन्न पहलू शामिल हैं। मनुष्यविहीन समाज का कोई औचित्य नहीं है। समाज के बिना व्यक्ति की गति नहीं होती। युग परिवर्तन के साथ युगबोध की मान्यताएं भी बदलती रहती हैं। बौद्धिक काल का युगबोध धर्म संचालित था। उपनिषद काल में धर्म का स्थान दर्शन ने ले लिया। प्राचीन काल में, समाज राजाओं और सैनिकों के कार्यों से संचालित होता था। भक्ति काल में भक्ति की उपस्थिति प्रबल थी। आधुनिक काल की शुरुआत के बाद से, सामाजिक धारणा में काफी बदलाव आया है। आजादी से पहले और बाद में भारतीय समाज में व्यापक बदलाव आया है। जब कोई व्यक्ति समाज में रहते हुए इन सभी स्थितियों के बारे में सोचता है और कुछ करने की अवधारणा रखता है, तो उसे सामाजिक चेतना कहा जाता है।

युगबोध एक दृष्टि है जिसके द्वारा लेखक अपने समय के समस्त विशेषताओं को देखने की कोशिश करता है। साहित्य समाज को दिशा निर्देश करता है और कई बार स्वप्रभावित भी हो जाता है। युगबोध के द्वारा ही रचनाकार अपने तत्कालीन परिवेश एवं स्थिति को अपनी रचना में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। आज के समय में हमारी सामाजिक परंपराएं, संयुक्त परिवार आदि के अस्तित्व विलीन हो रहे हैं। आज वर्ग भेद अराजक तत्वों का बढ़ावा से मानव अस्तित्वहीन होता जा रहा है। समाज के ऐसे स्खलनों का उल्लेख हमें वर्तमान समय के काव्यों में अवलोकित होता है। जोशी जी अपनी रचना में इस प्रकार के सामाजिक युगबोध के उतार-चढ़ावों का वर्णन करते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि युगबोध के कारण समाज एवं साहित्य में सान्निध्यता प्रगाढ़ एवं प्रबल दिखाई देता है।

2.3.2. राजनीतिक युगबोध :

'राज' एवं 'नीति' दो शब्दों के योग से राजनीति शब्द बना है।"[7] 'राज' शब्द का अभिप्राय राज्य से है और 'नीति' का अर्थ नियम से है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि राज्य या शासन को संचालित करने वाले नियम ही राजनीति है। राजनीति को और स्पष्ट एवं सहज रूप से समझने के लिए हम डॉ. महादेव शर्मा की इस परिभाषा को देख सकते हैं- "उस विद्या या शास्त्र को राजनीति मानते हैं, जो राज्य के सांगोपांग विवेचना करता है, जिसमें राज्य के विभिन्न अंगों और प्रकारों, उसके संगठन तथा कार्य संबंधित सिद्धांतों का अध्ययन किया जाता है।"[8]

मानव के सामाजिक जीवन को व्यवस्थित रूप से सुचारू करने के लिए राजनीतिक चेतना का उदय हुआ। इसका प्रारंभ परिवार के मुखिया से होकर राजा, सम्राट और प्रधानमंत्री के रूप में व्यक्त है। राजनीतिक परिस्थिति ने मानव समाज को शुरूआत से ही किसी न किसी प्रकार से प्रभावित किया है, साथ ही उस काल के युगबोध के निर्माण में भी राजनीति की चेतना ने अहम भूमिका निभाई है। राजतंत्र में प्रजा को राजा के हुक्म का पालन करना पड़ता था। उस समय प्रजा के पास शासन के प्रति आवाज उठाने का कोई अधिकार नहीं था। लोकतंत्र प्रणाली में जनता के दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन दिखाई देता है। जो परिवर्तित राजनीतिक युगबोध का परिचायक है।

समाज निर्माण और व्यक्ति के उत्थान में राजनीति का स्पष्ट योगदान दृष्टिगत होता है। अपने युग के प्रति संवेदनशील और समाज के परिवेश के प्रत्यक्षदर्शी साहित्यकार राजनीति के स्वरूप परिवर्तन के प्रभाव से असंपृक्त नहीं रह सकता। साहित्यकार अपने समय की राजनीतिक व्यवस्था से प्रभावित होकर साहित्य की रचना करता है। जिसमें व्यवस्था के विरोध का स्वभाव साफ नजर आता है. लेखक अपने समाज से प्रभाव ग्रहण करते हुए देश की राजनीतिक व्यवस्था से प्रभावित होता है। किसी भी युग की परिस्थितियों को बनाने में राजनीति का योगदान अतुलनीय है। लेखक अपने युग की राजनीति को भली-भांति समझता हैं और उसे अपनी कृतियों में व्यक्त करता है। लेखक जिस युग में रहता है उसकी छाया और जिस युग में वह अपनी रचनाएँ रचता है उसकी राजनीति उसकी रचना में झलकती है। आजादी के बाद भारतीय राजनीतिक व्यवस्था बहुत तेजी से बदली है। वर्तमान संदर्भ में राजनीति में नैतिकता का कोई मूल्य नहीं है। आज लोकमंगल की भावना को भुलाकर राजनीति आत्मकेंद्रित और संकीर्ण दायरे में सिमट कर रह गई है। वर्तमान में राजनीति पद, प्रतिष्ठा और आर्थिक लाभ के उद्देश्य पर आधारित हो गई है न कि सिद्धांतों और मूल्यों पर। ऐसी राजनीतिक स्थिति के कारण आज भारत जैसे देश में लोकतांत्रिक व्यवस्था नष्ट होती जा रही है। समकालीन रचनाकारों की रचनाओं में आजाद भारतीय राजनीति के कुछ अत्यंत भयावह वास्तविकताओं और त्रासद परिस्थितियों का प्रस्फुटन प्राप्त होता है।

2.3.3. आर्थिक युगबोध :

एक व्यवस्थित एवं सुदृढ़ समाज और उसकी व्यवस्था के लिए सबल आर्थिक व्यवस्था आवश्यक रहती है। साधारण शब्दों में अर्थ को धन, पैसा, संपत्ति आदि शब्दों से परिभाषित कर सकते हैं। मनुष्य जिस समाज में रहता है वहाँ दैनिक जीवन को सुव्यवस्थित ढ़ंग से संचालित करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। अतः मानव जीवन से इसका प्रत्यक्ष संबंध रहता है। एक व्यक्ति को अपने जीवन को व्यपस्थित ढंग से चलाने के लिए एक मजबूत आर्थिक स्थिति का होना अनिवार्य है, ठीक उसी रूप में एक देश को अपना विकास एवं सुरक्षा को सुदृढ़ रखने के लिए आर्थिक रूप से धनी होना आवश्यक है। किसी भी देश की आर्थिक स्थिति मजबूत हो तो वह देश

की सभी परिस्थितयाँ मजबूत हो जाती है। इस संदर्भ में यह कथन प्रासंगिक प्रतीत होता है- "आर्थिक व्यवस्था ही वह मूलाधार है जिस पर राजनीतिक तथा सांस्कृतिक संरचना निर्भर करती है तथा उसके अनुरूप सामाजिक चेतना के विविध रूप निर्मित होते हैं।"[9]

युगबोध को प्रभावित एवं परिवर्तित करने में आर्थिक स्थिति का अहम योगदान रहता है। आर्थिक स्थिति पर एक समाज का संपूर्ण ढांचा निर्भर रहता है। इस भौतिकवादी युग में अर्थ का महत्व और अधिक बढ़ गया है। इस समय हमारे समाज से मानवता जैसे शब्द लुप्त हो रहे हैं। एक व्यक्ति को उसकी आर्थिक स्थिति के अनुरूप सम्मान और प्रतिष्ठा दिया जाता है। हमारे समाज मे आर्थिक व्यवस्था के चलते ही आज उच्च-निम्न, शोषक-शोषित आदि वर्गों का विभाजन हुआ है। त्याग, सेवा, सहिष्णुता, धर्म आदि को वर्तमान युग के अर्थ प्रदान संस्कृति ने नष्ट कर दिया है। भारतीय अर्थव्यवस्था में स्वतंत्रता के बाद और वैषम्यता दृष्टिगत होता है। आज एक पूंजीपति और अधिक अपना साम्राज्य खड़ा कर रहा है तो एक गरीब व्यक्ति को रोजी रोटी के लिए भूख से जूझ रहा है। इस प्रकार से हमारे देश में आर्थिक युगबोध का परिवर्तन दृष्टिगत होता है।

आर्थिक विषमता का प्रभाव समाज में प्रत्यक्षतः नजर आता है। वर्तमान समय के रचनाकार इस प्रकार की स्थितियों को अपनी रचनाओं में साफ-साफ दर्शाते हैं। आर्थिक समस्या के कारण ही हमारे समाज में शोषण, अत्याचार, भ्रष्टाचार, घूस, मानसिक असंतोष जैसी परिस्थितियां उपस्थित होती है। इस तरह की आर्थिक व्यवस्था को रचना में स्पष्टतः देखा जा सकता है। अतः कह सकते हैं कि किसी भी रचनाकार के लेखन में युगबोध उपस्थित रहता ही है।

2.3.4. सांस्कृतिक युगबोध :

संस्कृति साहित्य की भांति समाज से अभिप्राय रखती है। समाज के लोगों के रीति-रिवाज, रहन-सहन, वेश-भूषा, पर्व-त्यौहार इत्यादि को संस्कृति कहा जाता है। मानव सभ्यता में इसका प्रभाव साफ-साफ नजर आता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति के अनुरूप पलता-बढ़ता है और उसी के अनुसार अपने कार्य को संचालित करता है। संस्कृति से मानव जीवन को संस्कार मिलता

है। लेखक भी जिस संस्कृति में पलता-बढ़ता है उसी के अनुरूप उसका मानसिक विकास होता। इसलिए सभी रचनाकार अपने आस-पास की संस्कृतियों को अपनी रचनाओं में उद्वेलित करता है।

समय परिवर्तनशील है। समाज में जो बदलाव घटित होता है उसी के समानान्तर युगबोध भी बदलता है। इसी के फलस्वरूप संस्कृति प्राचीनता एवं नवीनता को धारण करते हुए अपना विकास करती है। सांस्कृतिक बोध से इस प्रकार के उन्नयन मुमकिन हैं। मनुष्य अपनी बुद्धि के जरिये संस्कृति का संरक्षण करता है एवं समाज में हो रहे बुराइयों, कुरीतियों तथा अन्यायों का विरोध करता है। सांस्कृतिक उत्थान ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ आदि प्रवृत्तियों का परित्याग एवं महानता, संवेदना, रागात्मकता जैसे सुविचारों से संभव है।

साहित्य एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा किसी भी देश, समुदाय या जाति आदि की संस्कृति को समझा या जाना जा सकता है। साहित्य और संस्कृति का समाज से गहरा संबंध है। रचना में रचनाकार संस्कृति के प्रभाव को बहुत ही कुशलता से अलंकृत करता है। इसलिए साहित्य और संस्कृति एक दूसरे के साथ घनिष्ठ संबंध स्थापित करते हैं। युग की सांस्कृतिक जागरूकता के लिए रचना एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2.3.5. धार्मिक युगबोध :

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इसी परिवर्तन के साथ-साथ सामाजिक प्रवृत्तियां भी बदलती रहती है। धर्म का अर्थ व्यापक एवं विस्तृत है। इसका संबंध मनुष्य से है। अतः सामाजिक बदलाव के साथ-साथ धार्मिक प्रवृत्तियां भी बदलती रहती है। मानव समाज में मानवता ही मूल धर्म है। मानवता के समाप्त हो जाने पर मानव में पशुत्व ही शेष रहता है। चेतना के माध्यम से ही समाज के धार्मिक स्वरूप में परिवर्तन आता है। इस परिवर्तन को युगबोध के माध्यम से समझ सकते हैं।

वर्तमान समय में समाज वैज्ञानिक एवं भौतिक रूप से प्रभावित है। आज मानवीयता समाज से लुप्त हो रही है। धर्म का जो स्वरूप वर्तमान युग में दृष्टिगत होता है वह रूढ़िगत परंपरा से पूर्ण धार्मिक भय, अंधविश्वास अथवा लीक मात्र है। उसमें स्वस्थ, उत्कृष्ट या सबल जीवन दर्शन, सबल

आस्था नहीं है, जो त्रस्त एवं भ्रांत मानवता को पथ प्रदर्शन का कार्य करे। इसी के परिणाम स्वरूप आज पूरे देश में धार्मिक प्रदर्शन एवं आतंक फैला हुआ है।

साहित्यकार भौतिकता की अतिशयता से उलझ कर टूट बिखर रहे समाज को आध्यात्मिक मूल्यों के द्वारा पुनःजीवित करना चाहता है। मानव जीवन एवं समाज में धर्म का अहम भूमिका है। मानव जाति को संयमित, नियमित और ऊर्ध्वमुखी बनने के कारण धर्म एक महत्त्वपूर्ण संस्कृति पक्ष है। धार्मिक युगबोध भी मानव को कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का बोध कराकर कर्त्तव्य की ओर उन्मुख करता है। अतः इस प्रकार युगबोध की अवधारण एवं विविध आयामों को देख सकते हैं। समकालीन हिंदी कविता में युगबोध का यथार्थ एवं स्पष्ट रूप में चित्रण मिलता है।

2.4. राजेश जोशी की रचनाधर्मिता :

समकालीन प्रमुख कवियों की अग्रिम पंक्तियों में शुमार होने वाले कवि राजेश जोशी का जन्म नरसिंहगढ़ मध्यप्रदेश में 18 जुलाई सन् 1946 ई. में हुआ था। इनका जन्म एक संस्कारी व संपन्न परिवार में हुआ था। राजेश जोशी की माता का नाम कमला जोशी तथा पिता का नाम ईशनारायण जोशी था। ममतामयी माता का अपार स्नेह एवं संस्कार संपन्न, विद्वत्ता संपन्न पिता का प्यार और प्रेरणा इन्हें प्राप्त हुआ। इनकी प्राथमिक शिक्षा का प्रारंभ जन्मस्थल भोपाल से हुआ। इन्होंने प्राणीशास्त्र में एम. एस सी. तथा समाजशास्त्र में एम.ए. की उपाधि प्राप्त की।

हमारे देश में व्याप्त परंपरावादी जाति व्यवस्था, समाज व्यवस्था को तोड़ते हुए इन्होंने सन् 1980 ई. में निरूपा नाम की बंगाली लड़की से वैवाहिक संबंध जोड़ा। राजेश जोशी का स्वभाव मिलनसार है। वे जीवन को आशावादी दृष्टिकोण से अवलोकन करते हैं। जोशी जी की कविताओं में सामान्य मनुष्य की आशा आकांक्षाएं पल्लवित होती है। सामान्य जन के प्रति आत्मीयता, प्रेम, अपनापन आदि जोशी करे व्यक्तित्व का अहम हिस्सा है। समाज में उपस्थित आम आदमी की विडंबना को उन्होंने इस रूप में दर्शाया है –

"कुछ लोगों के नामों का उल्लेख किया गया था जिनके ओहदे थे

बाक़ी सब इत्यादि थे

इत्यादि ही करने को वो सारे काम करते थे

जिनसे देश और दुनिया चलती थी

इत्यादि हर जगह शामिल थे पर उनके नाम कहीं भी

शामिल नहीं हो पाते थे

इत्यादि बस कुछ सिरफिरे कवियों की कविता में

अक्सर दिख जाते थे"[10]

जोशी जी की कविताओं में प्रगतिशील विचारधारा का असर साफ तौर पर दिखाई देता है। इस समय के समाज की असंगत सोच का प्रभाव राजेश जोशी पर पड़ा है। इसके विषय में अजय तिवारी लिखते हैं - "भारतीय जीवन और संस्कृति के यथार्थ को अच्छी तरह पहचान कर ही समकालीन कविता अपने देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य अदा करती है। इस बारे में सबसे जागरूक एवं सबसे अधिक सक्रिय है। उनकी वाणी जितनी ओजस्वी है, उनकी चेतना उतनी ही उन्नत है। साम्राज्यवाद विरोधी भाव धारा उनकी रचनात्मक संवेदना में ढलकर जिस स्तर तक पहुंची है, उस स्तर तक किसी दूसरे समकालीन कवि की नहीं पहुंची"[11]

जोशी जी की रचनाओं में हमें वर्तमान समाज की असलियत दिखाई देती है। इनकी कविता का भूगोल विपुल है। जोशी जी के काव्यों में हमें तोता-मैना से लेकर उत्तर आधुनिक समाज का भी चित्रण मिलता है। इस बात की पुष्टि के लिए हम ए. अरविंदाक्षन के निम्नांकित कथन को देख सकते हैं - "राजेश जोशी की कविता छोटी-छोटी चीजों से लेकर बृहत्तर बहुलार्थी यथार्थ के आख्यानपरक वृत्तांतों और लोक-कथाओं तक व्याप्त जीवनानुभवों की रचनाशीलता का पर्याय है।"[12]

वर्तमान समय में मीडिया की चकाचौंध भरी दुनिया से मनुष्य अपने आसपास घटित हो रही घटनाओं को नज़रंदाज कर देता है क्योंकि उस घटना से कुछ प्राप्त नहीं होता। फिल्मी दुनिया के प्रलोभनकारी दृश्य के ज़माने में गरीब बच्चों के सड़क से गुजरने से भला किसे सरोकार होगा अर्थात बाल मजदूरी के विषय में किसका ध्यान आकृष्ट होगा? इस प्रकार बाल मज़दूरी जैसी मार्मिक विषयों को कवि अपनी कविताओं के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। उनकी 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' बाल बेरोजगारी से संबंधित कविता है। इस कविता के द्वारा कवि ने तत्कालीन समय पर हो रहे बाल अत्याचार को रेखांकित किया है। जिस उम्र में बच्चों को शिक्षा की आवश्यकता होती है, उस समय हमारे देश में गरीबी के कारण बच्चे मजदूरी का काम करते हैं। इस कविता के द्वारा जोशी जी सीधा सीधा सवाल करते हुए नजर आते हैं।

इस प्रकार से इन्होंने वर्तमान समाज की जो परिस्थितियाँ है उसे अपनी कविताओं में वास्तविक रूप में पिरोया है। इसके विषय में उनकी रचनाओं के माध्यम से स्पष्टतः देखा जा सकता है।

राजेश जोशी ने अपना साहित्यिक जीवन की शरुआत कहानी के माध्यम से किया था। सन् 1973 ई. में 'वातायन' नामक पत्रिका में इनकी प्रथम कविता प्रकाशित हुई थी। तत्पश्चात सन् 1977 ई. में 'पहल' पत्रिका में 'समरगाथा' नामक लंबी कविता प्रकाशित हुई। इस प्रकार से इनकी साहित्यिक यात्रा आरम्भ हुई। सन् 1980 ई. में 'एक दिन बोलेंगे पेड़' राजेश जोशी का प्रथम कविता संग्रह प्रकाशित हुआ था। राजेश जोशी बहुप्रतिभासंपन्न व्यक्ति हैं। इन्होंने वर्तमान साहित्य जगत में कविता के साथ-साथ कहानी, नाटक, आलोचना, संपादन, पटकथा लेखन आदि विभिन्न विधाओं में कलम चलाई है। राजेश जोशी एक सतत सर्जक के अलावा सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यकर्ता के रूप में भी पहचाने जाते हैं। उनकी इस प्रकार के योगदान को मद्देनजर रखते हुए कई संस्थाओं ने इन्हें विभिन्न राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा है। इन्हें प्राप्त पुरस्कारों की सूची निम्नांकित तालिका में दिया जा रहा है –

तालिका सं. 1.

पुरस्कार	प्राप्त वर्ष
1. मुक्तिबोध पुरस्कार	1978
2. माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार	1985
3. श्रीकांत वर्मा पुरस्कार	1986
4. शमशेर सम्मान	1996
5. पहल सम्मान	1998
6. शिखर सम्मान	2002
7. साहित्य अकादमी पुरस्कार	2002
8. जनकवि मुकुट बिहारी सरोज सम्मान	2012

राजेश जोशी की अब तक प्रकाशित सभी रचनाएँ निम्नलिखित विविध तालिकाओं में प्रस्तुत है –

तालिका सं. 2.

काव्य संग्रह	प्रकाशन वर्ष
1. समरगाथा - (एक लंबी कविता)	1977
2. एक दिन बोलेंगे पेड़	1980
3. मिट्टी का चेहरा	1985
4. गेंद निराली मिठू की – (बच्चों के लिए कविताएँ)	1989
5. नेपथ्य में हँसी	1994
6. दो पंक्तियों के बीच	2000
7. चाँद की वर्तनी	2006
8. ज़िद	2015
9. उल्लंघन	2021

तालिका सं.3

कहानी संग्रह	वर्ष
1. सोमवार और अन्य कहानियाँ	1982
2. कपिल का पेड़	2001

तालिका सं. 4

नाटक	प्रकाशन वर्ष
1. जादू जंगल	1981
2. अच्छे आदमी	1989
3. टंकारा का गाना	1989
4. हमें जवाब चाहिए	1984

तालिका सं. 5

आलोचना	प्रकाशन वर्ष
1. एक कवि की नोटबुक	2004
2. समकालीनता और साहित्य (एक कवि की दूसरी नोटबुक)	2010

तालिका सं. 6

अनुवाद	प्रकाशन वर्ष
1. पतलून पहना बादल(मायकोवस्की की कविताओं का अनुवाद,	1983
2. भूमि का यह कल्पवृक्ष (भर्तृहरि की कविताओं की अनुरचना)	
पत्रिका का संपादन कार्य	
1. इसलि	
2. वर्तमान साहित्य	
3. नया पथ	

कवि राजेश जोशी अपने समय के एक ऐसे कवि हैं जिनका जीवन समकालीन परिदृश्य से रू-ब-रू है। स्वाधीनता के बाद की जो सामाजिक व्यवस्था थी उसने नयी पीढ़ी का सपना चकनाचूर कर दिया। व्यवस्था में स्थित लोग कुर्सी की पदलोलुपतावश सामान्य जनसमुदाय को झूठे आश्वासन देने लगे जिसके फलस्वरूप आम आदमी के मन में मोहभंग की स्थिति ने घर करना

शुरू कर दिया। इस समय शोषण, दमन, अन्याय, अत्याचार जैसी अमानवीय एवं अराजक तत्वों ने सामान्य वर्ग एवं समकालीन समाज को दबोच लिया। इस प्रकार की जर्जर परिस्थिति में समाज में स्थित निम्न वर्ग की आवाज बनकर समकालीन कविता उपस्थित हुई। समकालीन कविता में इस प्रकार के यथार्थ स्वरूप को प्रस्तुत करनेवाले रचनाकारों में राजेश जोशी का उच्च स्थान है। अपनी पीढ़ी के अरुण कमल, उदय प्रकाश, मंगलेश डबराल जैसे मार्क्सवाद से प्रेरित और प्रभावित कवियों के साथ वैचारिक धरातल से जुड़े हुए हैं। इनके आज तक प्रकाशित कविता संग्रहों का संक्षिप्त परिचय निम्नांकित है :

समरगाथा -

कवि राजेश की रचना यात्रा का आरंभ 'समरगाथा' एक लंबी कविता से सन् 1977 ई. से हुई। इसका प्रकाशन 'पहल' पत्रिका में हुई। इतने साल पूर्व प्रकाशित इस कविता के विषय में स्वयं लेखक कहते हैं– "सन् 1977 ई. में 'समरगाथा' कविता 'पहल' नामक पत्रिका में छपी थी यह कविता धर्म के विरुद्ध लिखी गई थी। समरगाथा की चंद पंक्तियां निम्नलिखित है-

"तोड़ दो

तोड़ दो गुलामी की जंजीरें

तोड़ दो द्वार अंधेरे की कारा का

मोड़ दो रूख समय की धारा का

रोशनी में बदलता पानी

और इस्पात की नस्लें पर उठती दुनिया

समय है सर्वकारा का"[13]

कवि के इस कथन के आलोक में हम यह कह सकते हैं कि इस कविता में कवि का विद्रोही स्वर मुखर है। यह कविता 12 परिच्छेदों में विभक्त है।

एक दिन बोलेंगे पेड़-

सन् 1980 ई. में प्रकाशित राजेश जोशी का पहला कविता संग्रह 'एक दिन बोलेंगे पेड़' है। इसे 2002 ई. में राजकमल प्रकाशन ने 'धूप घड़ी' नामक संकलन में भी समावेश किया है। 'एक दिन बोलेंगे पेड़' काव्य संग्रह के अंतर्गत 'उजली धूप में बरसात','किस्सातोता मैंना','अभी दोपहर' इस प्रकार तीन शीर्षकों में कविताएं विभक्त है। 'उजली धूप में बरसात' में कुल मिलाकर 25 कविताओं का समावेश हैं। इनमें 'गेंद', 'मां कहती है', 'चिड़ियां', 'पेड़ क्या करता है', 'लेबर कॉलोनी के बच्चे', 'बिजली सुधारनेवाले', 'मुनीर मियां और मौसम', 'उसकी परछाई', 'देख चिड़ियां', 'उन्होंने रंग उठाए', 'चमत्कारिक चाकू', 'पहाड़ एक', 'पहाड़ दो', 'पहाड़ तीन', 'एक आदिवासी लड़की की इच्छा', 'प्याज', 'प्याज एक संरचना है', 'सलीम और मैं और उनसठ का साल-1,' 'सलीम और मैं और उनसठ का साल-2' आदि कविताएं संकलित हैं।

'किस्सा तोता मैंना' के अंतर्गत 'पत्थर की अंगूठियां', 'पत्ता तुलसी का', 'किस्सा तोता मैंना', 'नौंवी मंजिल', 'चौरासी बंगले', 'वे जहां भी रहे', 'तोता', 'रमजान मियां बतर्ज भोपाल', 'जादू है' आदि कविताएं हैं।'अभी दोपहर है' शीर्षक के अंतर्गत 'नींद रातभर', 'चाबियां', 'धूप घड़ी की परछाई में', 'बादल क्या है', 'लोककथा' आदि कविताएं समावेश हैं।

इस प्रकार तीन शीर्षकों में कुल 42 कविताएं हैं। इस काव्य संकलन की कविताओं में नारी की दयनीय स्थितियों का अंकन, व्यापक मानवतावादी धर्म, सामान्य मजदूरों के प्रति आस्था, भ्रष्ट व्यवस्था का अंकन, साम्प्रदायिकता आदि जैसे विषयवस्तु को अंकित किया गया है। स्वाधीनता के बाद भी निचले तबके की स्थिति अपरिवर्तित है। आज भी आम आदमी दरिद्रता एवं निर्धनता से पीड़ित है। अभी भी वह अपनी एक छोटी सी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकता है। इसी विषय को कवि ने 'एक आदिवासी लड़की की इच्छा' कविता के माध्यम से दिखाया है। कविता का कुछ अंश उद्धृत है -

"लड़की की इच्छा है

छोटी सी इच्छा

हाट इमलिया जाने की

सौदा-सूत कुछ नहीं लेना

तनिक-सी इच्छा है काजल की

बिंदिया की

सौदा-सूत कुछ नहीं लेना

तनिक-सी इच्छा है-सुग्गे की

फुग्गे की

लड़की की इच्छा है

छोटी-सी"[14]

इस प्रकार से इस संकलन में बहुत सारी ऐसी कविताएं हैं जिसके माध्यम से हम अपने समय में मौजूद विभिन्न व्यवस्था को जान सकते हैं एवं विभिन्न मुद्दों से अवगत हो सकते हैं।

मिट्टी का चेहरा -

यह राजेश जोशी का यह दूसरा काव्य संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 1985 ई. में हुआ था। इस संकलन की कविताओं के माध्यम से कवि ने समाज में व्याप्त विविध समस्याओं का चित्रण किया है। कुल 40 कविताएं इस संग्रह में संकलित हैं जो कवि की जीवनानुभव का सच्चा दस्तावेज है। 'सचमुच की रात', 'मैं उड़ जाऊंगा', 'उसके स्वप्न में जाने का यात्रा वृत्तांत', 'रंगरेजों का कमाल', 'झूठ के नारे', 'नींद', 'भयानक विचार', 'झींगुर', 'आखेट', 'एक बार फिर', 'मिट्टी का चेहरा', 'सुख', 'तितलियां', 'करामकल्ले और सारस और बच्चा', 'यह धर्म के विरुद्ध है', 'मां

की याद', 'ताला', 'कलाओं का अंतः संबंध', 'शोकगीत 1984', 'कुछ दिनों बाद', 'कोई नहीं रोता', 'मेरे शहर का नाम' आदि कविताएं संकलित हैं।

वर्तमान भ्रष्ट व्यवस्था से तंग आकर व्यक्ति का अपने जीवन से विश्वास उठ गया है। इसलिए वह व्यक्ति इस व्यवस्था से बहुत दूर जाकर रहने की उम्मीद रखता है। 'मैं उड़ जाऊंगा' कविता इसी विषय को प्रस्तुत करती है। यथा-

"सबको चकमा देकर एक रात

मैं किसी स्वप्न की पीठ पर बैठकर उड़ जाऊंगा

हैरत में डाल दूंगा सारी दुनिया को

सब पूछते बैठेंगे

कैसे उड़ गया ?

क्यों उड़ गया ?

तंग आ गया हूं मैं हर पल नष्ट हो जाने की

आशंका से भी इस दुनिया से

और भी ढेर तमाम जगह हैं इस ब्रह्मांड में

मैं किसी भी दूसरे ग्रह पर जाकर बस जाऊंगा"[15]

इसी प्रकार इस काव्य संकलन में संकलित कविता 'वे तीन' वर्तमान शिक्षा प्रणाली का जो स्वरूप है उसे वास्तविक रूप में दर्शाती है और उसमें परिवर्तन की अपेक्षा रखते हैं। इस प्रकार जीवन की त्रासदी, सांप्रदायिकता, भ्रष्ट व्यवस्था, प्रगतिशील विचार, गरीबी, दरिद्रता, बेकारी आदि भावनाओं के साथ-साथ कवि ने शुद्ध रूमानी कविता की भी रचना की है। इस संग्रह की 'उसके स्वप्न में जाने का यात्रा वृत्तांत' कविता राजेश जोशी के रोमानीपन को दर्शाता है। यथा-

"बाहर बादल पर, पेपर वेट-सा

रखा था चाँद और

उसके खरगोश

बादल के किनारे कुतर रहे थे

या बादल पर उगी दूब !

हम एक-दूसरे के चुम्बनों से

ढकते चले गए, होंठ, आंखे

यहां तक कि सारा शरीर

ढकता चला गया चुम्बनों से"[16]

यह सब कुछ कवि के स्वप्न में घटित होता है। सवेरे जब उसकी नींद टूटती है, तो यह पाता है -

"लौटा तो बस धूप का एक टुकड़ा था

जो घड़ी की तरह धमका रहा था

झटपट तैयार हो जाओ वरना

ऑफिस का वक्त मजा दूँगा"[17]

अतः प्रस्तुत कविता संग्रह में कवि की विचारधाराओं का परिचय मिलता है। जिसमें हम समाज में घटित घटनाओं के प्रति कविमन की बेचैनी को देख सकते हैं।

नेपथ्य में हँसी -

'नेपथ्य में हंसी' सन् 1994 ई. में प्रकाशित राजेश जोशी का तीसरा कविता संकलन है। इस काव्य संग्रह में कवि की जो चिंता है उसका व्यापक स्वरूप दिखाई पड़ता है। इस संग्रह में किस

प्रकार की कविताएं संकलित है इसे राजेश जोशी स्वयं स्पष्ट करते हैं– "निराशा उदासी और उन्माद के इस दृश्य के बीच भी उम्मीद बची है और यह उम्मीद है, इस देश की विराट श्रमशील जनता - जो बहुत थोड़े में अपना गुजारा बसर करते हुए भी, ज्यादा से ज्यादा जगह को मनुष्य के रहने लायक और सुंदर बनाने में जुटी है। ये कविताएं उस धुंधले उजाले को देख और दिखा सकें ऐसी मेरी इच्छा है।"[18]

प्रस्तुत संकलन में कुल 41 कविताएं संग्रहित हैं। प्रमुख कविताओं का नाम इस प्रकार है– 'जन्म', 'खुशी', 'नेपथ्य में हँसी', 'प्लेटफार्म पर', 'घोंसला', 'थोड़ी-सी जगह', 'बच्चों की चित्रणकला प्रतियोगिता', 'प्रजापति', 'कर्बला', 'मारे जायेंगे', 'मेरठ 87', 'दिल्ली 28', 'मैं जा रहा हूं', 'कल्पवृक्ष एक', 'कल्पवृक्ष दो', 'बाहर जाने का रास्ता', 'बच्चे काम पर जा रहे हैं', 'नाना की साइकिल', 'न्याय', 'चाकू की आत्मकथा', 'वह मुझे दुबारा जन्म देना चाहती थी', 'आठ लफंगों और एक पागल औरत का गीत' आदि कविताएं संकलित हैं। इस काव्य संग्रह में समकालीन परिवेश की विसंगतियाँ चित्रित है। वर्तमान समाज का जो विसंगति बोध है वह समाज में एक चुनौती के रूप में उपस्थित है। आज मनुष्य अपने रिश्तों को ही महत्त्व नहीं देता है। इसके चलते आत्मीयता समाप्त होती जा रही है। इस संकलन में 'प्लेटफार्म पर' एक कविता है जो इस आत्मीयभाव को बचाए रखने की कोशिश करती है -

"हर दिन लंबी होती सड़कों और बड़े होते शहरों में अब

कम होता जा रहा है चलन किसी को

लेने आने या छोड़ने जाने का

अब तो पूरी शिद्दत से कोई लड़ता भी नहीं

बहुत खामोशी से चलती है ठंडी कटुता की

दुधारी छुरी

उदासी बढ़ रही है कस्बों में और शहरों में उदासीनता"[19]

हमारे समाज में जो बाल मजदूरी है इससे कविमन काफी बेचैन है। देश की गलत व्यवस्था के चलते आज एक बालक पढ़ाई लिखाई के समय में मजदूरी के लिए जा रहा है, जिसे इन्होंने 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता में चित्रित किया है।

इसी संग्रह में एक और कविता है 'मारे जाएंगे'। इसमें कवि ने हमारे समाज में व्याप्त उस यथार्थ को दिखाया है जिसके चलते आज आम आदमी व्यवस्था का शिकार बन रहा है। समाज में व्याप्त जो असुरक्षा की दशा है उसे भी दिखाया है। देश में मौजूद सामान्य जन का जीवन हर क्षेत्र से बेदखल है। देश की राजनीतिक परिस्थिति का वर्णन है एवं उच्चवर्ग उनके शोषण का कारण बनते हैं। इस प्रकार से राजेश जोशी ने इस काव्य संग्रह में महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को रेखांकित कर अपने काव्य संग्रह को जीवंत किया है।

दो पंक्तियों के बीच -

यह इनका चौथा काव्य संग्रह है। इसका प्रकाशन सन् 2000 ई. में हुआ था। इस संकलन में कवि की विचारधारा की अनेकरूपता उपस्थित है। इस संग्रह में 'इत्यादि', 'सहायक क्रिया', 'हमारी भाषा', 'खोई हुई चीजें', 'रुको बच्चो', 'जहर के बारे में कुछ बेतरतीब पंक्तियां', 'अधूरी कविताएं', 'बौना', 'उस प्लम्बर का नाम', 'प्रतिध्वनि', 'अधूरी इच्छा', 'संयुक्त परिवार', 'दो पंक्तियों के बीच', 'नेलकटर', 'हाथ', 'छाते', 'खोड़ला गांव', 'अवध होटल', 'शोकगीत : एक', 'शोकगीत : दो', 'चित्रण में लड़की की उम्र', 'रेस्त्रां में इंतजार', 'जब तक मैं एक अपील लिखता हूं', 'सुकवि की मुश्किल' 'बर्बर सिर्फ बर्बर थे', आदि 54 कविताएं संकलित हैं।

इस संग्रह की रचनाओं में सृजन प्रक्रिया, आम आदमी के अस्तित्व का संकट, नारी की पीड़ा, भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था, संप्रदायिकता, अंधविश्वास, संयुक्त परिवार की आवश्यकता आदि भावों की सशक्त उपस्थिति है। कवि ने 'इत्यादि' कविता के माध्यम से आम आदमी को संबोधित किया है। आम आदमी की जो पीड़ा है, दुख दर्द है उसे चित्रित किया है। हमारे समाज में आज इत्यादि किस

प्रकार से शोषित होते जा रहे हैं और किस प्रकार उसे समाज से बेदखल करके हाशिये पर धकेल दिया जाता है। ऐसी भयानक परिस्थिति का यहाँ उद्घाटन हुआ है। उल्लेखित पंक्तियां उपर्युक्त संदर्भ में दृष्टव्य है -

"कुछ लोगों के नामों का उल्लेख किया गया था जिनके ओहदे थे

बाकी सब इत्यादि थे

इत्यादि तादात में हमेशा ही ज्यादा होते थे

इत्यादि भाव ताव करके सब्जी खरीदते थे और खाना वाना खाकर

खास लोगों के भाषण सुनने जाते थे

इत्यादि हर गोष्ठी में उपस्थिति बढ़ाते थे

इत्यादि हर जगह शामिल थे पर उनके नाम कहीं भी

शामिल नहीं हो पाते थे

इत्यादि बस कुछ सिरफिरे कवियों की कविता में

अक्सर दिख जाते थे"[20]

आधुनिकता के कारण एवं आर्थिक संकट के कारण आज हमारे समाज में संयुक्त परिवार टूट रहा है और हमारा जो संयुक्त परिवार की एक लंबी परंपरा है वह समाप्त हो रही है। इस विषय को लेकर भी कवि के मन में बेचैनी है। कवि एक संयुक्त परिवार का क्या महत्त्व होता है उसे दर्शाते हैं। इनकी 'संयुक्त परिवार' इस प्रसंग में विचारणीय है -

"इस तरह कभी कोई नहीं लौटा होगा

बचपन के उस पैतृक घर से

वहां बाबा के, दादी थी, मां और पिता थे

लड़ते झगड़ते भी साथ साथ रहते थे सारे भाई बहन"[21]

इस प्रकार इनके द्वारा सामाजिक विषमता के विविध पहलुओं को इनकी कविताओं में चित्रित हुई है। साथ साथ मनुष्य किन-किन चीजों से पीड़ित एवं प्रताड़ित है उसे प्रस्तुत किया गया है।

चाँद की वर्तनी -

यह सन् 2006 ई. में प्रकाशित कवि राजेश जोशी की एक महत्त्वपूर्ण काव्य संकलन है। इसमें 49 कविताएं संकलित हैं। उसमें 'मैं झुकता हूं', 'दोपहर की कहानियों के माया', 'एक-से मकानों का नागर', 'उमस', 'सुब्हे बनारस', 'विडंबना', 'किस्सा उस तालाब का', 'हमारे समय के बच्चे', 'रैली में स्त्रियां', 'चलना', 'बहन', 'विलुप्त प्रजापतियां', 'बेटी की विदाई', 'रात किसी का घर नहीं', 'नहीं कहना' 'जादूगरनी', 'आधा वृत्त', 'चाँद भरोसे की चीज नहीं', 'जरिता के बच्चों की कहानी', 'पागल', 'यह कागज', 'चूहा', 'सपनों की करतूत', 'कौवा और मूर्ति', 'विनम्रता', 'कवि की जगह', 'दाग', 'व्याकरण-समय', 'भाषा की आवाज', 'घोड़े', 'मुर्गा मुआफ़ी', 'चाँद की वर्तनी', 'टेलीफोन', 'कुछ सूक्तियां', 'खिलौना', 'कवि का काम' आदि कविताएँ हैं।

इस काव्य संग्रह की गुणवत्ता को देखते हुए एवं कवि राजेश जोशी के काव्य चिंतन को रेखांकित करते हुए अरुण कमल इसकी भूमिका में लिखते हैं – "राजेश की कविता हमारे समय का ऐसा संघनित दस्तावेज है कि केवल उसके आधार पर हम समकालीन भारत का एक दृश्य लेख बना सकते हैं। इतने ब्यौरें हैं यहां, इतने प्रसंग, पात्र और राजनीतिक सामाजिक उद्वेलन साथ ही उनकी कविता जीवन के उन तंतुओं की खोज करती है जहां उन उद्वेलनों का कम्प सबसे तीव्र है और उन लोगों का योगदान करती है जो निरंतर संघर्ष करते हुए जीवन को बदलने का ताब रखते हैं। उनकी कविता साहस के साथ सत्ता के सभी पायदानों पर वार करती है, एक विराट सत्ता जो अर्थव्यवस्था से लेकर हमारी रसोई तक व्याप्त है। नागार्जुन और धूमिल के बाद सत्ता के तिलिस्म को उधाड़ने वाले सर्वाधिक सशक्त कवि राजेश जोशी हैं।"[22] इस संकलन में एक कविता है 'मैं झुकता हूं'। इस कविता के माध्यम से कवि ने महत्त्वपूर्ण विषयों की ओर ध्यानाकर्षण किया है।

इस संग्रह में कवि ने स्त्रियों को लेकर बहुत मार्मिक कविताओं की रचना की है। इस विषय में 'बेटी की विदाई' कविता उदाहरणीय है। इसी क्रम में हमें इस संग्रह में बहुत सारी ऐसी कविताएं प्राप्त होती है जो वर्तमान समाज की परिस्थिति एवं विडम्बना को उद्वेलित करती है।

ज़िद –

जोशी जी का 'ज़िद' एक महत्वपूर्ण काव्य संग्रह है। इस संकलन का प्रकाशन सन् 2015 ई. में राजकमल से हुई है। इस कविता संग्रह में लगभग 55 कविताएं संग्रहित हैं। 'कवि, चाँद और बिल्लियाँ', 'परिंदे पर कवि को पहचानते हैं', 'सिर छुपाने की जगह', 'बाहर-भीतर', 'रोशनाई', 'सेकंडहैंड किताबें', 'नसरगट्टे', 'अनुपस्थित-उपस्थित', 'पाँव की नस', 'एक कुख्यात अपराधी की आत्मकथा', 'ज़िद', 'मिमियाना', 'मेरा नया फोन नंबर', 'देह-भाषा', 'अनुपात का खेल', 'नाम में क्या धार है', 'अतिरिक्त चीजों की माया', 'कवि और प्रौद्योगिकी', 'शहर भीतर शहर', 'संग्रहालय', 'डायरी लिखना', 'हँसी', 'शब्दों का नया घर', 'एक कवि कहता है', 'इस आत्महत्या को अब कहां जोड़ूं', 'यह समय', 'किताब के लिए नींद', 'अनुस्वार', 'उदासी', 'आखिरी पत्ती', 'चाँद की आदतें', 'स्मृतिविहीन समय में', 'अनुपस्थितों की जगह', 'पहाड़ी रास्ता', 'शिमला डायरी : 2014', 'नदी का रास्ता', 'राजा भोज ने तालाब बांधा' आदि कविताएं संग्रहीत हैं।

वर्तमान समय परिवर्तनशील है। समय के परिवर्तन के साथ-साथ भाषा का जो रूप है उसमें भी परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है। इस प्रकार की परिस्थिति में सभी को अपनी भाषा की ओर किस नजर से देखना होगा। उसके विषय में राजेश जोशी ने 'कवि, चाँद और बिल्लियाँ' कविता में कहा है।

इस संग्रह में एक कविता है 'अतिरिक्त चीजों की माया'। यह जो कविता है वह वर्तमान समय का जो बाजारवाद है उसको दर्शाती है। हमारा समाज बाजारवाद का किस प्रकार से शिकार हो रहा है। उसका जिक्र कवि ने इस कविता में किया है –

"बाजार से लेने जाता हूँ जरूरत की कोई चीज

तो साथ थमा दी जाती है एक और चीज मुफ्त

उस चीज की कोई जरूरत नहीं मुझे

पर लेने से इनकार नहीं कर पाता उसे

अतिरिक्त हमारे मन की कमजोरी को पहचानता है

लालच धीरे-धीरे पाँव पसारता है

एक अतिरिक्त दूसरे अतिरिक्त को बुलाता है

और दूसरा अतिरिक्त तीसरे अतिरिक्त के लिए

जगह बनाता है

एक दिन सारी जगह

अतिरिक्तों से भर जाती है"[23]

आधुनिकता के चलते हम अपनों से दूर होते जा रहे हैं। हमारे समाज की जो संस्कृति है वह धीरे धीरे विलुप्त हो रही है। इस विषय को लेकर कवि चिंतित एवं परेशान है। इसी परेशानी को कवि अपनी कविता में व्यक्त करते हैं -

"दोस्त जब पूछते थे तो मैं अक्सर कहता था

मुझे चिट्ठी मत लिखना

परिंदों का पीछे करनेवाले का

कोई स्थाई पता नहीं होता

मुझे क्या ख़बर थी कि एक दिन ऐसा आएगा

जब चिट्ठी लिखने का चलन ही अतीत हो जाएगा"[24]

अतः हम यह कह सकते हैं कि मनुष्य अपना विकास के साथ-साथ मनुष्यता को खोता जा रहा है। वर्तमान समय की जो बाजारवाद की संस्कृति है जिसके कारण आदमी के मन में स्वार्थ प्रवृत्ति ने घर जमा लिया है। आज हम नैतिकता को खोते जा रहे हैं। अतः कवि अपनी रचना के जरिए खोते हुए सामाजिक मूल्यों की तलाश करते हैं। इसी प्रकार अपनी कविताओं में कवि राजेश जोशी ने वर्तमान युग का स्पष्ट वर्णन किया है। जिसके जरिए हमें अपने युग का बोध होता है।

निष्कर्षत: इस अध्याय में युगबोध के अर्थ को समझाते हुए उसके विभिन्न प्रकारों पर विस्तार से विचार किया गया है। युगबोध को अच्छे से इस अध्याय में समझा जा सकता है। इसके अतिरिक्त लेखक का व्यक्तित्व एवं साहित्यिक परिचय का संक्षिप्त विश्लेषण किया गया है। लेखक का व्यक्तित्व सहज एवं सरल है। आज सम्पूर्ण देश इनकी रचनाओं से परिचित है।

सन्दर्भ :

1. प्रेमचंद,मुंशी.*साहित्य का उद्देश्य*.पृ.24
2. वर्मा,हरिश्चंद्र.*तुलसी साहित्य में शारीर विज्ञान और मनोविज्ञान*.पृ.27
3. सिंहा,डॉ.रणधीर.*कवि बिहारी लाल और उनका युग*.पृ.38
4. दिनकर,रामधारी सिंह.*साहित्य मुखी*.पृ.11
5. चतुर्वेदी,द्वरिका प्रसाद.*संस्कृति शब्दार्थ कौस्तुभ*.पृ.108
6. बाहरी,डॉ. हरदेव.*राजपाल हिंदी शब्दकोश*.पृ. 822
7. वही,पृ.697
8. डॉ.शर्मा,महादेव प्रसाद.*राजनीति के सिद्धांत*.पृ.1
9. मार्क्स एंजेल्स.(अनु.).*ऑन लिटरेचर एंड आर्ट्स*.पृ.41
10. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.13
11. देशमुख,डॉ. वर्षा.*राजेश जोशी का काव्य : संवेदना और शिल्प*.पृ.23

12. नीरज.(संपा).*राजेश जोशी स्वप्न और प्रतिरोध*.पृ.25

13. राजेश जोशी के साथ.डॉ.वर्षा देशमुख का साक्षात्कार से

14. जोशी,राजेश.*प्रतिनिधि कविता*.पृ.24

15. वही,पृ.36

16. वही,पृ.42

17. वही, पृ.43

18. जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हँसी*.भूमिका से

19. वही,पृ. 17-18

20. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.13

21. वही,पृ.54

22. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.भूमिका से

23. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.54

24. वही,पृ.11

तृतीय अध्याय

राजेश जोशी के काव्य में युगबोध के सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष

3.1. सामाजिक पक्ष :

रचनाकार अपने समय का संवाहक होता है। वह विभिन्न घटना, संदर्भों आदि के जरिए समाज को एक नया मार्ग प्रदान करता है। समाज सुधार में साहित्य की भूमिका स्पष्ट दृष्टिगत होता है। इस बात की पुष्टि हमें हमारे पूर्व रचना और रचनाकार से प्राप्त होता है। किसी भी राष्ट्र अथवा देश की सभ्यता एवं संस्कृति को जानने के लिए साहित्य एक सशक्त माध्यम है। जैसे महाभारत और रामायण जैसे ग्रंथों के अध्ययन से हमें उस समय के सामाजिक परिवेश, व्यवस्था, रीति-रिवाज और रहन-सहन के विषय में ज्ञान प्राप्त होती है। सामाजिक बोध के अनुरूप साहित्यकार की रचना कालजयी बनती है क्योंकि वह व्यक्ति, जाति, वर्ग और समाज की भीतरी-बाहरी शक्तियों को पैनी दृष्टि से परखता हुआ एक उचित मार्ग निर्देशित करता है। राजेश जोशी ने अपनी रचनाओं में सामाजिक युगबोध को दर्शाया है। समाज में व्याप्त असंगति, अंतर्विरोध, वर्ग भेद, जातिय शोषण, नैतिक मूल्यों का ह्रास जैसे विषयों पर इन्होंने अपने भाव प्रस्तुत करते हुए तीव्र रोष दिखाया है।

3.1.1. सामाजिक विसंगतियों का चित्रण :

भारतीय समाज में सन् 1857 की क्रांति के बाद धीरे-धीरे परिवर्तन की लहर दिखाई देने लगा। यह परिवर्तन समाज पर हो रहे अनैतिक कार्यों के लिए विद्रोह का शंखनाद था। इसके बाद भारतीय समाज में कई समाज सुधार आंदोलनों का जन्म हुआ और इन आंदोलनों में पश्चिमी देशों का प्रभाव साफ़ झलकता है। इन आंदोलनों का असर भारतीय साहित्य में धीरे-धीरे पड़ना शुरू हुआ। 19वीं शताब्दी के अंत तक आते-आते भारतीय समाज एवं भारतीय साहित्य पूर्ण रूप से इस आंदोलन से प्रभावित हो चुका था। जिसके चलते समाज में बढ़ती नगरीय व्यवस्था, पारिवारिक संत्रास, व्यक्तिवादी जैसी स्थितियां दिखाई देने लगी। इसी प्रकार साहित्य में छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नई कविता जैसे विचारधारा एवं मतों ने जन्म लिया। आजादी के बाद भारत की नई पीढ़ी ने एक उज्जवल एवं स्वर्णिम भारत का सपना देखा था परंतु राजनेताओं का सत्ता लोलुपता एवं नैतिक मूल्यों के ह्रास के कारण सपना सपना ही बना रह गया। जिसके चलते समाज के युवा पीढ़ियों में मोहभंग जैसी प्रवृत्तियां दिखाई देने लगी। आठवें दशक के युवा रचनाकारों की जो समूह

साहित्य संसार में दाखिल हुई इस पीढ़ी ने जीवन जगत के प्रति नजरिया, आमजन के साथ रिश्ता, जीवन की जटिलताओं का बोध, मनुष्येतर की पहचान और सपनों की प्रकृति आदि सभी प्रसंगों पर अलग तस्वीर बनाई।

राजेश जोशी अपने समय के एक प्रमुख कवि है। इनकी कविताओं में उदारीकरण और भूमंडलीकरण के समय में परिवर्तित भारतीय समाज का चित्रण स्पष्ट अवलोकित होता है। "भारतीय समाज की नयी जटिलताओं के साथ कवि अपनी काव्य सामग्री को पुनः व्यवस्थित करते हैं और मानव मन के नए पेचों को सामने लाते हैं।"[1] इन्हीं पेचों से कवि भारतीय समाज का लेखा-जोखा करते हैं। जिसमें जीवन के सारे पक्ष प्रेम, घर, गृहस्थी, परिवार, भाईचारा आदि आते हैं। जोशी जी के काव्य में जनवादी विचार प्रखर रुप से दृष्टिगत होता है। कवि के कविता में समाज की असंगतियों का वर्णन उतने ही महत्त्वपूर्ण ढंग से किया है। रचनाकार जिस समाज में रहता है उसकी व्यवस्था एवं स्थिति से निरंतर प्रभाव ग्रहण करता है। इन्होंने अपने काव्य में मशीनीकरण के प्रारंभिक दौर से उसके विकराल रूप धारण करने तक के सफर के दुष्प्रभावों एवं दुष्परिणामों का क्रमशः वर्णन किया है। उनका काव्य संकलन 'चाँद की वर्तनी' 'दो पंक्तियों के बीच' और 'ज़िद' में बदलती हुई समाज का स्वरूप स्पष्ट दृष्टिगत होता है। बाजारवाद, शहरीकरण, भूमंडलीकरण जैसी प्रवृत्तियों ने हमारी पारिवारिक जीवन को ही परिवर्तित कर दिया। इस प्रसंग में इनकी 'संयुक्त परिवार' जैसी रचना को एक मिसाल के तौर पर अवलोकन कर सकते हैं। इस कविता में कवि आज के समय के एकल परिवार के यथार्थ हालात को हमारे समक्ष रखते हैं। भले ही इस एकल परिवार में सभी भौतिक सुविधाएँ उपलब्ध हैं परन्तु पहले संयुक्त परिवार में जो खुशियाँ प्राप्त होती थी वह आज के समय में नहीं मिल पाती।

संयुक्त परिवार अर्थात परिवार के ढेर सारे सदस्य एक ही साथ रहा करते थे। अब समय ऐसा आ गया कि परिवार के सारे सदस्य फोटो फ्रेम में ही एक साथ रहते हैं। इस पारिवारिक संबंध को टूटने के कारण से व्यक्ति को अपनी अस्मिता में भी खतरा दिखाई देने लगा। संयुक्त परिवार टूटने

के बाद एकल परिवार में किस प्रकार की समस्याएं उपस्थित होती है इसका चित्रण हम 'रात किसी का घर नहीं' जैसी कविता में देख सकते हैं-

"एक बूढ़ा मुझे .....

कहता है कि उसके लड़कों ने उसे घर से निकाल दिया है

कि उसने पिछले तीन दिन से कुछ नहीं खाया है

लड़कों के बारे में बताते हुए वह अकसर रुआँसा हो जाता है

और अपनी फटी हुई कमीज को उघाड़कर

मार के निशान दिखाने लगता है"[2]

वह बूढ़ा जब घर की ओर मुड़ने लगता है तब कविता अंत में अचानक उसके वजूद के प्रश्न को सामने लाती है-

"मैं उस बूढ़े से पूछना चाहता हूं

पर पूछ नहीं पाता

कि जिस तरफ वह जा रहा है

क्या उस तरफ उसका घर है?"[3]

इस प्रकार की बदलते हुए समाज में आम आदमी का कोई अस्तित्व नहीं है। नई कविता में आम आदमी के लिए लघुमानव शब्द का उपयोग किया गया था। इसी प्रकार राजेश जोशी ने सामान्य जन के लिए इत्यादि शब्द का उपयोग किया है। एक आम आदमी राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निर्वहन करता है परंतु उसे बस किसी सिरफिरे कवियों की कविता में ही उद्धृत किया जाता है-

"इत्यादि हर जगह शामिल थे पर उनके नाम कहीं भी

शामिल नहीं हो पाते थे

इत्यादि बस कुछ सिरफिरे कवियों की कविता में

अक्सर दिख जाते थे"[4]

आम जनता के प्रति इनकी संवेदना विशेष रूप से प्रकट हुई है। 'ज़िद' काव्य संकलन में संग्रहित कविता 'पांव की नस' के द्वारा इन्होंने यह बताने की कोशिश की है कि समाज में रहने वाला आदमी चाहे वह किसी भी वर्ग से संबंधित हो उसका भी उतना ही महत्व है जितना एक उच्च वर्ग के आदमी का रहता है। इस बात को और स्पष्ट रूप से समझने के लिए इनकी कविता 'पाँव की नस' देख सकते हैं। इस कविता में कवि पाँव के नस के माध्यम से समाज में मौजूद सामान्य गरीब जनता की अहमियत को दर्शाया है।

"राजेश जोशी की लेखनी की सबसे बड़ी खासियत है अपने समय को सजग रूप में पहचानना और उसके परिणाम के रूप में बदलते हुए समाज को दिखाना। राजेश जोशी आम आदमी के साथ खड़े होकर वहां से चीजों को देखते हैं, इसलिए उन्हें वहां से चीजें ज्यादा साफ और स्पष्ट दिखती है।"[5] इस कथन से भी हम यह समझ सकते हैं कि इन्होंने अपनी कविताओं में समाज के सामान्य परिवेशों को दर्शाया है।

वैज्ञानिक युग की बदलती हुई मानवीय मूल्यों ने अपनी दस्तक जिस तीव्रता से दी है उससे कवि वर्ग अवश्य आहत एवं आकर्षित हुआ है। नैतिक मूल्यों के पक्षधर राजेश जोशी ने भी इस परिवर्तित परिवेश की मूल्यहीनता को गहनता से अनुभूत किया है-

"गांधीजी के माथे से आंख के पास तक

बह आई कौवे की बीट सूखकर सफेद हो रही है

अँधेरा इतना गहराता जा रहा है

कि गांधीजी के मूर्ति अँधेरे में विलीन हो गई है

और कौवा अब कहीं नहीं है

सिर्फ बीट का सफेद दाग चमक रहा है

अंधेरे में!"[6]

समाज में उपस्थित असंगतियों को प्रतिक के जरिए उद्घाटित करते हुए इन्होंने 'कौवा और मूर्ति' जैसी कविता की रचना की है। इस कविता में सत्य, अहिंसा, परोपकार जैसी मानवीय प्रवृत्तियां विलुप्त हो रही है। समाज में फैल चुकी इस तरह की बुराइयों के प्रति कवि चिंतित हैं।

वर्तमान समय में हम एक स्वतंत्र भारत में रह रहे हैं परंतु यह स्वतंत्रता आज समाप्त होती जा रही है। वर्तमान समय में एक सचेत नागरिक अपने अधिकारों का बात करता है तो उसे 'राम दास' की तरह मार दिया जाता है। राजेश भी समाज की इस प्रकार की प्रवृत्तियों को देखा है और अपनी कविताओं के जरिए दिखाना चाहते है-

"विरोध करने वालों में से हत्यारे किसी एक को चुनते हैं

और मार डालते हैं उसे सरेआम

सोचते हैं हत्यारे, इस तरह घृणा को बदला जा सकता है

भय में, हमेशा के लिए"[7]

इस तरह की सामाजिक बुराइयां इनकी काव्यों में अनेक स्थानों पर उद्घाटित हुआ है जिनसे सामाजिक पतन का संज्ञान होता है।

वर्तमान समय में दुनिया विकास की चरम बिंदु पर खड़ी है। विश्व के साथ-साथ भारत भी विकसित हो रहा है। इस प्रकार से देखा जाए तो 21वीं शताब्दी के भारत में भौतिक संसाधनों की कोई कमी नजर नहीं आती। इस प्रकार की चका-चौंध से भरी दुनिया में भी व्यक्ति में अकेलेपन की प्रविन्तियाँ बढ़ती जा रही है। मनुष्य के मध्य से वर्तमान समय में हंसी लुप्त हो रही है। विकास के अनुरूप देखें तो कारों की संख्या बढ़ रही है, आस-पास ज्यादा रंगीन दृश्य है, हर एक सुविधाएं

उपलब्ध है फिर भी इंसान हंसी जैसी क्रिया को भूल रहा है। राजेश जोशी ने इस विषय में अपना विचार प्रकट किया है-

"हंसी कम होती जा रही है धरती पर

अब तो नाटकों के विदूषक और सर्कसों में मसखरे भी

कभी-कभार ही दिखते हैं"[8]

कवि ने अपने काव्य में वर्तमान समय की संरचना को दर्शाते हुए अपनी बेचैनी प्रकट किया है। सब कुछ होने के साथ-साथ आज अपराधों की संख्या समाज में दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। कवि अपने शब्दों में कहते हैं- "अपराध बढ़ रहे हैं धरती पर और पहले से कहीं ज्यादा खूंखार और ताकतवर हो रहे हैं अपराधी।"[9] इस प्रकार अपराधी का ताकतवर होना मानवता जैसे गुणों का लोप होना है। अतः हम यह कह सकते हैं कि राजेश जोशी ने समाज एवं राष्ट्र में फ़ैल रही अराजक तत्वों का चित्रण अपने काव्यों के जरिए यथार्थ रूप में किया है। उनकी कविताओं में समाज में प्रचलित विसंगतियों का चित्रण हुआ है एवं इन चित्रणों के माध्यम से कवि इसे समाज से दूर फेंकने के हमें आह्वान करते हैं।

3.1.2. स्त्री की सामाजिक स्थिति :

मानव इतिहास के विभिन्न चरणों में स्त्री की परिस्थिति उतनी अच्छी रही नहीं है। परिवर्तनशील समय के साथ-साथ हमारे समाज में भी परिवर्तन दिखाई पड़ने लगा। मुख्य रूप से 19वीं शताब्दी में जब नवजागरण का दौर आया उसके परिणाम स्वरूप स्त्री-शिक्षा, स्त्री-स्वाधीनता, नारी-पुरुष समानाधिकार जैसे मुद्दों पर विचार किया गया एवं सामाजिक और पारिवारिक क्षेत्र में स्त्री को उचित स्थान दिलाने की चेष्टा आदि में सशक्त पहल आरम्भ हुआ। इसी क्रम से आगे बढ़ते हुए जब हम समकालीन कविता के समयावधि में पहुंचते हैं तो उस समय स्त्री विमर्श जैसा मुद्दा केंद्र में रहा। नारी को समानाधिकार देने की पक्षधरता रखने वालों में राजेश जोशी भी एक हैं।

इन्होंने स्त्री के विभिन्न रूपों को अपनी कविताओं के जरिए हमारे सामने लाने की कोशिश की है। इस युग में भी स्त्रियों का शोषण लगातार हो रहा है। आज भी दहेज के लिए उसे सताया जा रहा है, स्त्री की आर्थिक परनिर्भरता ने धन कमाने के लिए शरीर बेचने या विज्ञापन की दुनिया में उसे आने को विवश किया है। उसकी यही विवशता कवि हृदय को व्यथित करता है और वह अपनी कविताओं के जरिए समाज के सामने इस सत्य को रखता है। स्त्री जीवन की पीड़ा को दर्शाते हुए राजेश जोशी ने 'रैली में स्त्रियाँ' जैसी कविता की रचना की है, जैसे-

"उनका तार कभी-कभी टूट जाता है

कभी-कभी साथ चलते या गोदी में लदे बच्चे की भूख

और थकान का खयाल उन्हें बेचैन कर देता है

रैली जब कहीं रूकती है तो किसी आड़ का सहारा लेकर

भूख से बेहाल बच्चे को वे दूध पिलाने लगती हैं"[10]

इस पंक्ति से यह स्पष्ट होता है कि नवजागरण के सालों बाद भी समाज में नारी को बराबर अधिकार उपलब्ध नहीं है। "राजेश जोशी मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित है, उन्होंने मार्क्स की तरह ही नारी की दासता का ऐतिहासिक विश्लेषण इस कविता में किया है और यह स्पष्ट किया कि वर्गहीन, शोषणहीन समाज में नारी की पूर्ण मुक्ति संभव हो सकती हैं।"[11]

कवि राजेश जोशी कहते हैं अगर हम महिलाओं को सामाजिक स्तर पर एवं राजनीतिक स्तर पर स्वतंत्रता न देकर रसोई के नीरस वातावरण में रखते हैं तो वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त करना एकदम असंभव है। इनकी एक कविता है 'उसकी गृहस्थी' इस कविता में वे कहते हैं -

"साड़ी का पल्लू कमर में खोंसती हुई वो आती है

मुझे हटाते हुए कहती है-'हटो, तुम्हें नहीं मिलेगी कोई चीज'

होठों को तिरछा करती अजीब ढंग से मुस्कुराती है

मुश्किल है उस मुस्कुराहट का ठीक-ठीक अर्थ

समझ पाना

जैसे कहती हो यह मेरी सृष्टि है

तुम नहीं जान पाओगे कभी

कि किन बादलों में रखी हैं बारिशें, किनमें रखा है कपास"[12]

स्त्री विमर्श की नजरिए से इनकी कविताएँ अति महत्त्वपूर्ण है। "इनकी लेखनी की सबसे बड़ी खासियत है अपने समय को सजग रूप में पहचानना और उसके परिणाम के रूप में बदले हुए समाज को दिखाना। राजेश जोशी आम आदमी के साथ खड़े होकर वहाँ से चीजों को देखते हैं, इसलिए उन्हें वहाँ से चीजें ज्यादा साफ और स्पष्ट दिखती है।"[13] वर्तमान समाज में स्थित स्त्री की परिस्थिति को राजेश जोशी ने समझा देखा और परखा है।

जोशी जी के काव्य में स्त्री की मौजूदगी भरपूर है। क्रोध और प्यार ये दोनों ही नारी जीवन में मायने रखते हैं। लेकिन कवि सिर्फ उसे ही नारी जीवन की सार्थकता नहीं मानते हैं। नारी जीवन की अस्मिता की तलाश को कवि ने महत्त्व दिया है। इसी अस्तित्व की लड़ाई की बात कवि अपने काव्य के जरिए से करते हैं। उस औरत का घोड़ा, एक लड़की से बातचीत, रैली में स्त्रियाँ, आठ लफंगे और एक पागल औरत का गीत आदि विभिन्न स्तर पर इनकी कविताओं में स्त्रियां उपस्थित है। समय के अनुरूप स्त्री की महत्त्व में घटाव बढाव होती रती है। उसे अपने जीवन में कई भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है, जैसे- कभी माँ, कभी पत्नी, कभी बेटी, कभी बहन। कवि राजेश जोशी के विचार यहाँ तक ही बद्ध नहीं है। समाज तथा संस्कृति के संपदा को बचाए रखने में भी नारी की महत्ती भूमिका की ओर कवि ने संकेत किया है। कवि अपने काव्य के माध्यम से कहते हैं -

"एक औरत हथेलियों की ओट में

दिये कि काँपती लौ को बुझने से बचा रही है

एक बहुत बूढ़ी औरत कमजोर आवाज में गुनगुनाते हुए

अपनी छोटी बहू को अपनी माँ से सुना गीत

सुना रही है"[14]

इस तरह स्त्री तेजी से बदलती इस समय में भी अपनी संस्कृति को बचाने में तत्पर दिखाई दे रही है।

इस समय स्त्री की महत्त्व एक पुरुष जीवन में कितना और किस रूप में है इसकी ओर भी कवि ने अपनी रचना के जरिए विचार किया है। "राजेश जोशी की कविताओं में इस कठिनतर समय से छटपटाते मनुष्य का त्रास अधिक है। इसलिए इसे पढ़ते हुए दर्द ज्यादा घनीभूत होता है। राजेश जोशी के यहाँ इस कठिनतम समय में पुरुष और स्त्री का साथ सबसे बड़ा साथ है। स्त्रियां जो इस पूरे संघर्ष में एक गौण रूप ले लेती है सही मायने में इस कठिन दौर से निकलने का औजार उसी के पास है। वह जीवन की मूलभूत चिजों को सहेजती है, छोटी-छोटी खुशियों से जीवन को रंगीन बनाने की कोशिश करती है और बिल्कुल कठिनतर समय में सबसे अहम सवाल का उत्तर देती है।"[15] इस कथन को और स्पष्ट रूप से समझने के लिए इनकी 'उसकी गृहस्थी' कविता को रेखांकित कर सकते हैं। इस कविता में स्त्री का अपना संसार भले ही रसोई दिखता है परंतु यह जीवन का मूलभूत हिस्सा है। जिसके बगैर उसका जीवन थम सा जाता है। स्त्री को जो कार्य समाज ने दिया है उसके प्रति एक अधिकार बोध उसमें जगा है। मेरी रसोई यह उसका अपनापन है। कवि कहते हैं -

"जाओ बाहर जाकर टी वी देखो

एक काम पूरा नहीं करोगे और फैला दोगे

मेरी पूरी रसोई!"[16]

इस कविता में ध्यान देने योग्य बात यह है कि यह स्त्री अभी-अभी ऑफिस से लौटी है। पति चाय बनाने की बात करता है पर उसे कुछ हाथ नहीं लगता क्योंकि रसोई का कार्य स्त्री के हाथों में होती है। वही उसे सजाती संवारती है इसलिए स्त्री के बिना घर घर जैसा नहीं लगता है। किसी घर को घर बनाने में स्त्री की क्या अहमियत होती है। इस बात की ओर कवि ने इस काव्य के जरिए संकेत किया है।

राजेश जोशी ने 'बहन', 'बेटी की बिदाई' जैसी कविताओं के माध्यम से एक बेटी का घर पर होना कितना महत्त्व रखता है इस बात को दर्शाया है। कवि कहते हैं –

"तुमने देखा है कभी

बेटी के जाने के बाद का कोई घर?

जैसे बिना चिड़ियों की सुबह

जैसे बिना तारों का आकाश"[17]

इस कविता के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि एक स्त्री विभिन्न रूपों में मानव समाज में अहम भूमिका निर्वहन करती है। इस सन्दर्भ को और स्पष्ट रूप से समझने के लिए 'बहन' जैसी कविता को हम देख सकते हैं।

जोशी जी की रचनाओं में स्त्री विमर्श से सम्बंधित अधिक कविताएँ नहीं है परंतु स्त्री को लेकर उनका दृष्टिकोण व्यापक एवं विस्तृत है। 'चाँद की वर्तनी' काव्य संग्रह में इनकी एक कविता 'जरिता के बच्चों की कहानी' है जो बेहद मार्मिक एवं समस्त विमर्शों का मूल राग है। पितृसत्तात्मक समाज की हिंसक प्रवृत्तियों को स्पष्ट रूप में प्रस्फुटित करने के साथ-साथ स्त्रियों के मूल तत्त्व को उत्घटित करता है। एक नारी कैसे जब खांडव वन धू-धू जल रहा है उस समय में भी अपने प्राण को जोखिम में ढाल कर अपने संतान के लिए तत्पर रहती है –

"चारों ओर आग ही आग थी

धू धू करता जल रहा था खांडव वन

जरिता जो हमारी माँ थी उड़-उड़कर ढूंढ रही थी

कोई ऐसी जगह की जहाँ आग की पहुँच से बचा सके हमें

हमने कहा था कि माँ तुम उड़ सकती हो, तुम उड़ जाओ

लेकिन वह माँ थी ऋषि नहीं कि चली जाती दूर

इस दुर्विनीत समय में भी उड़-उड़ वह खोज रही थीं

कोई सुरक्षित कोना लगातार"[18]

मृत्यु के पश्चात् भी बच्चों को जीवन देना क्या यह स्त्री का वही तत्व नहीं है जो उसे आज भी स्त्री बनाये रखता है।

इसी प्रकार स्त्री की मौजूदगी इनकी कविताओं में सदा रही है, यह स्त्री विमर्श जैसे मुद्दों को और मजबूत एवं मुखर बनाती है। राजेश जोशी की 'उस प्लंबर का नाम क्या है', 'मेरे भीतर एक स्त्री रहती है' जैसी कविताएँ भी एक पुरुष के जीवन में स्त्री की अहमियत कितना है इस बात को दर्शाती है।

कवि राजेश जोशी इस दृष्टि से स्त्री की स्थिति, उसका अस्तित्व, उसकी छटपटाहट, उसकी मुक्ति को महसूस करते हैं और समाज में उसकी स्थिति तथा समाज में उसकी अपेक्षाएं क्या हैं? इस पर विचार करते हैं। समाज में नारी की स्थिति में कवि ने मुक्ति की इच्छा को देखा और महसूस किया है। इस उपभोक्तावादी समय में स्त्री अनेक प्रकार से अपने अस्तित्व को, अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक नैतिकता को बचाएं रखती है। इस बात को भी इन्होंने अपनी कविताओं के जरिए दिखाया है। 'बेटी की बिदाई', 'एक आदिवासी लड़की की इच्छा' आदि कविताओं की पंक्तियां 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ावो' आंदोलन के स्लोगन की भांति है। इस परिप्रेक्ष से इन्होंने समाज में

उपस्थित स्त्रियों की दशा का चित्रण किया है एवं अपने अस्मिता की लड़ाई के लिए उन्हें जागृत और सचेत करते आये हैं।

3.2. आर्थिक पक्ष :

समाज में निवास करने के कारण मनुष्य की अपनी जरूरते होती है जिसकी आपूर्ति के लिए धन का होना आवश्यक होता है। मनुष्य को अपना जीवन सहज रूप से प्रसारित करने के लिए भी अर्थ की जरूरत होती है। एक संपन्न आर्थिक स्थिति के बिना मानव जीवन की संपन्नता की कल्पना नहीं किया जा सकता है। मनुष्य की सामाजिक विकास करने में सबसे अहम और प्रभावकारी तत्व अर्थ ही है। व्यक्ति की गुणवत्ता की परख व्यक्ति तभी कर पाएगा जब उसके पेट की आग शांत होगी। इस आग को शांत करने के लिए भोजन की जरुरत होती है। भगवती चरण वर्मा के अनुसार- "समाज व्यक्ति रूपी इकाइयों का एक संगठन है तथा व्यक्ति एवं समाज के उन्नति का मूल तत्व अर्थ के अतिरिक्त और कुछ नहीं।"[19] अतः मानव जीवन को व्यवस्थित करने में अर्थ की अहम भूमिका होती है।

वर्तमान घड़ी में हम राजनीतिक स्तर पर स्वतंत्र भारत में जी रहे हैं परंतु आर्थिक स्थिति की दृष्टि से आज भी हमारा समाज स्वतंत्र नहीं है। व्यक्तिगत स्वार्थों ने आर्थिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और धार्मिक शक्तियों को ग्रस्त लिया है। देश में बढ़ती पूंजीवाद के कारण देश की अधिकांश जनता आज भी आर्थिक स्थिति से कमजोर है। आज भी हमारा समाज रोजी रोटी के लिए दर-दर भटक रहा है। भूमंडलीकरण, बाजारवाद जैसी प्रवृत्तियां देश की चंद लोगों के लिए उपयुक्त एवं फायदेमंद है। राजनीति में मौजूद भ्रष्टाचरण, घूसखोरी, प्रशासनिक कुशलता ने आर्थिक विकास की गति को वाधित की है।

अतः अर्थव्यवस्था समाज का महत्त्वपूर्ण अंग है। किसी भी समाज की संरचना तथा संघटन उसके अर्थतंत्र पर ही निर्भर करता है। जिन तत्वों के द्वारा समाज संगठित किया जाता है उनमें उत्पादन शक्तियों के वितरण, उपभोग, भूमि व्यवस्था, आर्थिक वर्गों के आपसी संबंध तथा उत्पादन

पद्धति इत्यादि सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार समाज में प्रचलित आर्थिक स्थिति कई रूपों में हमें असर डालती है। समाज के आर्थिक पक्ष से संबंधित विविध कविताओं की रचना इन्होंने की है। उच्च वर्ग की आर्थिक स्थिति के साथ साथ निम्न एवं मध्य वर्गो की आर्थिक परिदृश्य का भी उदाहरण इनकी कविताओं में उपलब्ध है।

3.2.1. भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद का प्रभाव :

आज का समाज भूमंडलीकरण के दौर में प्रवेश कर चुका है। वर्तमान समय में भूमंडलीकरण के औद्योगीकरण बढ़ रहा है। औद्योगीकरण ने समाज के स्वरूप को पूर्ण रूप से अर्थोपजयी बना डाला है। इस युग में कविता जीवन के उन तमाम पहलुओं को कहीं न कहीं से प्रभावित जरुर की है। जीवन के इन पहलुओं में एक ओर विडंबना, विसंगति, कुंठा, अकेलापन, घुटन जैसी प्रवृत्तियां है तो दूसरी ओर बेहतर जिंदगी जीने का प्रयास है। "राजेश जोशी जनविरोधी समाज व्यवस्था से निरंतर संघर्ष कर मानवीय विडम्बनाओं को सक्रिय प्रतिरोध में रूपांतरित करने वाले रचनाकार हैं। इसलिए वे पैदल चलते आदमी को सम्मानजनक दृष्टि से देखने की वकालत करते हैं, काम पर जाते बच्चों को देखकर खेद प्रकट करते हुए इत्यादि और अधूरी कविताओं का पक्ष लेते हैं। मुक्ति को सबके साथ सार्थक मानते हैं, और कुल मिलाकर धरती पर 'साधारण सा घोंसला' बनाने की प्रस्तावना करते हैं।"[20]

जोशी ने इस समय के समाज में मौजूद नई संस्कृति की विशेषताओं को अपने काव्य के द्वारा स्प्रष्ट ढंग से उद्घाटित किया है। बाजारवाद एवं भूमंडलीकरण का प्रभाव वर्तमान समय में इतना बढ़ गया है कि धरती से बहुत सारे प्रजातियां विलुप्त होती जा रही है। कवि कहते हैं-

"कई लोग इसी तरह खो जाते हैं एक दिन

उनके नए पते किसी को पता नहीं होते

कई लोग और कई शहर के शहर

इसी तरफ खो गए हमारी धरती से"[21]

इस प्रकार अपने ही शहर में जान पहचान वाले कम होते जाएंगे और मनुष्य अपनी अस्मिता को खोता जाएगा। इस शहरीकरण की नीतियों में मानव प्रकृति से दूर होता हुआ दिखाई दे रहा है। जिसके कारण आज तालाब जैसी चीजें धरती से विलुप्त हो रही है। बड़ी-बड़ी कंपनियां एवं फैक्ट्रियों के कारण आज देश में पीने के लिए उपयुक्त पानी नहीं मिल रहा है। इस विडंबना को कवि इस रूप में दर्शाते है-

"अखबार में तालाब के लगातार सूखते चले जाने के

कुछ रंगीन चित्रण थे

हाय! एक पराए शहर के प्लेटफार्म पर इस दृश्य ने

मुझे कहीं का नहीं छोड़ा"[22]

भारत एक विकासशील राष्ट्र है परंतु भारत में विकास के साथ-साथ विस्थापन जैसी प्रवृत्तियां भी जोर शोर से चल रही है। गरीब, पिछड़े, आदिवासी लोग सामूहिक रूप से अपनी जड़ों से उखाड़े जा रहे हैं। जड़ों से टूटने बिखरने की जो प्रक्रिया है इसका प्रभाव व्यक्तिगत रूप में भी चल रहा है। इसलिए नौजवान आवारगी के शिकार है तो बूढ़े लोगों के पास रहने के लिए आवास नहीं है। इस प्रकार की जो स्थितियां है उसको राजेश जोशी ने 'रात किसी का घर नहीं' जैसी कविता में उद्धृत किया है-

"रात किसी का घर नहीं होती

किसी बेघर के लिए

किसी घर से निकाल दिए गए बूढ़े के लिए

मेरे जैसे आवारा के लिए"[23]

भूमंडलीकरण एवं विश्वग्राम जैसी धारणाओं का प्रभाव हमारे समाज में इतनी तीव्र रूप में दिखाई पड़ रहा है कि बारिश के समय में आदमी को अपनी सिर छिपाने की जगह नहीं मिल रहा

है। महानगरीय सभ्यता के कारण आज गांव, कस्बा धर्मशाला जैसे स्थान विलुप्त हो रहे हैं। आज शहरों का निर्माण निरंतर हो रहा है, सड़के बन रही हैं, दुकानें बनाई जा रही हैं परंतु एक राहगीर के लिए विश्राम स्थान नहीं है। कवि कहते हैं-

"बड़े शहरों की बनावट अब लगभग ऐसी ही हो गई है

जिनमें सड़के हैं या दुकानें ही दुकानें हैं

लेकिन दूर-दूर तक उनमें कहीं सिर छिपाने की जगह नहीं"[24]

बाजारवाद जैसी प्रवृत्तियों का प्रभाव इतना बढ़ गया है कि बारिश से भीगता हुआ पथिक को देखकर कोई उसे अपनी ओसारे में कुछ देर रुकने के लिए नहीं कहता-

"शक करने की आदत इतनी बढ़ चुकी है कि तुम्हें भीगता हुआ देखकर भी

कोई अपने ओसारे से सिर निकालकर आवाज नहीं देता

कि आओ यहां सिर छिपा लो और बारिश रुकने तक इंतजार कर लो"[25]

भारत को एक कृषि प्रधान देश कहा जाता है। भारत की अधिकांश जनसंख्या कृषि कार्य पर निर्भर है। वर्तमान समय में विकास के चलते खेती करने के लिए जो उपयुक्त जमीन है वहां पर कंपनियां घुस चुकी है। आज भारत के किसान उपयुक्त अनाज उपजाऊ न कर पाने के कारण से कर्ज जैसी समस्या से बचने के लिए आत्महत्या कर रहा है। नवीन संस्कृति का प्रभाव इतना बढ़ गया है कि कारपोरेट वाले जबरदस्ती जमीन छीन लेते हैं-

"कॉरपोरेट आ रहे हैं

कॉरपोरेट आ रहे हैं

सौंप दो उन्हें अपनी छोटी-छोटी जमीनें

मर्जी से नहीं तो जबर्दस्ती छीन लेंगे वे

कॉरपोरेट आ रहे हैं

ज़मीनें सौंप देने के सिवा कोई और विकल्प नहीं

तुम्हारे पास"[26]

वैसे भी वर्तमान समय की प्रवृत्तियों ने हमें घर से मकानों के दौर में पहुंचा दिया है। इसी प्रकार चलते हुए कुछ समय बाद घर भी 'विलुप्त प्रजाति' में शामिल हो जाएगा। आज घर व्यक्ति, समाज, स्थान की विशिष्ट पहचानों को मिटाकर दुनिया को एक से मकानों का नगर में तब्दील किया जा रहा है। राजेश जोशी कहते हैं-

"देखते-देखते सारे शहर एक-से मकानों से भरते जाते हैं

एक जैसी लगती हैं सारी सड़के सारी गलियां सारे चौराहे

एक दिन सारे शहरों के चेहरे एक-सा हो जाएंगे

एक दिन एकाएक हम अपने ही घर का नंबर भूल जाएंगे

अपने ही शहर में अपना ही घर ढूंढते हुए भटकेंगे

और अपना घर नहीं ढूंढ पाएंगे"[27]

"आज तकनीक पूँजीवाद की चाकर बन गई है। इसलिए जोशी जी ने 'चाँद की वर्तनी' में तकनीक को पूँजीवाद का चाकर बनने की प्रक्रिया को संस्कृति से जोड़कर देखा है।"[28] इस सूचना प्रविधि से उत्पन्न समस्याओं से हमारे समाज का कोई भी पक्ष यहां तक कि बच्चें भी नहीं बचे हैं। 'हमारे समय के बच्चे' जैसे काव्य के जरिए कवि कहता है कि तकनीकी शुरू से ही समाज, राजनीति या साहित्य से काटकर बच्चे को अपनी गिरफ्त में ले लेता है। जिसके चलते इस प्रकार की प्रवृत्तियां दृष्टिगत होती है-

"इनकी आंखों में सपनों से ज्यादा महत्वाकांक्षाएँ हैं

सफलता के सारे गुर इनकी निगाह में है

इनमें बेचैनी नहीं थोड़ी हड़बड़ी हैं

और बहुत जल्दी है इन्हें

इन्हें तेज गतियां चाहिए और बहुत तेज रोशनियाँ

बहुत तेज है इनके संगीत की लय"[29]

औद्योगिकरण की सबसे बड़ी नीति यही रहती है कि मनुष्य को वह अपने नियंत्रण में ले। यही कारण होता है कि वह बाजार में नवीन उपकरणों को लाता है और मानव उस उपकरण से प्राप्त सहूलियत के प्रति अपने को आश्रित करता है। कवि औद्योगिक नीति के इस षड्यंत्र की ओर संकेत करते हुए इसके प्रति तीव्र प्रतिक्रिया प्रकट करते हैं। बाजार में जो वस्तुएं प्रस्तुत की जाती है उसका प्रभाव दिल और दिमाग में इतना पड़ता है कि हम धीरे-धीरे उसके गिरफ्त में आ जाते हैं-

"अतिरिक्त हमारे मन की कमजोरी को पहचानता है

लालच धीरे-धीरे पांव पसारता है

एक अतिरिक्त दूसरे अतिरिक्त को बुलाता है

और दूसरा अतिरिक्त तीसरे अतिरिक्त के लिए

जगह बनाता है

एक दिन सारी जगह

अतिरिक्तों से भर जाती है"[30]

इस प्रकार जोशी ने अपने काव्य के जरिए हमारे समाज में बाजारवाद का प्रभाव कितना और किस रूप में पड़ा है इस बात को स्पष्ट दर्शाया है। आधुनिक काल के प्रवाह से ग्रसित समाज में

विद्यमान उन सारी चीजों का वर्णन इन्होंने अपनी कविताओं में किया है। हम यह कह सकते हैं कि इनकी कविताओं का अध्ययन करते हुए हम बाजारवाद के प्रभाव को स्पष्ट समझ सकते हैं।

3.2.2. आर्थिक शोषण की समस्या :

वर्तमान समय की रचनाओं में प्रतिरोध की आवाज स्पष्ट और मुखर रूप में दृष्टिगत होता है। जिसके चलते समाज के प्रत्येक असंगति, विद्रूपता और शोषण के खिलाफ प्रतिरोध हो रहा है। आर्थिक स्तर पर श्रमिक और आम आदमी के शोषण के प्रति भी कवियों ने अपनी चिंता, अपना आक्रोश कविताओं में दर्ज किया है। वर्तमान समय में आर्थिक शोषण की समस्या चारों ओर फैल रही है। ऊँच-नीच, जात-पात, अमीर-गरीब, शासक-शासित आदि विभिन्न रूप में आर्थिक शोषण हो रहा है। समाजवाद के नाम पर आर्थिक विषमता बढ़ रहा है और वर्तमान समाज में पूंजीवाद का दबदवा है। आर्थिक विषमता के बावजूद समाज में भूखमरी, गरीबी, श्रम शोषण, बाल मजदूरी, आम आदमी की दयनीय स्थिति, निर्धनता, महंगाई, पूंजीवादी प्रवृत्ति, शोषण एवं शोषित वर्गों का उदय जैसी प्रवृत्तियां उपस्थित होती हैं। सरकार द्वारा प्रस्तावित नई आर्थिक उदारीकरण की नीतियां भी पूंजीपतियों और उद्योगपतियों के हितों में ही सुरक्षित है। देश में बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आ जाने से आम जनता का आर्थिक शोषण हो रहा है तथा देश भी आर्थिक शोषण के पंजे से ग्रसित होता दिखाई देता है।

राजेश जोशी ने निम्नवर्ग की गरीबी, मजदूरी, बेकारी, भुखमरी जैसी दयनीय स्थिति को अपने काव्य के जरिए दर्शाया है। आर्थिक शोषण के माध्यम से समाज में गरीबी जैसी प्रवृत्तियां जन्म लेती है। जोशी जी की रचना में गरीबी का भयावह चित्रण दिखाई देता है। सामान्य जन को जीवन व्यतीत करने के लिए किन किन समस्याओं से जूझना पड़ता है। इसका चित्रण 'थोड़ी सी जगह' जैसी कविता में कवि इस प्रकार करते हैं-

"सिर पर लकड़ी का गट्ठर लिये

वे दौड़ रहे हैं प्लेटफार्म पर

किसी बोगी के दरवाजे में अपना गठ्ठर चढ़ा

किसी भी कोने में सिकुड़ कर बैठ जायेंगे वे

चारों ओर हिकातर फैंकती तुम्हारी नजरों के बीच

वे तलाश रहे हैं

एक छोटी सी जगह!"[31]

प्रस्तुत पंक्ति के जरिए कवि ने सामाजिक भाव को उद्घाटित किया है। शक्ति हीनता का अभाव सामाजिक में गरीबी को परिभाषित करता है। स्वाधीनता के पश्चात् सामाजिक एवं राजनीतिक स्वरूप में जो असमानता हमारे देश में आई इस प्रकार की बदलाव को गहराई से पकड़ने की कोशिश राजेश जोशी ने किया है।

समाज की अनेक स्वरूपों का वर्णन साहित्य में मिलता है। समाज के विभिन्न परिस्थितियों को रचनाकार नजदीक से देखता है और उसे अपनी कलम के जरिए व्यक्त करता है। आर्थिक शोषण की समस्या हमारे समाज में व्यापक रूप में उपस्थित है। मजदूर वर्ग दिन-रात कड़ी मेहनत से काम करते हैं परंतु पूंजीपति वर्ग इनके श्रम को महत्त्व नहीं देते। आज के समाज का प्रश्न है गरीबी जो आज के जीवन की विडंबना बन गई है। छोटी-छोटी चीजों के लिए उन्हें जूझना पड़ता है। इन्होंने 'एक आदिवासी लड़की की इच्छा' जैसी कविता के द्वारा आदिवासी समाज की विषम आर्थिक स्थिति का वर्णन किया है-

"लड़की की इच्छा है

छोटी-सी इच्छा

हाट इमलिया जाने की।

सौदा-सूत कुछ नहीं लेना

तनिक-सि इच्छा है-सुग्गे की

फुग्गे की"[32]

इस कविता के भाव को और स्पष्ट रूप से समझने के लिए डॉ. पंडित गायकवाड़ का यह कथन प्रासंगिक प्रतीत होता है- "यह केवल एक लड़की की दर्द भरी गाथा ना होकर समग्र आदिवासी समाज के दुखद गाथा है। राजेश जोशी आदिवासी जीवन की त्रासदी को देखकर हताश होते हैं और उसके प्रति मानवता को भी अभिव्यक्त करता है।"[33] इस प्रकार इन्होंने कविताओं के जरिए सामाजिक और आर्थिक शोषण का वर्णन किया है।

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि सामाजिक एवं आर्थिक युगबोध के विभिन्न स्वरूप का यथार्थ वर्णन इनकी रचनाओं में दर्ज है। जोशी की रचना के द्वारा समाज की अनेक परिस्थितियों को उपर्युक्त अध्याय में देखा गया है। समाज के सभी वर्गो का चित्रण इनकी कविताओं का मूल उद्देश्य है। भूमंडलीकरण से परिवर्तित भारतीय समाज का यथार्थ वर्णन इनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। घर-गृहस्ती में हो रहे परिवर्तन, एकल परिवार की समस्याएँ तथा आज के परिवारिक जीवन की सभी समस्याओं को इनकी कविताएँ उजागर करती है। आज के समय में समाज में जो व्यक्ति अधिकारों पर बात करता है उसे नेता बिलकुल पसंद नहीं करते एवं उसे चक्रव्यूह रचकर मार दिया जाता है। समाज में पल रहे गरीब वर्ग से लेकर स्त्री की तत्कालीन हालात को इन्होंने अपनी कविताओं से स्पष्ट किया है। 'रैली में स्त्रियाँ' कविता के द्वारा उन्होंने आज की गरीब स्त्रियों के यथार्थ हालात से हमें परिचित करवाया है। 'उस औरत का घोड़ा',' एक लड़की से बातचीत', 'आठ लफंगे और एक पागल औरत का गीत' 'बहन', 'बेटी की बिदाई' आदि कविताओं में इन्होंने समाज के सभी वर्ग की स्त्रियों को उपस्थित किया है। स्त्री के प्रति दया एवं ममता का भाव तथा समाज में स्त्रियों को बराबरी का हिस्सा देने के लिए ये हमें अपनी कविताओं से प्रेरित करते हैं। स्त्री के प्रति उनका दृष्टिकोण व्यापक एवं विस्तृत है। वर्तमान व्यक्तिगत स्वार्थो ने हमारी आर्थिक स्थिति को कैसे कमजोर करके रख दिया है इसे जोशी जी अपनी कविताओं में बड़े सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया है। भूमंडलीकरण के कारण वर्तमान हमारे भारत में रोज नई नई बड़ी-बड़ी कंपनियां एवं फैक्ट्रियों का निर्माण हो रहा है, इसके प्रभाव से गरीबों के घर उजारे जा रहे हैं एवं हमें शुद्ध

पानी पीने को नहीं मिल रहा है। इन सभी का उदाहरण हमें इनकी कविताओं में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। आज बाजारबाद के प्रभाव से बाजार दिनों दिन इतने बड़े होते जा रहें कि बारिश के समय सिर छुपाने के लिए हमें जगह नहीं मिलती। निम्नवर्ग की गरीबी, मजदूरी, बेकारी, भुखमरी जैसी दयनीय स्थिति को 'थोड़ी सी जगह' जैसी कविता के जरिए इन्होंने दर्शाया है। मुख्यधारा के जनमानस के साथ साथ इन्होंने आदिवासी समाज की आर्थिक स्थिति से भी ये परिचित थे।'एक आदिवासी लड़की की इच्छा' जैसी कविता के द्वारा आदिवासी समाज की विषम आर्थिक स्थिति का यथार्थ चित्रण हमें दिखाने का प्रयास किये हैं।आज के नवीन उपकरणों ने आम जनता की आर्थिक स्थिति को किस रूप में असर किया है, इसका भी वास्तविक उदाहरण उन्होंने अपनी कविताओं में दी है।

सन्दर्भ :

1. सेन,अर्चना.*राजेश जोशी की कविताओं में सामाजिक मूल्य परिवर्तन की अभिव्यक्ति*.पृ. 42
2. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी* पृ.13
3. वही,पृ.15
4. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच* पृ.14
5. नीरज.*राजेश जोशी स्वप और प्रतिरोध*.पृ.245
6. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.73
7. जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हँसी*.पृ.33
8. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.65
9. वही,पृ.66
10. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.33

11. देशमुख,डॉ.वर्षा.*राजेश जोशी की काव्य संवेदना और शिल्प*.पृ.90

12. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.40

13. नीरज.*राजेश जोशी स्वप्न और प्रतिरोध*.पृ.245

14. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.66

15. नीरज.*राजेश जोशी स्वप्न और प्रतिरोध*.पृ.245

16. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.41

17. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.40

18. वही,पृ.64

19. शुक्ला,डॉ.बैजनाथ प्रसाद.*भगवती चरण वर्मा के उपन्यासों में युक्त चेतना*.पृ.108

20. नीरज.*राजेश जोशी स्वप और प्रतिरोध*.पृ.297

21. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.17

22. वही,पृ.26

23. वही,पृ.14

24. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.14

25. वही,पृ.14

26. वही,पृ.84

27. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.19-20

28. नीरज.*राजेश जोशी स्वप और प्रतिरोध*.पृ.301

29. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.29

30. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.54

31. जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हँसी*.पृ.21

32. जोशी,राजेश.*प्रतिनिधि कविताएँ*.पृ.24

33. गायकवाड़,डॉ.पंडित.*राजेश जोशी सृजन के आयाम*.पृ.121

चतुर्थ अध्याय

राजेश जोशी के काव्य में युगबोध के राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक पक्ष

4.1 राजनीतिक पक्ष :

राजनीति ने मानव जीवन को हर एक क्षेत्र में प्रभावित किया है। आज के समय में इससे तटस्थ रहना संभव नहीं है। साहित्यकार अपने युग में जीता है। इसी के साथ युग में घट रही घटनाओं को साहित्यकार अपनी रचनाओं के जरिए प्रस्तुत करता है। वर्तमान कालिक कविता ने अपने समय की घटनाओं को अपना वर्ण्य विषय बनाया है। गाँवों, कस्बों, देहातों, श्रमजीवियों, किसानों, मजदूरों, अनुबंधित सेवकों, दासों, गुलामों और आम आदमी की प्रतिदिन की घटनाओं को केंद्र में रखा है। स्वतंत्र भारत में भी व्यक्ति प्रत्येक कदम में शोषित दिखाई देता है। यह शोषण समाज के हर एक पहलू में जैसे आर्थिक, धार्मिक, प्रशासनिक आदि में मौजूद है। झूटे वादों की स्वार्थपूर्ण राजनीति और समुदाय के अनुसरण पर चुनाव लड़ना आज के कुछ राजनीतिज्ञों में देखा जाता है। इन सारी बातों को समकालीन कविता ने वर्ण्य विषय बनाया है। समाज में शोषण, संताप और स्वार्थ जैसी प्रवृत्तियाँ व्याप्त है।

वर्तमान समाज को अत्याधिक प्रभावित करनेवाली चेतना राजनीति है। इस राजनीति ने समाज, धर्म एवं हमारी पूरी अर्थव्यवस्था को झकझरा है। अभी हर एक क्षेत्र में राजनीति किया जाता है। इस प्रकार से देखे तो राजनीति वर्तमान समय एवं समाज के लिए मेरुदंड की तरह उपस्थित है। वर्तमान जीवन का कोई भी पक्ष इससे अछूता नहीं रह पाया है। आज देश के हर एक हिस्से में, हर एक गांव में, हर एक घर के लोगों में राजनीति से प्रभावित सदस्य नजर आते हैं। यह समाज के लिए गौरबपूर्ण है परंतु इसके साथ-साथ देशभक्ति जैसी अवधारणा विलुप्त हुए हैं। खेद व्यक्त करते हुए कहना पड़ रहा है कि वर्तमान समय में स्वार्थी लोगों ने राजनीति का रूप ही बदल दिया है। व्यवस्था के प्रति उसकी गलत सोच ने पूरी राजनीति का नक्शा बदल डाला है। इस परिवर्तित राजनीति का स्वरूप आज देश के कोने-कोने में नजर आता है। इसी कारण वर्तमान परिवेश में राजनीति का कोई स्वच्छ चित्रण उभर नहीं पाया। आजादी के पहले और बाद में जितने भी देश भक्त नेताओं ने आदर्श भारत का सपना देखा था वह आज एक सपना ही बनकर रह गया है। इससे सबसे ज्यादा प्रभावित सामान्य जन समुदाय हुआ है। इसी के परिणाम स्वरुप राजनीति धीरे-धीरे

भ्रष्टता एवं तुच्छता का रूप बनकर लोगों के सामने उपस्थित होने लगा। वर्तमान राजनीति परिस्थिति को दर्शाते हुए डॉ. माधव सोनटक्के लिखते हैं-"समकालीन राजनीति राजनायिकों की अनीति का दूसरा नाम है। सत्ता और ऐश्वर्य प्राप्ति आज की राजनीति का मूल उद्देश्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए राजनेता कुछ भी करने के लिए अचकचाते नहीं।"[1] इस कथन से यह समझा जा सकता है कि वर्तमान संदर्भ में राजनीति एक ऐसा हथियार बन गई है जिसका उपयोग किसी की इच्छा को पूरा करने के लिए किया जाता है।

इस प्रकार की राजनीतिक स्वरूप के कारण ही आज समाज एवं देश में समस्याओं का आविर्भाव हो रहा है। इस भ्रष्ट व्यवस्था का असर सामान्य जन-जीवन पर तो पड़ा ही है साथ ही साहित्यकारों पर भी पड़ा है। इस भ्रष्ट व्यवस्था के कारण वर्तमान समय में रचनाकार नए सिरे से सोच रहे हैं। वर्तमान समय के रचानाकाओं में राजनीतिक व्यवस्था को लेकर छटपटाहट दृष्टिगत होता है। रोज का चुनाव, रोज आता न्याय में परिवर्तन, राजनेताओं की गुंडागर्दी, भ्रष्ट न्याय व्यवस्था, अन्याय, अत्याचार, समाज में बढ़ रही हिंसा इसी कुत्सित राजनीति का परिणाम है। इसप्रकार की समस्याओं से प्रभावित समकालीन कवियों के काव्य में उपर्युक्त वर्णित समस्याओं की उपस्थिति दर्ज है। वर्तमान कविता के संदर्भ में डॉ. बैजनाथ गर्ग लिखते हैं- "आज का सर्जक आर्थिक एवं सामाजिक कठिनाइयों का केवल हल नहीं अपितु उनके प्रति जागरूक भी है और इसीलिए वह अत्याचार, अनाचार, अन्याय, आर्थिक विषमता, जातीयता, सांप्रदायिकता, अनुशासनहीनता, युवा आक्रोश तथा मूल्य हीन राजनीति को अपनी कविता का विषय बनाकर अपने साहस और दायित्व बोध का परिचय देता रहा है।"[2]

जोशी जी ने अपनी कविता के माध्यम से आज के राजनीतिक परिवेश को व्यक्त किया है। राजनीतिक त्रासदी को कवि स्वयं अनुभव किया है और इसके प्रति रोष प्रकट करते हैं। इस खोखले राजनीतिक व्यवस्था के प्रति कवि ने अपनी रचनाओं के जरिए कठोर व्यंग्य प्रहार किया है। हम यह

कह सकते हैं कि राजेश जोशी की अधिकतर कविताएं राजनीतिक संदर्भ से संलग्न है। समकालीन राजनीति से सम्बद्ध समस्याओं को राजेश जोशी की कविताएँ इसप्रकार उद्घाटित करती है।

4.1.1.वर्तमान राजनीति का स्वरूप :

वर्तमान परिवेश में राजनीति स्वार्थ सिद्धी का माध्यम बन चुकी है। इस प्रकार के परिवेश से उत्पन्न राजनेता समाज हित के बजाए स्वार्थ हित को अधिक महत्त्व देता है। अपनी झूठी योजनाओं का भ्रम फैला कर समाज को दिग्भ्रमित करने के अतिरिक्त इनके समक्ष और कोई विकल्प नहीं है। इन भ्रष्ट नेताओं की नीतियां भी भ्रष्ट ही है। इस प्रकार की घिनौनी राजनैतिक व्यवस्था को जोशी जी ने अपनी रचनाओं के जरिए हमेशा उजागर करते आये हैं। इसी संदर्भ को समझने के लिए उनकी 'रुको बच्चो' जैसी कविता देख सकते हैं। सफेद कार पर बैठकर दौड़ते हुए नेताओं को देखकर कवि का मन बेचैन है। कवि सड़क पार करते हुए बच्चों को रोककर नेता की गाड़ी को जाने देने में भ्रष्ट नेता के अस्तित्व शून्य कर्तव्य पर व्यंग्य करते हैं। कवि साइरन बजाती गाड़ी के पीछे दौड़ती गाड़ी को ढोंग का नजारा मानते हैं। जिसके कारण नेताओं का दिखावटीपन, भ्रष्ट नीतियों का बोलबाला तथा सामाजिक उदासीनता उभरकर आती है। इस कविता के जरिए से हम संप्रति राजनीति का स्वरूप अवलोकन कर सकते हैं-

"रुको बच्चो रुको

सायरन बजाती इस गाड़ी के पीछे पीछे

बहुत तेज गति से आ रही होगी किसी मंत्री की कार

नहीं-नहीं उसे कहीं पहुंचने की कोई जल्दी नहीं

उसे तो अपनी तोंद के साथ कुर्सी से उठने में लग जाते हैं कई मिनिट

उसकी गाड़ी तो एक भय में भागी जाती है इतनी तेज

सुरक्षा को एक अंधी रफ्तार की दरकार है

रुको बच्चो

इन्हें गुजर जाने दो

इन्हें जल्दी जाना है

क्योंकि इन्हें कहीं नहीं पहुँचना है"[3]

राजनेताओं के ऐसी भ्रष्ट नीतियों के बारे में कवि अच्छे तरह से जानते हैं। कवि का संवेदनशील मन इस व्यवस्था से क्रोधित है।

वर्तमान राजनीतिक का रूप भयावह है। राजनीतिज्ञ सत्ता के मोह के कारण आँख से अंधे कान से बहरे बन चुके हैं। इसप्रकार की घिनौनी राजनीति का स्वरूप रचनाकार ने व्यक्त किया है। राजनीति की इस खेल में आज देश डूब गया है। राजनीति एक धीमा जहर के रूप में समाज में प्रयोग किया जा रहा है। इसी के परिणाम स्वरूप साम्प्रदायिकता, अराजकता, अत्याचार जैसी प्रवृत्तियाँ समाज में तेजी से फैल रही है। जोशी की कविता है 'जहर के बारे में कुछ बेतरतीब पंक्तियाँ' जो समाज में फैल रही धीमा जहर के विषय में कहती है-

"सत्ताएँ इस जहर के बारे में बहुत अच्छी तरह जानती हैं

और इसका उपयोग करने में बहुत हुनरमंद होती हैं

धीमे जहर की यह तासीर होती है

कि वह बहुत धीरे-धीरे खत्म करता है जीवन को

क्या इस तर्क के आधार पर

समय को एक धीमा जहर कहा जा सकता है?"[4]

इस जहर का प्रयोग वही लोग करते हैं जो जनता की मदद करने का दावा करते हैं। इस दोहरी राजनीति के कारण देश पूरी तरह प्रभावित हुआ है। सांप्रदायिकता, अनाचार, अत्याचार इस

धीमा जहर का ही रूप है जो समाज को मजहब के नाम पर अंदर ही अंदर से खोखला कर देता है। इसी कारण देश के सुधार में कोई बदलाव नहीं आया है। प्रतिबद्ध कवि की व्याकुलता राजनेताओं की बर्बरता से है। उन्होंने अपनी एक कविता 'बर्बर सिर्फ बर्बर थे' के माध्यम से हमारे समाज की उस भयावहता को दर्शाया है जो राजनीतिक के परिणाम स्वरूप उपस्थित है। खराब राजनीतिक व्यवस्था के कारण ही आज समाज में धार्मिक विद्वेष फैल रही है जिसके कारण रफीक मास्टर साहब जैसे शिक्षकों को सांप्रदायिकता का शिकार होना पड़ता है-

"गणित पढ़ानेवाले रफ़ीक मास्टर साहब

दंगाइयों द्वारा मार दिए गए बानवे के दंगों में

दोस्तों ने पूछा कौन रफ़ीक मास्टर साहब

वो जो बानवे के दंगों में मारे गए?

नहीं! मैंने खीजते हुए कहा....."[5]

आजादी के पश्चात् सारे सपने टूट कर बिखर गये। सत्ता की भूख बढ़ती गई। आम इंसान को हाशिए पर लाकर खड़ा कर दिया गया जो 'बस कुछ सिर फिरे कवियों की कविता में' ही उपस्थित है। आज राजनेता का एक ही लक्ष्य है सत्ता को अपने हाथ में लेना। सत्ता के लिए वर्तमान समय में ऐसे राजनेता कोई भी कार्य करने के लिए तत्पर रहते हैं। इतना कह सकते हैं राजनीति के उसूल बदल गए, राजनेताओं का चरित्र बदल गया, देश भक्ति, राष्ट्र के प्रति ईमानदारी, जनता की सेवा ये बातें तो दूर-दूर तक उनसे कोई भी संबंध नहीं रखती है। इसी प्रकार की सामाजिक भयावहता को दर्शाती कविता है 'मारे जायेंगे'। इस कविता में कवि समाज में झूट बोलनेवालों पर व्यंग्य करते हुए वर्तमान समय में सच के साथ कैसी रवैया होती है उसका पर्दाफास करते हैं।

इस कविता में हम अपने समय के बहाव को देख सकते हैं। दिन-ब-दिन कठिन होती जा रही जीवन शैली, सामाजिक विकृतियां, खोखले सिद्धांत आदि को कवि ने अपनी कविताओं में समाविष्ट किया है। यह सारी बातें वर्तमान समाज एवं समय से पूरी तरह संपृक्त है।

राजेश जोशी की रचनाशीलता में राजनीतिक वातावरण का विवरण विस्तार से मौजूद है। मूलतः जोशी किसी राजनीतिक दल या वाद से प्रत्यक्ष के रूप में संबंधित नहीं है। उनका काव्य सृजन का समय और राजनीतिक मोहभंग का समय समकालीन रहा है। अतः उस समय समाज की जो परिस्थितियां थी उसका प्रभाव उनकी कविताओं में यथार्थ रूप में पड़ा है। संप्रति राजनीति में मौजूद अनैतिकता एवं चारित्रिक पतन, अवसरवादिता और भ्रष्टाचार को रेखांकित करते हुए उनकी 'मेरा नया फोन नंबर' कविता के द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं-

"क्या इस प्रजातंत्र में प्रधानमंत्री और एक साधारण नागरिक के बीच

चुनाव में वोट देने के अलावा कोई संबंध नहीं हो सकता?

प्रधानमंत्री को अपनी पार्टी के लिए वोट मांगने के अलावा

एक साधारण नागरिक से बात करने का

क्या कभी कोई और कारण

नहीं हो सकता?"[6]

इस कविता में कवि सत्ता से सीधा-सीधा सवाल पूछ रहा है। कवि मानते हैं कि साधारण जन समुदाय एवं प्रधानमंत्री के बीच चुनाव के अतिरिक्त भी संबंध रहना चाहिए तब जाके समाज एवं देश का विकास हो सकता है। इसी कविता के अग्रिम पंक्तियों में कवि व्यवस्था के प्रति व्यंग्यप्रहार करते हुए कहते हैं-

"प्रधानमंत्री की घड़ी में और एक साधारण नागरिक की घड़ी में

बजनेवाला समय क्या एक ही हो सकता है?

क्या किसी ऐसे जनतंत्र की हम कल्पना कर सकते हैं

जिसमें सत्ता की घड़ी और जनता की घड़ी का

समय एक ही हो?"[7]

इस प्रकार कवि प्रजातंत्र में एक समन्वयवादी समाज की कल्पना करते हैं। अगर सत्ता एवं साधारण नागरिक का समय एक जैसा चलना शुरू किया तो समाज एवं देश से बेरोजगारी, भुखमरी, बाल मजदूरी, स्त्री हिंसा, किसान की आत्महत्या जैसी समस्याएं खत्म हो जाएगी।

राजेश जोशी की एक कविता है 'जहर के बारे में कुछ बेतरतीब पंक्तियां' जिसमें कवि ने सत्ताएँ समाज में किस प्रकार से नकारात्मक चीजों को फैलाता है, इस विषय को प्रस्तुत किया है। इसी संदर्भ से मिलती जुलती एक और उनकी कविता है 'बिजली का मीटर पढ़नेवाले से बातचीत' जो 'ज़िद' कविता संग्रह में संलग्न है। सामान्य विषय वस्तु को लेकर शुरू होती यह कविता आगे चलकर देश में बढ़ रही महंगाई जैसे विषय को उद्घाटित करती है-

"मैं पूछता हूं

जिससे जाना जा सके कि इस अवधि में

कितना अँधेरा पैदा किया गया हमारे घरों में?....

महँगी होती जाती है रोशनी

और बढ़ता जाता है अँधेरे का क्षेत्रफल लगातार।"[8]

वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति से कवि राजेश जोशी व्यथित है। प्रजातंत्र में जनता नायक को चयन करती है, उन्हें जनता का सदैव ध्यान रखना चाहिए पर हालात बिगड़ जाने पर भी वे उपस्थित नहीं होते हैं। इस समय राजनीतिक परिदृश्य सामान्य जन के लिए इतना क्रूर एवं भयानक हो रहा है कि जिसमें स्वतंत्रता लुप्त होती जा रही है। 'टामस मोर' एक ऐसी कविता है जो वास्तव में आज के क्रूर राजनीतिक परिदृश्य को प्रस्तुत करती है।। विश्व का इतिहास साक्षी है कि बुद्धिजीवी साहित्यकार ही व्यवस्था का विरोध करता है। जितनी भी क्रांतियां हुई है उसकी प्रेरणा यही वर्ग देते आये हैं। तानाशाही शासन किस हद तक गिर सकता है इसका ज्वलंत उदाहरण पेश करती है

‘टॉमस मोर’ जैसी कविता। सर टॉमस मोर उन्होंने अनेक कृतियों की रचना की जिसमें ‘यूटोपिया’ प्रमुख है। इसमें तत्कालीन समाज की राजनीति और सामज की बुराइयों का आलोचना की गई है। कुछ लोगों का मत है कि यह समाजवाद की अप्रत्यक्ष अभिव्यक्ति है। वे एक सच्चे ईसाई थे। उन्होंने राजा को चर्च का धार्मिक नेता मानने से इंकार किया और इसी कारण उन पर देशद्रोह का आरोप लगाया था। उसने राजा को ईसाई विश्व का धार्मिक अध्यक्ष मानने से इंकार कर दिया था। सन् 1935 में उसे प्राण दंड देने के बाद उसका कटा हुआ सिर लंदन ब्रिज पर लटका दिया गया कि लोग देखें और अपना निर्णय खुद ले सके। इस प्रकार की व्यवस्था से आहत कवि लिखते हैं-

“मैं टॉमस मोर का कटा हुआ सिर हूँ

उन्होंने मुझे लंदन ब्रिज पर लटका दिया है

उन्होंने कहा कि मैं राजसत्ता और धर्म के संबंधों का

विरोध करना बंद कर दूँ

मैंने इंकार कर दिया

वो चाहते थे कि मैं राजा को धर्मसभा का अध्यक्ष मान लूँ

मैंने इंकार कर दिया

मैं टॉमस मोर का कटा हुआ सिर हूं

उन्होंने मुझे लंदन ब्रिज पर लटका दिया है

कि लोग देखें

और अपना निर्णय अपने आप ले सकें

मेरे हजारों तर्क भी जिस बात को समझाने में

लाचार रहे

क्या उम्मीद करूं कि मेरा कटा हुआ सिर

कभी उसे समझा पाएगा!"[9]

इस प्रकार कवि राजनीतिक परिदृश्य के प्रति तीव्र व्यंग्य प्रकट करते हैं। इस कविता से हम अपने समय एवं समाज में व्याप्त शासन प्रणाली के विषय में अनुमान लगा सकते हैं। आज शासन एवं कुर्सी को यथास्थिति में रखने के लिए सत्ताएं किसी भी प्रकार के खेल खेल सकती है। इसप्रकार के भ्रष्ट व्यवस्था का प्रभाव सामान्य जन समुदाय पर अधिक मात्रा में पड़ता है।

वर्तमान के संदर्भ में सरकारे जन-साधारण के लिए कई योजनाएँ लागू करती है परंतु उसका कोई खबर जन-साधारण को नहीं होता है। जनता के हित में कौन सी योजना कब लागू होकर कब समाप्त हो गई है पता ही नहीं चलता है। इस प्रकार जनता के पक्ष में लाई गई योजना को भी सरकारे विज्ञापन के जरिए दर्शाती है-

"सरकारे समय-समय पर अपने कामों का खुद गुणगान करती थीं

विज्ञापन छपवातीं थीं गौरव यात्राएं निकालती थीं

ऐसी विडंबना थी

कि जनता को सरकार के उन कामों की ही जानकारी नहीं होती थी

जिनके बारे में बताया जाता था कि उन्हें जनता की

भलाई के लिए किया जा चुका है"[10]

व्यवस्था वह खतरनाक मगरमच्छ हैं जिसने जन-साधारण रूपी बछड़े को अपनी जबड़े में दबा रखा है। इतने प्रयासों के बाद भी जब सत्ताएं चुनाव हार जाती है तो कहती है कि जनहित में किए गए कार्यों का सही प्रचार-प्रसार नहीं हो पाया-

"तिसपर भी जब कभी शासकदल हार जाता था

तो यही कहा जाता कि देश के विकास के लिए

किए गए कामों की जानकारी

वे जनता तक नहीं पहुंचा पाए....."[11]

जोशी जी के काव्य में राजनीतिक बोध को लेकर प्रसिद्ध आलोचक अरुण कमल लिखते हैं- "राजेश जोशी की रचना दृढ़ता के साथ सत्ता के सभी पायदानोंपर वार करती है, एक विराट सत्ता जो अर्थव्यवस्था से लेकर हमारी रसोई तक व्याप्त है। नागार्जुन और धूमिल के बाद सत्ता के तिलिस्म को उधाड़ने वाले सर्वाधिक सशक्त कवि राजेश जोशी है।"[12] इनके काव्य के विषय में अरुण कमल का जो यह कथन है इसको और स्पष्ट रूप से समझने के लिए इनकी काव्य पंक्तियाँ इस प्रकार प्रस्तुत की जा रही हैं -

"इस बात का पुख्ता बंदोबस्त था

की एक कवि इस समाज में रहा जाए"[13]

उपरोक्त काव्य-पंक्तियाँ समाज में फैली भ्रष्ट राजनीति पर सीधा प्रहार हैं।। ऐसा समाज जहाँ जुर्म, वारदात, नाइंसाफी का सैकड़ों साल पुराना किस्सा नई पोशाक पहनकर एक बार फिर हमारे दिलों पर दस्तक दे रहा है। कवि लिखते हैं-

"समाज की संरचना इतनी दिलचस्पी थी कि आधी से ज्यादा आबादी

दो जून की रोटी और कपड़े लत्तों की फिक्र में ही

अपनी पूरी जिंदगी काट देती थी

उनके बच्चे कुपोषण के बाद भी अगर जिंदा रह जाते थे

तो वहीं धूल में खेलते हुए बड़े होते रहते थे"[14]

यह कविता हमारे समाज के यथार्थ रूप को बया करती है। इससे यह अंदाजा लगा सकते हैं कि हमारे समाज की स्थिति कितनी खराब एवं अव्यवस्थित है। इस प्रकार की दुखद स्थिति का सृजन भ्रष्ट राजनैतिक वातावरण के कारण ही होता है।

संप्रति समाज व्यवस्था में भ्रष्टाचार किसी विशिष्ट क्षेत्र तथा विशिष्ट व्यक्ति अथवा जाति-धर्म तक सीमित न होकर हर क्षेत्र, हर जगह, देश दुनिया के हर कोने में संपूर्ण मानवजाति के साथ जुड़ा है। प्रजातंत्र पर भ्रष्टाचार हावी होता जा रहा है। भ्रष्ट व्यवस्था के संदर्भ में डॉ. माधव सोनटक्के लिखते हैं- "लोकतांत्रिक मूल्यों की हत्या कर व्यवस्था के हर अंग में भ्रष्ट मूल्यों का प्रचलन आज की राजनीति का एक आवश्यक कार्य बन गया है।"[15] इस प्रकार की भ्रष्ट व्यवस्था से लड़ पाना आम आदमी के बस में नहीं है। भ्रष्ट व्यवस्था से त्रस्त प्रजातंत्र में दूसरे देशों का बढ़ता दबाव बहुत हानिकारक है। इस विषय में कवि लिखते हैं-

"मैं कहता हूं बहुत हानिकारक है

व्यक्ति के लिए नहीं पूरे देश के लिए हानिकारक है

दिनोंदिन बढ़ते जाना अमेरिका का दबाव राष्ट्रवाद का नया उफान

वित्त पूँजी का प्रपंच बजरंगियों का.....

लगातार फैलता जाल

एक प्रधानमंत्री का इतनी बुरी कविता लिखना

हानिकारक है"[16]

राजेश जोशी अपने काव्य में भ्रष्ट राजनीति के साथ-साथ राजनीतिक व्यंग्य भी करते हैं।उनके ऐसे व्यंग से युक्त कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

"पानी को वाटर कहने से डूबने लगती है जिनकी संस्कृति की नब्ज़

उन्हें गंगा के साबुन में बदल जाने से कोई एतराज नहीं"[17]

इस प्रकार इन्होंने अपने काव्य में समकालीन राजनीतिक परिदृश्य का यथार्थ रूप वर्णन करते हुए भ्रष्ट शासन प्रणाली के प्रति तीव्र आक्रोश प्रकट किया है। आम आदमी के पक्षधर के कवि राजेश ने अपने काव्य के जरिए सामान्य जन को अपने दायित्व की ओर मुखर किया है।

4.2.धार्मिक पक्ष :

दूषित प्रवृत्तियों पर नियंत्रण रखकर उत्तम प्रवृत्तियों को अग्रसर करना ही धर्म का प्रधान कार्य है। धर्म में ऐसे तत्व मौजूद है, जिनका समुचित अनुसरण से मनुष्य अपने वास्तविक चरित्र को जान पाता है। धार्मिक विकृतियाँ समाज की दृष्टि को प्रदूषित करती है। इसी के चलते समाज एवं देश के विभिन्न हिस्सों में धार्मिक विकृतियाँ परिलक्षित होती है। इस प्रकार के वातावरण के मध्य चेतना का विवेकपूर्ण प्रयोग से समुचित धार्मिक मार्गों का प्रतिपादन करना आवश्यक है। समाज में शांति, आनंद, मानवतावादी दृष्टि को विकसित करने हेतु धार्मिक ज्ञान का होना अत्यंत आवश्यक है। धर्म के द्वारा समाज की चेतना एवं राष्ट्रीय की भावना और मजबूत होती है। धर्म ऐसी धारणा है, जिसे समाज अपने हित में निर्धारित करके उसे अपने लिए श्रेयष्कर समझता है। धर्म के कारण ही मानव में नैतिकता, सदाशयता, परोपकारिता जैसी भावनाएं उत्पन्न होती है। धर्म एक ऐसी वैश्विक चेतना है जो प्राणी को स्व से स्वेत्तर संदर्भों में जोड़ती है। धर्म विभिन्न निर्देशों, निषेधों, आज्ञाओं और उपदेशों के माध्यम से समाज, संप्रदाय, परिवार आदि में मनुष्य के आचरण तथा क्रियाकलाप का नियंत्रण करता है।

धार्मिक दृष्टि में गतिशील समय के अनुरूप परिवर्तन होता रहता है। इसके संदर्भ में जो चेतना वैदिक काल या वैदिकोत्तर काल में पाई जाती है वह आज निश्चित रूप से नहीं है। युगदृष्टि के बदलने के कारण से धर्म में व्याप्त रुढियों एवं आडंबरों का खंडन एवं विरोध हुआ है। धार्मिक स्वरूप युगानुरूप बदलता है। विश्व में कई प्रकार के धर्म हैं। जब कोई भी धर्म में जड़ता, रूढ़ियाँ, प्रगति विरोधी एवं सामाजिक आवश्यकताओं के विपरीत प्रवृत्तियाँ पनपने लगती है तब महान विचारक एवं दृष्टा उसमें परिष्कार, संशोधन करके उसे युगानुरूप बनाते हैं। स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद जैसे महान व्यक्तियों ने जिस धार्मिक चेतना को विकसित किया वह जनोचित

था। इनके अटूट प्रयास से ही तत्कालीन भारत में धार्मिक चेतना का विकास हुआ। अतः यह कह सकते हैं कि दोनों का अटूट संबंध है।

समाज के विभिन्न हिस्सों में कई प्रकार की दुखद स्थितियां दिखाई पड़ती है। इन सारी विकृतियों का उल्लेख हम वर्तमान हिंदी कविता में देख सकते हैं। इस विसंगत समय में धर्म की परिभाषा पूर्ण रूप से बदल गई है। आज धर्म की विश्वव्यापक संकल्पना भी परिणत हो चुका है। हमारा समाज जितनी तेजी से शिक्षित एवं विकसित हो रहा है उतनी तेजी से अंधविश्वास,बाह्याडंबर, धर्मांधता जैसी प्रवृत्तियों का शिकार हो रहा है। इस प्रकार की समस्या ने पूरे भारतवर्ष को ग्रसित कर लिया है। आज समाज में विभिन्न प्रकार के धार्मिक संप्रदाय विकसित हो रहे हैं। इसप्रकार आज प्रत्येक आदमी के साथ धर्म का रिश्ता जुड़ा हुआ है। इससे लगता है कि वर्तमान समय में धर्म एक मुख्य घटक है। आज देश के अनेक हिस्सों में धर्म का प्रभाव स्पष्ट नजर आता है। यह देश की अधिकांश जनता के साथ चुंबक की तरह चिपक गया है। इस प्रकार आज धर्म एक प्रबल सत्ता के रूप में उपस्थित है। धार्मिक महत्ता को प्रस्तुत करते हुए डॉ. विमल शंकर नागर कहते हैं-"भारतीय ग्रामीण समाज में धर्म का स्थान उच्च एवं अहम है। आधुनिक आविष्कारों एवं साधनों के सामीप्य के अभाव एवं प्राकृतिक साधनों पर निर्भर रहने के कारण धर्म उनके जीवन एवं ज्ञान की संचालक शक्ति बन जाता है।"[18] इस कथन से हम यह अंदाजा लगा सकते हैं कि धर्म समाज का अनिवार्य तत्व बन गया है।

संप्रति धर्म का स्वच्छ एवं परोपकारी स्वरूप दृष्टिगत नहीं होता है। आज अधिकतर लोग उपजीविका हेतु धर्म को स्वीकार कर रहे हैं। धन, पैसा, ऐशो-आराम, समाज में इज्जत प्राप्ति के लिए धर्म को अपनाया जा रहा है। जिसके फलस्वरूप धर्म का स्वच्छ स्वरूप नष्ट हुआ है। धर्म के इस विकृत स्वरूप ने समकालीन परिवेश को अधिक मात्रा में असर किया है। जिसके चलते आज आदमी कदम-कदम पर धर्म के विकृतियों का शिकार होता जा रहा है। समकालीन कविता इसी प्रकार की धार्मिक मान्यताओं के साथ ही रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का प्रतिरोध करती हुई दिखाई पड़ती है। युगीन मान्यताओं, परिस्थितियों, परंपराओं एवं प्रवृत्तियों का अंधानुकरण वैज्ञानिक युग में

न तो संभव है और न समीचीन। यही कारण है कि व्यक्ति विखर रहा है और शिथिल स्थिति में है। इसी के परिणाम स्वरूप मानव अपने संस्कारों की और जागरूक एवं सचेत नहीं है। जोशी की रचनाएँ इस प्रकार की धार्मिक विसंगतियों को अंकित करती है। कवि की बेचैनी धर्म से पीड़ित व्यक्ति मन की बेचैनी है जो कविता में उभरकर आयी है। कवि ने मानवता की प्रमुख चिंतन के रूप में वर्तमान धार्मिक विकृतियों को प्रस्तुत किया है। इसी रूप में जोशी के काव्य में धार्मिक विसंगतियां दिखाई देती है।

4.2.1.सांप्रदायिक विद्वेष :

मानव और धर्म का संबंध प्राचीन काल से है। जब धर्म मानवता की उपेक्षा करता है तो वह किसी संप्रदाय का रूप धारण करता है। धर्म और संप्रदाय एक दूसरे से भिन्न है। संप्रदाय किसी विचार या कोई विशेष धार्मिक मत से आच्छादित होता है। कोई धर्म जब मानव धर्म को ठुकरा कर विशिष्ट विचार व मत का संवाहक होता है तो सांप्रदायिक दंगों का आविर्भाव होता है। सांप्रदायिकता का भयंकर रूप भारत के हर क्षेत्र में व्याप्त है। इस सांप्रदायिकता ने मानव अस्तित्व के साथ ही वर्तमान समय को भी प्रभावित किया है। वर्तमान समय से सम्बद्ध कवि की रचनाओं में इस प्रकार की सांप्रदायिकता का उल्लेख झलकता है। जोशी के कई काव्य में धार्मिक द्वन्द की उपस्थिति के साथ ही सांप्रदायिक कुत्सित सोच का तीव्र विरोध भी है। 'मेरठ 87', 'घबराहट', 'रफ़ीक मास्टर साहब और कागज के फूल' 'नफरत करो', 'पागल', 'जब तक मैं एक अपील लिखता हूं', 'सलीम और मैं और उनसठ का साल-2', जैसी कविताएं वर्तमान समय के सांप्रदायिक दंगों को स्पष्ट ढंग से व्यक्त करती है। 'पागल' शीर्षक की कविता इसका उदाहरण है-

"पंद्रह या सोलह बरस की उस लड़की के कपड़े

जगह-जगह से फटे हुए थे

वह एक पेड़ के नीचे खड़ी कभी रोने लगती

कभी हंसने लगती

पास ही दो-तीन गांववाले भी खड़े थे

आपस से कुछ बतियाते हुए

तभी दंगाइयों का एक गिरोह आया

और उनमें से एक जोर से चिल्लाया :

ए लड़की तू हिंदू है या मुसलमान?

लड़की बिना कुछ समझे सिर्फ देख रही थी

निर्विकार...!"[19]

उपर्युक्त काव्यांश में कवि ने एक ऐसी लड़की को कविता का विषय बनाया है जो मानसिक रूप से असंतुलित एवं बेसहारा होकर इधर-उधर भटक रही है। इस प्रकार की दयनीय स्थिति में भी दंगाइयों को उसके प्रति कोई संवेदना नहीं है। असंवेदनशील होते हुए दंगाइयों से हिंदू और मुसलमान हो जैसे सवाल पूछते रहते हैं। इस कविता से हम धार्मिक कट्टरपंथी के साथ-साथ मानवता में संवेदनशीलता जैसी गुण लुप्त होती दिखाई पड़ती है।

जातिवाद, संप्रदायवाद, क्षेत्रीयतावाद, प्रदेशवाद जैसी विचारधारा को राजेश जोशी की कविता विरोध करती दिखाई पड़ती है। यही कारण है कि भोपाल गैस कांड, पंजाब समस्या से जुड़े आतंकवाद और सन् 1987 में मेरठ के सांप्रदायिक दंगे तथा 6 दिसंबर 1992 की धर्मांधता की घटनाओं को जोशी जी ने अपनी रचना का केंद्र बनाया है। जैसे-

"गणित पढ़ानेवाले रफ़ीक मास्टर साहब

दंगाइयों द्वारा मार दिए गए बानवे के दंगों में

लेकिन लोहा बाजार की गली के कोने पर पहुंचते ही

अचानक आज भी ठिठक जाते हैं मेरे पाँव

मैंने झिझकते हुए एक दिन अपने दोस्तों को बताया

की लोहा बाजार के उस कोने के पास

मुझे अकसर कागज के रंगबिरंगे फूल दिखाई देते हैं

और कभी-कभी तो रफ़ीक मास्टर साहब भी

दोस्तों ने पूछा कौन रफ़ीक मास्टर साहब

वो जो बानवे के दंगों में मारे गए?....."[20]

बाबरी मस्जिद के विध्वंस के पश्चात् मुस्लिम, हिन्दू सांप्रदायिक दंगों के बीच 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसी सद्भावना रखने वाले शिक्षक व कलाकार रफीक मास्टर साहब की हत्या कर दी गई। रफीक मास्टर जैसे ही कई ऐसे कलाकार व शिक्षक जिहादी दंगों के शिकार हुए हैं जिसका उल्लेख जोशी जी ने अपनी कविताओं में किया है। इस प्रकार की हिंसक प्रवृत्तियों के परिणाम से कवि का अंतर्मन अत्यंत व्यथित है।

भारतीय इतिहास के पन्नों में सांप्रदायिकता के शिकार हुए कई ऐसे अनगिनत पात्र हैं जो जोशी जी की अंतरात्मा को झकझोरती है। इस कवि ने 'सलीम और मैं और उनसठ का साल' नामक दोनों कविताओं में उल्लेख किया है। इन दोनों कविताओं में हम देख सकते हैं कि कैसे साम्प्रदायिकता के कारण एक पक्का दोस्त सलीम और कवि के बीच दीवार खड़ी हो जाती है। कैसे एक दूसरे के बचाव में तत्पर दो दोस्त दो मजहबों में बंट गए। इस प्रकार की घटना के कारण प्रत्येक बार प्रश्न उभर कर आता है, क्या धर्म मानव से बढ़कर है? जैसे-

"भागे थे हम बेतहाशा

लूटती दुकानों, फूटती बोतलों, बरसते पत्थरों

और तेजाब के छींटों से बचते हुए,

लाँघते हुए खून के रेलों और चीखों को चीरते हुए

घास की गाँजियों से उठती लपटों के बाजू वाली

सँकरी-सी गली से निकलते हुए

बेसुध भागे थे अपन।

अपन आठवीं जमात में पढ़ते थे

उनसठ के साल में।

भागते हुए उस डर में कितने साथ-साथ थे अपन

अपने-अपने घरों की ओर मुड़ने तक"[21]

अपने-अपने घरों को मोड़ते समय राजेश जोशी दोनों के लिए अपना संबोधन देते हैं। अलग होते ही क्या ऐसी वजह हुई कि यह'अपन' 'तुम' और 'मैं' से होता हुआ 'सलीम' और 'कवि' में परिवर्तित हो गया। धर्म के दो छोर दोनों को फिर नहीं मिला सके। जैसे-

"हम एक ही दरवाजे से आए थे अंदर तकरीबन साथ-साथ

उसी बेंच पर बैठे थे लेकिन साथ-साथ नहीं

तुम एक छोर पर थे रशीद और इदरीस के साथ, और मैं था

दूसरे छोर पर फुलवानी के साथ।

इस तरह शुरू हुआ था एक नया दिन

इस तरह शुरू हुए थे नए दिन।

कहां थी वह चीड़ के पेड़ों की गंध

कहां था वह बूढ़े बूढ़ई का किस्सा

हमारी आँखों में वह क्या था-सलीम

हमारे चेहरों पर वह क्या था-सलीम

वह सन की सुतलियों-सा बटा हुआ

वह डर जैसा

घृणा जैसा

वह क्या था?"[22]

यह कविता हमारे मानवीय भावनाओं को झकझोरती हुई मानव के सामने अस्तित्व की भयानक संकट उपस्थित करती है। कवि के एक दोस्त से संबंधित यह कविता सांप्रदायिकता और उसके परिणाम से भय पीड़ित जनता की भावबोध की कहानी बयान करती है। धर्मांधता जैसी विचार आज हमारे समाज के लिए बहुत बड़ा संकट के रूप में उपस्थित है। आज देश को ही नहीं संपूर्ण मानव जाति को इस संप्रदाय ने विचलित कर रखा है।

सांप्रदायिकता वर्तमान जीवन की भयंकर समस्या है। आजादी के पूर्व अंग्रेजों द्वारा जिस सांप्रदायिक घोड़े को दौड़ाया गया था आजादी के बाद उसकी गति और तेज हो गई। फरक इतना है कि आज इस कार्य को भारतवासी ही अंजाम दे रहे है।'मेरठ 87','दिल्ली 88' इसी सांप्रदायिक दंगों का प्रतिफल है। आज देश के हरएक व्यक्ति इस विद्वेष की विभीषिका से बाहर आकर सुखी जीवन की कामना करता है किन्तु व्यवस्था के इस क्रूर खेल में फस गया है। जैसे-

"जब जब किसी स्टेशन पर रूकती है रेलगाड़ी

खिड़की से दूर बैठा बुढ़ा पूछता है

खिड़की के पास बैठ बैठे लड़के से

"कौन सा स्टेशन है भैया?"

हर स्टेशन पर पूछता है बूढ़ा

"कौन सा स्टेशन है भैया?"

हर स्टेशन पर बाहर झाँकता है लड़का

पढ़ता है बोर्ड और कहता है

मेरठ

मेरठ

मेरठ मेरठ"[23]

कवि ने इस कविता में सांप्रदायिक दंगों के कारण सामान्य जनमानस में फैली हुई उस दहशत या भयावहता को एक बूढ़े आदमी के जरिए प्रस्तुत किया है। मेरठ में घटित वह सांप्रदायिक द्वन्द इतना भयावह था कि उसका ख्वाब वहां से गुजरने वाले प्रत्येक के दिलों-दिमाग में मौजूद था।

कवि अपने काव्य के जरिए धर्मांधता की कटु आलोचना तथा तीव्र शब्दों में भर्त्सना करते हैं। मजहबी झगड़ों से राष्ट्र को हानि हुई है। संप्रदायवाद से आज समाज दो वर्गों में बँट गया है। जिसके चलते कवि का बचपन का दोस्त 'सलीम' और 'कवि' भिन्न मार्ग की ओर अग्रसर हुए। इसीकारण हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई के पारस्परिक सद्भाव की भावना को आघात पहुंचा है तथा समाज में विद्वेष की भावना घर कर गई है। इसी के फलस्वरूप देश के विभिन्न हिस्सों में आतंकवादी हमला, नरसंहार, अराजकता, सांप्रदायिकता, जैसे कांड हो रहे हैं। इस प्रकार धर्म और संप्रदाय के नाम पर समाज में कई प्रकार के अन्याय एवं अत्याचार हो रहे हैं सत्य, अहिंसा, परोपकार, इमानदारी, मैत्री, सहानुभूति, करुणा, दया, सहयोग, सद्भाव जैसे नैतिक मूल्य विचार में निरंतर ह्रास हो रहा है। वर्तमान समय में सांप्रदायिकता ने समाज में अपना शिकंजा इस तरह से कस लिया है कि कवि जब तक धर्मांधता के विरोध में अपनी आवाज उठाते हैं तब तक सब नष्ट हो जाता है-

"जब तक मैं एक अपील लिखता हूं

आग लग चुकी होती है सारे शहर में

हिज्जे ठीक करता हूं जब तक अपील के

कर्फ्यू का ऐलान करती घूमने लगती है गाड़ी

अपील छपने जाती है जब तक प्रेस में

दुकानें जल चुकी होती हैं

मारे जा चुके होते हैं लोग

छपकर जब तक आती है अपील

अपील की जरूरत खत्म हो चुकी होती है!"[24]

आधुनिक समय में घटनाओं की इतनी तीव्रता से घटित होना कवि को बेचैनी पैदा करती है। कवि के अंतर्मन की छटपटाहट इस कविता में दृष्टिगत होती है। कवि के मानसिक बेचैनी ही शायद एक वृहद समाज के सामूहिक बेचैनी है। इस प्रकार राजेश जोशी ने समाज में घट रहे सांप्रदायिक दंगों को अपने काव्य के जरिए पाठक वर्ग को बताने का प्रयास किया है। समाज में इस प्रकार की नरसंहार समाप्त होना चाहिए और मानव समाज में मानवता को प्रमुख स्थान देना चाहिए जैसी मानवतावादी अवधारणा भी इनकी कविताओं का मुख्य विषय रही है।

4.2.2. मानवतावादी दृष्टिकोण :

मानवतावादी दृष्टि में व्यापक चिंतनात्मकता रहती है। मनुष्य को मनुष्यता की दृष्टि से देखना ही मानवतावाद है। वस्तुतः मानव विधाता की सर्वोत्तम सृष्टि है। मानवता को केंद्र में रखकर लिखी गई साहित्य ही वास्तव में साहित्य कहलाता है। मानव के सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय, यश-अपयश आदि का विवेचन, विश्लेषण ही साहित्य का परम ध्येय है। मानवतावाद क्या है इस विषय को और स्पष्ट एवं सरल रूप में समझने के लिए डॉ. सुरेश चंद्र गुप्त का यह कथन उल्लेखनीय है- "व्यक्तिगत स्वातंत्रता, समता, स्वार्थ का अभाव, वसुधैव कुटुंबकम की कामना, नर

में नारायण का बोध आदि मानवतावाद की प्रमुख विशेषताएं हैं।"[25] अतः यह कह सकते हैं कि जिस समाज में सभी मनुष्य को समानता की दृष्टि से देखा जाए वही मानवतावाद है।

वर्तमान विविध तरह की विसंगतियां समाज में चारों ओर मौजूद है। राजनैतिक और सामाजिक मूल्य परिवर्तन से समाज में सांप्रदायिक द्वंद्व, धर्मांधता जैसी कुत्सित प्रवृत्तियाँ मौजूद है। मुस्लिम, हिंदू, सिख, ईसाई आपस में भाई-भाई' है जैसी विचारधारा आज एक नारा बनकर ही रह गई है। इसी कारण मानवीय दृष्टिकोण में भी संकीर्णता का भाव उपस्थित है। इस परिवेश को देखते हुए कोई आदमी जीने की उम्मीद नहीं करेगा। धर्म के कुछ ठेकेदारों ने धर्म पर आधिपत्य स्थापित करके धर्म को अपनी तरह से लचीला बना कर उसका मनमाना उपयोग करने लगा है और निरंतर धर्म के भक्तों को लूटते रहे हैं। इस प्रकार धर्म से पीड़ित आदमी के चेहरे पर उदासी की छाया नजर आती है। इसी कारण व्यापक मानवतावादी दृष्टि आज के परिवेश की मांग है। संवेदनशील कवि के लिए भय, आतंक,असुरक्षा, अराजकता के वातावरण में सांस ले रहे साधारण जन के शोषित रूप को अनदेखा कर पाना संभव नहीं है। राजेश जोशी मानवीय संवेदना के प्रमुख कवि है। उनकी कविताओं में मानवीय बोध के अंतर्गत मनुष्य के सभी सुख-दुख उसकी चिंता संघर्षों का उल्लेख प्राप्त होता है। मानव एवं मानवता के प्रति प्रतिबद्ध कवि राजेश जोशी कहते हैं प्रतिबद्धता एक आंतरिक मामला है मेरे लिए। हम सभी मनुष्यों के लिए एक बेहतर जीवन चाहते हैं। एक बेहतर समाज चाहते हैं। हम इस दुनिया को ज्यादा मानवीय बनते हुए देखना चाहते हैं। इस प्रकार कवि मानवतावादी दृष्टि को विकसित करने में प्रतिबद्ध दिखते हैं।

आज का समय इतना विसंगत, बर्बर एवं अराजक है कि हर तरफ अमानवीय प्रवृत्तियाँ जागृत हो रही है। ऐसे में कवि बर्बरता को खारिज करते हुए मानवता को ऊपर उठाते हुए नजर आ रहा है. इसी क्रम में उनकी 'बर्बर सिर्फ बर्बर थे' शीर्षक कविता को एक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। जिसमें कवि ने मनुष्य के लिए मनुष्यता को प्रमुख माना है-

"बर्बर सिर्फ बर्बर थे

उनके पास किसी धर्म की कोई वजह नहीं थी

नहीं थे उनके पास दुख या पश्चत्ताप जैसे शब्द

बर्बर सिर्फ बर्बर थे

हम उन्हें कई युग पीछे छोड़ आए!"[26]

कवि उस समुदाय के विपक्ष में खड़े रहते हैं जिसने समाज में बर्बरता को पुष्ट किया और द्वेष की भावना को मजबूत बनाया। आज समाज में मानवीय संवेदना विलुप्त प्रजातियों के रूप में उपस्थित है। इस स्थिति में कवि आम आदमी के सुख-दुख उद्घाटित करते हैं। आज जिस प्रकार समाज एवं धर्म में उच्च वर्गों का बोलबाला है जिसमें आम मनुष्य के लिए कोई जगह नहीं है। जिन लोगों को इत्यादि इस नाम से अलंकृत किया जाता है कवि उन तमाम मनुष्य को अपनी कविता में शामिल करते हैं। कवि ने 'इत्यादि', 'पांव की नस', 'संग्रहालय', 'सड़क पर चलते हुए', 'सहायक क्रिया', 'चलना' जैसी कविताओं में सामान्य जन के प्रति मानवीय संवेदना प्रकट किया है। उदाहरण के रूप में कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं -

"वहां बहुत सारी चीजें थी करीने से सजी हुई

अचकनें थीं, पगड़ियाँ थीं, तरह-तरह के जूते और हुक्के थे

लेकिन उन दर्जियों, रंगरेजों, मोचियों और

हुक्का भरनेवालों का कोई जिक्र नहीं था....."[27]

इस प्रकार कवि उन चीजों को अपने काव्य में व्यक्त करते है जो दिखने में सामान्य दिखते हैं लेकिन उनकी भूमिका समाज में महत्त्वपूर्ण रहती है।

वर्तमान समय की बर्बरता को देखते हुए कवि खुद को एवं मानव समाज को असुरक्षित महसूस करते हैं। उन्हें लगता है कि आज मानव का अस्तित्व खतरे में है। वे एक मानवरहित दुनिया की कल्पना करते हैं जो आज के भयानक समय की सच्चाई है-

"कभी भी खत्म हो सकती है या दुनिया

खत्म हो सकता है किसी भी पल

सारा जीवन!

खत्म हो जाएगा जब सारा जीवन

तो खत्म हो जाएगा सारा शोर

खत्म हो जाएंगी सारी तकलीफें सारे दुख

दुनिया में होगा सिर्फ भयानक सन्नाटा

सन्नाटे में बोलेंगे झींगुर

तो कितना डरावना लगेगा सारा दृश्य!"[28]

इस प्रकार कवि अपनी कल्पना के माध्यम से तत्कालीन समय के यथार्थ को दर्शाते हैं। मानव विरोधी अराजक तत्वों से कवि मन बेचैन एवं अशांत है जिसके कारण वे किसी दूसरी ग्रह पर जाकर बसने की बात करते हैं –

"ऊपर किसी ग्रह पर बैठकर

ठेंगा दिखाऊंगा सारे दुष्टों को

कर डाले कर डालो जैसे करना है नष्ट

इस दुनिया को"[29]

राजेश जोशी मानवीय संवेदना को हमेशा अपने पास रखते हैं। वर्तमान समय में मानव अस्तित्व की बात त्रासद स्थिति में उपस्थित है। वर्तमान की नई प्रवृत्तियों, राजनीतिक तत्वों, औद्योगीकरण आदि ने सामान्य मानव जीवन को नुकसान पहुंचाया है। जोशी की कविता मानवीय संवेदना का कोश है। इस बात की पुष्टि के लिए 'कवि का काम' जैसी कविता उद्धृत है-

"बेजुबान लोगों के दुख और गुस्से के लिए ढूंढ़ने पड़ते हैं

कवि को सही-सही और उतने ही ताप से भरे शब्द

और चुप के लिए ऐसे शब्द को ढूंढ़ निकालना

कि शब्द में लिखे जाने के बाद भी वह चुप ही लगे

इसके लिए बहुत महीन हुनर की जरूरत होती है

और यह सिर्फ एक कवि के ही बस का काम है"[30]

इस कविता में हमें यह दिखाई देता है कि एक कवि मनुष्य से लेकर संपूर्ण प्रकृति तक की मनोभावों को अपनी कविताओं में प्रकट करता है। इनके काव्य में उदात्त मानव भाव की प्रस्तुति है। कवि की व्यापक काव्य चिंतनों में मानवतावादी दृष्टि विशेष महत्त्व रखता है। वर्तमान समाज की विभीषिका के प्रति कवि का रोष प्रकट हुआ है। मानव का सबसे बड़ा धर्म स्नेह और संवेदना है।

"पानी पियो तो शुक्रिया अदा करो बादलों का

नदियों तालाबों और समुद्रों का

शुक्रिया अदा करो समुंदरों का

समुंद्रों का पानी पीने के काम न आये तो भी!

पानी पियो तो सोचो

काटी तो नहीं तुमने दूसरों की नहरें

किसी की प्यास के रास्ते में तुम यजीद तो नहीं?"[31]

इनकी कविताओं में बिजली सुधारने वाले, लेबर कॉलोनी के बच्चे, बंजारे, नट, भीख मांगनेवाले बच्चे, प्लंबर, आदिवासी लड़की बिंदा, हरिया, लल्ला, बेड़ी, किशनी जैसी कितने चरित्र शामिल हैं। आबादी की सबसे निचले स्तरों पर जीवन यापन करने वालों से कवि का घनिष्ठ

संबंध एवं व्यापक संवेदना है। कवि समाज में मौजूद हर व्यक्ति को समान रूप में देखते हैं। 'मैं झुकता हूं' कविता में कवि का महीन हुनर झलकता है। इस कविता में कवि ने आज के समय के चापलूसों पर कड़ा व्यंग्य किया है।

आज समाज व्यवस्था और शासन व्यवस्था का निर्माण इस प्रकार से हो रहा है जो मनुष्य के उपयोगी नहीं है। व्यवस्था संबंधी आम आदमी की आवाज मात्र एक चीख बन कर रह जाती है। सर्वत्र संशय, भय, आतंक, अव्यवस्था, असंतोष, निराशा, घुटन आदि होने के कारण समाज का ढांचा चरमरा गया है। विसंगति, विवशता जैसी विषम परिस्थिति के बीच जीता हुआ व्यक्ति स्वास्थ्य संबंधों की तलाश में है, मानवता की खोज में है, सामाजिक व्यवस्थापन में है तथा सन्नाटा तोड़ने की प्रक्रिया में लगा हुआ है। इस प्रकार की परिस्थिति में भी कवि अपने काव्य के माध्यम से मानवतावाद दृष्टि को प्रकट करते हैं। जैसे-

राजेश जोशी अपने काव्य में मानवतावादी दृष्टि को हमेशा प्रखर रूप में उद्घाटित करते हैं। उपर्युक्त कविता में कवि ने मानव के प्रमुख धर्म सच्चाई को अंगीकार किया है। मानव धर्म किसी सीमित क्षेत्र, व्यक्ति अथवा समुदाय तक ही नहीं है यह विश्व स्तर पर व्यापक है। मानवतावादी दृष्टि से ही छोटे-बड़े का भेदभाव की खाई समाप्त हो सकती है।

राजेश जोशी मानवीय दृष्टि के वर्णन के साथ ही समाज में फैल रही अमानवीय स्थिति के प्रतिरोध में आक्रोष प्रकट किया है। 'मारे जायेंगे', एक शैतान से मुलाकात' जैसी कई कविताएं हैं जो ऐसे खतरनाक समय की यथास्थिति का सृजन करती है। जो मनुष्य को उसकी मानवीय प्रवृत्ति से पृथक अमानवीय प्रवृत्तियों की ओर ले जाने का संकेत करता है। इससे हम समय में हो रहे बदलाव को भी देख सकते हैं। जोशी जी की ज्यादातर कविताएँ समाज में व्याप्त अमानवीय प्रवृत्तियों को पहचान करते हुए उसका चित्रण करती है। पहले के समय की तुलना में आज आक्रमकता या अराजकता बहुत बढ़ गया है जिसके चलते दुर्घटनाएं बढ़ रही है। घर से बाहर निकलना अब मनुष्य के लिए सुरक्षित नहीं रह गया है-

"दुर्घटनाओं की खबरें पढ़ते हुए अकसर सोचता हूँ

कितनी कठिन जगह बनती जा रही है धरती

दिनों दिन एक पैदल चलते आदमी के लिए

पहली बार घर से बाहर जाते समय

मुझे हिदायतें देते हुए जितनी डरी होगी माँ

उससे कहीं ज्यादा आशंकाओं से भरे हुए हैं हम

अपने बच्चों को सड़क पर चलने का कायदा समझाते हुए

धरती पर पैदल चलता आदमी

अब एक सम्मानजनक दृश्य नहीं"[32]

इस प्रकार राजेश जोशी ने वर्तमान समाज में फैल रही तमाम अमानवीय स्थितियों के प्रति रोष प्रकट किया है। समाज में घट रही इस प्रकार की घटनाएं कवि मन को बेचैन करती है। "आज ऐसे समय जब बाजार की शक्तियां आक्रमक उपभोक्तावाद से लैस होकर गरीब और कमजोर दुनिया पर हावी हो रही हो। निर्धन और निरक्षर चारों ओर मारे जा रहे हो। दुनिया के राजनैतिक नक्शे पर फासिज्म फिर उभर रहा हो। हमारे आपसी सरोकार खतरे में हो। जनवादी शक्तियाँ क्षीण हो रही हो। हिंसक और असामाजिक व्यक्तिवाद सिर उठा रहा हो। इस सन्दर्भ में राजेश जोशी की रचनाओं की जरूरत हमें पहले से भी कहीं ज्यादा है।"[33]

अतः हम कह सकते हैं कि जोशी जी के काव्य कई एसे स्थितियों का प्रस्फुटन करती है जो वर्तमान समय में हमारे समाज में घट रही है। समाज में मानवता की खोज सम्प्रति जारी है और भविष्य में भी रहेगी क्योंकि सामाजिक विसंगतियां अब भी बढ़ रही है। मानव के प्रति कवि की दृष्टि हमेशा से उच्च रही है। उन्होंने अपनी विविध कविताओं के जरिये मानव को समाज में सबसे सर्वश्रेष्ठ रूप में प्रतिष्ठित करने के लिए लगातार प्रयास किया है। समाज में पल रहे सभी वर्गो के

मनुष्य को वे बराबरी के नजर से देखते हैं। गरीब, दीन एवं सामान्य जनमानस के प्रति दया की भावना उनकी कविताओं में देखी जा सकती है।

4.3. सांस्कृतिक पक्ष :

साहित्य एवं कला आदि के विभिन्न रूपों द्वारा समाज में संस्कृति विद्यमान रहती है। संस्कृति एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा मनुष्य समाज की अनेक विशेषताओं का अवलोकन कर सकता है। जिसमें समाज के रीति-रिवाज, कला, ज्ञान-विज्ञान, विश्वास के साथ-साथ व्यक्तिगत प्रवृत्तियाँ या विचार आदि विद्यमान रहता है। समाज के माध्यम से ही संस्कृति की रक्षा होती है, जो मानव एवं राष्ट्र से संबंधित है। समाज से पृथक रहता हुआ मनुष्य भौतिक और सांस्कृतिक भूमि में उन्नति नहीं कर सकता। युगीन परिस्थिति में जैसे बदलाव दिखाई देता है उसी समय संस्कृति में भी बदलाव दिखाई देता है। संस्कृति सामाजिक चेतना के साथ अंधविश्वास, रूढ़ियाँ जैसी प्रथा को परित्याग करते हुए युगानुकूल प्रवृत्तियाँ अंगीकार करती है। संस्कृति सामूहिक होता है न की व्यक्तिगत। यह मानव समाज को कुरीतियों से छुटकारा दिलाती है। भारत कई संस्कृतियों का देश है। भारत में हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध, इस्लाम, ईसाई धर्म का प्रभाव रहा है। इसी प्रकार भारत की संस्कृति अनेक जातियों, धर्मों एवं संस्कृतियों का समूह है।

साहित्यिक कृतियों के अवलोकन और अध्ययन से व्यक्ति किसी भी राष्ट्र और देश की संस्कृति से अवगत हो सकता है। संस्कृति के विभिन्न अंग जैसे धर्म, दर्शन और कला की भांति साहित्य भी एक है। साहित्य में संस्कृति के सभी अंग पूर्णरूप से व्यक्त होते हैं। इस रूप में देखा जाए तो साहित्य संस्कृति के अनुसार विकसित होता है। इस समय समाज के मूल्यों में परिवर्तन के साथ-साथ मानव जीवन का औचित्य भी बदल रहा है। वर्तमान समय में समाज से नैतिकता, त्याग, सत्भावना जैसी प्रवृत्तियाँ विलुप्त हो रही है। समाज में बढ़ती कृत्रिमता ने संस्कृति के मूल्य को ही बदल दिया है। रचनाकार इस परिवर्तन को अपने काव्य के जरिए समाज एवं देश के सम्मुख दर्शाता है। जोशी जी भारतीय संस्कृति और जीवन के औचित्य और मूल्यों के प्रति जागरूक और चिंतित प्रतीत होते हैं। ऐसे बदलते सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति उनकी रचनाएँ सचेत और सतर्क हैं। वर्तमान

संदर्भ में भारतीय समाज और संस्कृति विकास के दौर में अपने नैतिक मूल्यों और संस्कारों से दूर होते दिख रहे हैं। इस प्रकार की परिवर्तन के कारण भारतीय समाज एवं जीवन में जो गलत प्रभाव पड़ रहा है, उसका वर्णन कवि ने अपनी कविताओं में किया है।

4.3.1. नैतिक मूल्यों में परिवर्तन :

नैतिक मूल्यों का महत्त्व सामाजिक जीवन में हमेशा से रहा है। नैतिकता के शून्य में व्यक्ति और समाज का विकास निराधार है। समाज में अनैतिक मनुष्य का कोई मूल्य नहीं है। समाज में निरंतर आधुनिकता एवं भौतिकता का बोलाबाला है। यही कारण है कि आज समाज नैतिकता से खाली होता जा रहा है। समाज में चल रही परंपरावादी नीतियां, रिश्ते-नाते, प्रेम, सौहार्द, सच्चाई आदि समाप्त हो चुके हैं। संप्रति नैतिक मूल्यों का स्थान लूटपाट, धोखेबाजी, जालसाजी, खून खराबा तथा शोषण ने ले लिया है। इस प्रकार जोशी ने अपनी कविता के माध्यम से बदलते हुए नैतिक और सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है। भारत वर्ष की 'वसुधैव कुटुंबकम' जैसी अवधारणाओं में आज बाजारीकरण, औद्योगिकीकरण ने अतिक्रमण कर लिया है, जिसके परिणाम स्वरूप मूल्य परिवर्तन हो रहा है। इस प्रकार के मूल्य परिवर्तन के कारण वर्तमान में गाँव शहरों में बदल रहे हैं, समाज में मानवीयता समाप्त हो रहा है, संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, बाल मजदूरी बढ़ रही है, गरीबी, महंगाई, भुखमरी जैसी समस्याएं चरम उत्कर्ष में है, नरसंहार, स्त्री हिंसा, वृद्धों की समस्याएं बढ़ रही है। इस प्रकार उपर्युक्त वर्णित सामाजिक मूल्य परिवर्तन का चित्रण जोशी की साहित्यिक रचनाओं में साफ़ नज़र आता है।

समाज के स्वरूप को बड़े जीवंत रूप में जोशी जी ने अपने काव्य में उद्घाटित किया है। साथ ही समाज में हो रहे बदलावों को दिखाने की कोशिश की है. जैसे-

"अजीब दृश्य था

कि उस उन्मुक्त दूधिया हंसी के पीछे

दूर तक एक सूखा खेत था

सांवले से कुछ ज्यादा गहरे थे उन बच्चों के चेहरे

और दूधिया से कुछ ज्यादा उजली थी

उनकी हंसी"[34]

यह कविता भारतीय नगरों में मानव जीवन के सूक्ष्मदर्शी रूप को संकेत करती है। जिससे उनकी दृष्टि की व्यापकता तथा सर्वेक्षण का उदहारण प्राप्त होता है। आधुनिक विकास के साथ सामाजिक संवेदना भी परिवर्तित हो रही है। "यह कैसी विडंबना है इंसान आकाश छू रहा है इंसानियत धरती पर दम तोड़ रही है।"[35] यह कथन वर्तमान समय सापेक्ष प्रतीत होता है। इस प्रकार की बदलती हुई सामाजिक मूल्य को प्रस्तुत निम्नलिखित पद्यांश में करते हैं-

"हर दिन लंबी होती सड़कों और बड़े होते शहरों में अब

कम होता जा रहा है चलन किसी को

लेने आने या छोड़ने जाने का

अब तो पूरी शिद्दत से कोई लड़ता भी नहीं

बहुत खामोशी से चलती है ठंडी कटुता की

दुधारीछुरी

उदासी बढ़ रही है कस्बों में और शहरों में उदासीनता"[36]

जोशी द्वारा रचित 'प्लेटफार्म' नामक कविता में मानवीय संवेदना में हो रहे बदलाव का वर्णन अवलोकित होता है। इस कविता में हम देख सकते हैं कि नगरों के विकास से आज कैसे मानव मानव के मध्य नैतिक मूल्य घट रहा है। ग्राम्य एवं नगरीय जीवन में एकाकीपन से आज मानव जीवन में उदासीनता और सन्नाटा फैल रही है। इस तरह सामाजिक प्रवृत्ति के अनुसार नैतिक मूल्य भी बदल रहे हैं। आधुनिक प्रगति के साथ हम हमारे समाज के बहुत सारे चीजों को पीछे छोड़ते आ रहे हैं। जैसे-

"दोस्त जब पूछते थे तो मैं अक्सर कहता था

मुझे चिट्ठी मत लिखना

परिंदों का पीछे करनेवाले का

कोई स्थाई पता नहीं होता

मुझे क्या खबर थी कि एक दिन ऐसा आएगा

जब चिट्ठी लिखने का चलन ही अतीत हो जाएगा"[37]

आज समाज से चिट्ठी पत्र जैसे कार्य व्यवहार को ई-मेल, फेसबुक ने अतिक्रमण कर लिया है। कवि इस कविता में एक विषय को लेकर अन्य परिवर्तित मूल्यों के प्रति ध्यानाकृष्ट करते हैं।

आज सामाजिक जीवन एवं व्यक्तिगत जीवन में मायूसी एवं अवसाद बढ़ रहे हैं। संप्रति समाज में संयुक्त परिवार बिखर रहा है जिसके चलते वृद्धों की स्थिति दयनीय हो रही है। आज घर के बुर्जुगों को अपना जीवन व्यतीत करने के लिए वृद्ध आश्रम का आश्रय लेना पड़ रहा है। जिसकी अभिव्यक्ति राजेश जोशी 'रात किसी का घर नहीं' जैसी कविता में करते हैं-

"एक बूढ़ा मुझे अक्सर रास्ते में मिल जाता है

कहता है कि उसके लड़कों ने उसे घर से निकाल दिया है

कि उसने पिछले तीन दिन से कुछ नहीं खाया है

लड़कों के बारे में बताते हुए वह अकसर रुआँसा हो जाता है

और अपनी फटी हुई कमीज को उघाड़कर

मार के निशान दिखाने लगता है

कहता है उसने बचपन में भी अपने बच्चों पर

कभी हाथ नहीं उठाया

लेकिन उसके बच्चे उसे हर दिन पीटते हैं"[38]

इस कविता में कवि ने यह प्रस्तुत करने की कोशिश की है कि किस प्रकार आज हमारे समाज में पूंजीवादी व्यवस्था एवं औद्योगिकरण के कारण पारिवारिक संबंध टूट रहे हैं। भारतीय संस्कृति में संयुक्त परिवार को महत्व दिया जाता है। अकेलेपन की प्रवृत्तियों के कारण आज व्यक्ति अपना परिचय खो रहा है और अंधेरे में भटक रहा है। राजेश जोशी ने मानव जीवन के एकाकीपन को निम्न पंक्तियों में बारीकी से उद्घाटित किया है-

"हम हमेशा ही घर लौटने के रास्ते भूल जाते थे

घर के एकदम पास पहुँचकर मुड़ जाते थे

किसी अपरिचित गली में

अकेले होने से हमें डर लगता था

और लोगों के बीच अचानक ही हम अकेले हो जाते थे"[39]

भारत देश अपने सांस्कृतिक वैभव में समस्त विश्व में सर्वोपरि एवं अग्रगण्य है। इस कथन को झुठलाया नहीं जा सकता क्योंकि अतिथि देवो भव का उच्चारण करने वाले हमारे भारतीय समाज में जहां पत्थरों को पूजने तक की आस्था विद्यमान हो, जहां अपने से बड़े-बुजुर्गों का आशीर्वचन ईश्वर के वरदान स्वरुप मान्य हो, जहां परस्पर प्रेम,सदाचार, सौहार्द, एकता, अखंडता की पवित्र भावना,'वसुधैव कुटुंबकम' जैसे वृहत मानवीय दृष्टिकोण का उद्घोष करती हो। उस राष्ट्र की संस्कृति निश्चित रूप में महान है। फिर भी महान संस्कृति वाले समाज में भी वैश्वीकरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आधुनिक प्रवृत्तियों के कारण, वर्तमान समय में समाज में मूल्य एवं विश्वास कम हो रहे हैं।इस प्रकार के बदलते मूल्यों के प्रति कवि सजक है। अतः वे 'बचाना' जैसी कविता के माध्यम से संस्कारों को बचाने की कोशिश करते हैं-

"एक औरत हथेलियों की ओट में

दिए की काँपती लौ को बुझने से बचा रही है

एक बहुत बूढ़ी औरत कमजोर आवाज में गुनगुनाते हुए

अपनी छोटी बहू को अपनी माँ से सुना गीत

सुना रही है

एक बच्चा पानी में गिर पड़े चींटे को

एक हरी पत्ती पर उठाने की कोशिश कर रहा है

एक आदमी एलबम में अपने परिजनों के फोटो लगाते हुए

अपने बेटे को उसके दादा-दादी और नाना-नानी के

किस्से सुना रहा है"[40]

उपर्युक्त पंक्ति में बिम्बों के माध्यम से संस्कृति को बचाने की कोशिश लेखक ने की है। समाज से प्रेम, सदाचार, एकता, अखंडता, लोक परंपरा, मानवता, आपसी सौहार्द जैसी भावनाओं को बचाने का संकेत दिया गया है। इस प्रकार की नैतिक मूल्य और सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखना वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक है।

जोशी जी अपनी कविताओं के द्वारा आज भी समाज में कुछ नैतिक मूल्य एवं परम्परा बचा हुआ है इसका जिक्र करते हैं। बचे हुए नैतिक मूल्यों की ओर संकेत करते हुए वे 'कचौरी इंदौर की', 'सुब्हे बनारस' जैसी कविताओं की रचना करते हैं। यह 21वीं शताब्दी का समय है जिसमें बाजारवाद, भूमंडलीकरण जैसी प्रवृत्तियाँ मुखर है। इस प्रकार की समयावधि में भी हमें कुछ चीजें पुराने जमाने से जुड़ी हुई मिल जाती है। जैसे-

"अभी भी बहुत कुछ ऐसा था वहां

जो नहीं बदला था पुराना था जाना पहचाना था

बाजार के चेहरे को बहुत ज्यादा नहीं बदल पाया था नया बाजार

संकटमोचन की नई दुकानों पर पुराने स्वाद के लड्डू मिलते थे"[41]

इस प्रकार राजेश जोशी ने बदलते हुए नैतिक मूल्य को समाज में बचाए रखने की हिदायत दी है। सामाजिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन समयानुसार आवश्यक है परंतु परिवर्तन के साथ ही सांस्कृतिक निधि को बचाए रखना भी अनिवार्य है। राजेश जोशी भारतीयता को नष्ट करने वाले संस्कारों के प्रति रोष प्रकट करते हैं।

4.3.2. प्रकृति चित्रण :

जीवन और जगत को असर करने वाली प्रकृति एक महत्त्वपूर्ण शक्ति है। मानव और प्रकृति का संबंध आदिकाल से है। मनुष्य ने जब से आंखें खोली हैं तब से ही प्रकृति उसका सहचारी के रुप में साथ निभा रही है। प्रकृति के बिना मानव के पूर्ण विकास की कल्पना करना असंभव है। प्रकृति की महत्ता मानव जीवन में सदा बनी रहती है। इस प्रकार प्रकृति और मानव का संबंध अपरिहार्य है। इस विकास के दौड़ में शहरीकरण, औद्योगिकरण जैसी योजनाएं पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं। प्रकृति की अमूल्य संपत्तियां एक-एक करके गायब होती जा रही है। प्रदूषण से प्रकृति का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है तो उसी अनुपात में मानव जीवन भी नष्ट हो जाता है। वर्तमान समय में जल-वायु प्रदूषित होने का कारण रसायनिक पदार्थों का प्रयोग है जिसके चलते पृथ्वी पर तापमान दिन-प्रति-दिन बढ़ रहा है, बर्फ पिघल रहा है, समुद्र प्रदूषित हो रहा है, जैविक फसल नष्ट हो रहा है। आज मानव अपने व्यक्तिगत फायदे के लिए अत्यधिक मात्रा में पेड़ों को काट रहा है। विकास के नाम पर गांव को नगरों में तब्दील किया जा रहा है। पीने के लिए योग्य जल भी नहीं मिल रहा है। इस प्रकार वर्तमान समय में प्राकृतिक संपदा के साथ खेलवाड़ हो रहा है। राजेश जोशी अपने काव्य के जरिए से प्रकृति से संबंधित ऐसे ही ज्वलंत विषयों को प्रस्तुत करते हैं। वृक्ष लगातार काटे जाने से कवि चिंतित है। जैसे-

"यहां वृक्ष काटे जा रहे हैं लगातार!

अकाल या महामारी में जिस तरह लोग बाग छोड़ कर

चले जाते हैं अपने घर बार

छायाएँ छोड़ कर जा रही हैं अपनी जगह!"[42]

वृक्षों को निरंतर काटते जाने से पृथ्वी पर वृक्षों की दिनों दिन घट रही संख्या से आज पर्यावरण असंतुलन की भयावह स्थिति का सामना कर रहा है। इस विषय को लेकर कवि चिंतित दिखाई पड़ते हैं।

राजेश जोशी ने आज की भावशुन्यता और भौतिकवाद के उन्माद की प्रवृत्ति को अंदर तक जाकर वर्णन किया है। इस भौतिकवाद के कारण पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। वैश्वीकरण, निजीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण जैसी प्रवृत्तियों के कारण पर्यावरण के साथ-साथ पृथ्वी से अनेक प्रजातियां बड़ी संख्या में विलुप्त हो रही है। इस जातियों को देखकर कवि चिंतित होकर लिखते हैं-

"पेड़ों, पशु और परिंदों की न जाने कितनी प्रजातियां

विलुप्त हो गई न जाने कब

अब तो उनकी कोई स्मृति भी

बाकी नहीं"[43]

इस प्रकार तकनीकों के कारण पृथ्वी से वन्य जीव-जंतु, पशु-पक्षी, वनस्पतियां आदि निरंतर विलुप्त हो रहे हैं। समकालीन हिंदी कवियों ने इस विषय को लेकर अपनी संवेदना एवं चिंता व्यक्त की है। "स्वतंत्रता के पश्चात औद्योगिकीकरण और महानगरीय बोध के कारण न केवल अप्राकृतिक मूल्यों की स्थापना हुई वरन प्रकृति से पार्थक्य की स्थिति भी आ गयी। औद्योगिक सभ्यता में प्राकृतिक दोहन की परंपरा प्रारंभ हुई और सौंदर्यपरक दृष्टि से प्रकृति के अवलोकन की

प्रवृत्ति समाप्त हो गयी। इसका परिणाम यह निकला कि अकविता के दौर तक प्रकृति से जो राग-बोध था वह कविता में भी कम हो गया। न केवल मनुष्य ने प्रकृति की उपेक्षा की वरन साहित्य तक ने प्रकृति से कोई सरोकार नहीं रखा। ऐसे में जब मानवी-अस्मिता की खोज प्रारंभ हुई तो सबसे पहले रचनाकार का ध्यान उस प्रकृति की ओर गया, मनुष्य जिसका एक अंग है और जड़ता के कारण जिस सहजात संबंध को उसने भुला दिया है। वर्तमान समय की कविता प्रकृति के संदर्भ में राग बोध की कविता है और उस अकेले मनुष्य की असहाय स्थिति का चित्रण है, जिसमें वह प्रकृति से जुड़ाव के बिना अजनबी बना हुआ है।"[44] प्रकृति और मनुष्य का संबंध अति प्राचीन है, प्रकृति के समीपता में ही खुशहाल मानव जीवन की पूर्णता संभव है। यह जानने के बावजूद भी आज आधुनिक यांत्रिकता के कारण मनुष्य प्रकृति से रिश्ता तोड़ रहा है। उसका शत्रु भी बन रहा है। मानव के इस प्रकार की विशेषता के कारण ही राजेश जोशी कविता की पंक्तियों के माध्यम से जनसाधारण को संदेश देते हैं। जैसे-

"कम हो रहा है धरती में पानी

कम हो रहा है कुंओं में, नदियों में, तालों में पानी"[45]

इनकी कविता मानवीय सरोकार के काव्य है। मानव के अस्तित्व पर उठा कोई भी संकट उनकी कविताओं में उपस्थित हुई है। मनुष्य को स्वस्थ जीवन यापन के लिए शुद्ध हवा एवं स्वच्छ जल आवश्यक है, परंतु मनुष्य की करतूतों के कारण दोनों ही तत्व प्रदूषित हो रहे हैं। जल को मानव जीवन का एक महत्वपूर्ण घटक माना गया है। आज वही दुर्लभ हो रहा है। तालाब, नहर, झरने आज सूखते जा रहे हैं जिसके चलते जल की समस्या काफी बढ़ रही है। इस प्रकार के जल संबंधित चुनौतियों के प्रति कवि सजग एवं चिंतित है। जैसे-

"मैंने मिनरल वाटर की एक बोतल खरीदी और एक अखबार

और प्लेटफार्म पर लगी एक बेंच पर बैठ गया

तालाब के बीच एक जजीरा-सा था

जिस पर एक सूफी फकीर शाह अली शाह का तकिया था

और जहां हम अकसर ही नाव से जाया करते थे

तालाब उस जजीरे तक सूख चुका था

और दूर तक पपड़ाई हुई जमीन नजर आ रही थी चित्रण में

लोग पैदल चलकर जा रहे थे उस टापू तक

एक मेला-सा लगा था सूखे तालाब में

तले हुए पापड़ और हलुआबिकता था

नातिया कव्वाली गाई जा रही थीमजार के पास

अखबार में तफ्सील से बयान किया गया था सब कुछ"[46]

बदल रहे परिवेश में तालाबों के लगातार सूखे जाने की चिंता राजेश जोशी ने उपर्युक्त कविता में दर्शाया है। पर्यावरण को लेकर कवि जागरुक एवं सचेत नजर आते हैं। वर्तमान समय में रासायनिक चीजों का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जा रहा है जिसका असर पर्यावरण पर दिखाई देता है। जोशी जी अपनी रचनाओं में विकराल एवं भयावह समय की कल्पना करते हैं जिसमें तालाब ही नहीं पूरी नदी ही सुखती जा रही है। जैसे-

"पहले यह एक नदी का रास्ता था

पहले यहां शीरीं नाम की एक बरसाती नदी बहती थी

पानी के शोर से भरा रहता था सारा इलाका

अब इस रास्ते से कोई नदी नहीं गुजरती

अब पत्थरों पर कहीं कोई और पानी के निशान नहीं

तो ढूंढ भी नहीं पाएगा कि कहां किस रास्ते गुजरती थी नदी

कोई चिड़िया चहककर बताना भी चाहेगी कभी

तो कौन समझेगा उसकी भाषा

बचा रह गया कोई पेड़ चुपचाप एक पत्ता गिराएगा

उसकी स्मृति में बचे हुए पानी के स्वप्न में"[47]

कवि ने इस प्रकार अपने समय में हो रहे प्राकृतिक बदलाव को कविता के जरिए दर्शाया है। उनके काव्य में प्रकृति मनुष्य का महत्त्वपूर्ण अंग बन कर आई है, इसके अतिरिक्त प्रकृति के प्रति चिंतन भी मौजूद है। इस बात को वे अपनी कविता के माध्यम से बताना चाहते हैं कि प्रकृति का विनाश अर्थात मानव अस्तित्व का विनाश है। अतः प्राकृतिक संपदा का संरक्षण करना मानव का धर्म है।

सार रूप में यह कहा जा सकता है कि जोशी जी की कविताओं में युगबोध के राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक पहलुओं के विभिन्न आयामों का सटीक वर्णन किया गया है। उनकी कविताओं के अध्ययन से समाज और देश की राजनीतिक परिस्थितियों के बारे में जाना जा सकता है। वर्तमान समय के हूबहू घिनौनी राजनीति को इन्होंने अपने काव्य के जरिए दर्शाया है। आज के जन प्रतिनिधि समाज में आम जनता को झूठा प्रलोभन देकर कैसे राज कर रहे इसका भी उदाहरण इनके काव्य में अवलोकित होता है। समाज में व्याप्त सभी प्रकार की धार्मिक विसंगतियाँ जोशी की रचना में विद्यमान हैं। इनकी कविताओं से समाज में शांति, आनंद, मानवतावादी दृष्टि का विकास हुआ है। आज के समय में मानवीय दृष्टिकोण में परिवर्तन के फलस्वरूप समाज में फैल रही अमानवीय स्थिति के प्रतिरोध में इनकी कविताएँ आक्रोष प्रकट किया है। आज धर्म के नाम पर साम्प्रदायिकता विद्वेष की जो भावना समाज में पनप रही है उसे इन्होंने अपनी तमाम कविताओं से निवारण करने का प्रयास किया है। देश में जातिवाद, संप्रदायवाद, क्षेत्रीयतावाद, प्रदेशवाद जैसी विचारधारा को इन्होंने अपनी कविताओं से विरोध किया है। धर्म के चलते समाज में आज नैतिक

मूल्यों के परिवर्तन से जो अराजकता फ़ैल रही हैं इसे इनकी कविताएँ बचाए रखने की हिदायत देती हैं। प्रकृति के व्यापक चित्रण भी इनकी कविताओं में उपलब्ध होता है। तालाब, नहर, झरने आज सूखते जा रहे हैं जिसके चलते जल की समस्या काफी बढ़ रही है। इस प्रकार के जल संबंधित चुनौतियों के प्रति राजेश जोशी सजग एवं चिंतित है एवं अपनी विविध कविताओं से इसका निवारण के लिए हमें सजग करते हैं। हमारे प्राकृतिक संपदा का संरक्षण के लिए भी वे सजग नजर आते हैं।

सन्दर्भ :

1. सोनटक्के,डॉ.माधव.*समकालीन नाट्य विवेचन*.पृ.94
2. तिवारी,अनंतकीर्ति.*समकालीन प्रतिनिधि कवि*.पृ.9
3. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.24
4. वही,पृ.26
5. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.66-67
6. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.38
7. वही,39-40
8. वही,पृ.41
9. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.87-88
10. वही,पृ.76
11. वही,76-77
12. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.फ्लेप
13. वही,पृ.76
14. वही,पृ.76
15. सोनटक्के,डॉ.माधव.*समकालीन नाट्य विवेचन*.पृ.94

16. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.91

17. वही,पृ.91

18. नागर,डॉ.विमल शंकर.*हिंदी में आँचलिक उपन्यास : सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ*.पृ.30

19. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.68

20. वही,पृ.66-67

21. जोशी,राजेश.*प्रतिनिधि कविताएँ*.पृ.26-27

22. वही,पृ.28-29

23. जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हँसी*.पृ.41

24. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.95

25. उपाध्याय,डॉ.पशुपति नाथ.*समकालीन हिंदी कविता दशा और दिशा*.पृ.63

26. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.96

27. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.61

28. जोशी,राजेश.*धूपघड़ी*.(संयुक्त संग्रह).पृ.118

29. वही,पृ.112

30. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.108

31. जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हंसी*.पृ.31

32. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.35

33. सेंगर,डॉ.निशा.*हिंदी की वर्तमान काव्य परम्परा में राजेश जोशी की काव्य-सृष्टि का अध्ययन*.पृ.79

34. जोशी,*राजेश.चाँद की वर्तनी*.पृ.22

35. कथूरिया,*सुंदरलाल.साहित्य आधुनिक अत्याधुनिक*.पृ. 96

36. जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हँसी*.पृ.17-18

37. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.11-12

38. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.13

39. वही,पृ.12

40. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.66

41. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.23

42. जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हँसी*.पृ.77

43. जोश,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.17

44. कल्याणचन्द्र,*समकालीन कवि और काव्य*.पृ.82

45. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.115

46. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.26-27

47. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.116-117

पंचम अध्याय

राजेश जोशी की कविताओं में शिल्प-विधान

कविता जीवन की अनुभूति और कल्पना के मिश्रण से मानसिक आकार लेती है पर रचनाकार की रचनाधर्मिता की समझ तब तक पाठक को हो नहीं पाती जब तक वह मानसिक अभिव्यक्ति बाह्य स्तर पर अभिव्यक्त नहीं होती है। इसलिए मन में निर्मित काव्य की मानसिक रूपाकृति को रचनाकार शब्दबद्ध करता है। इस शब्द रूप देने की प्रक्रिया में वह कई उपादानों को ग्रहण करता है जैसे भाषा, छंद, अलंकार, प्रतीक, बिम्ब आदि। भाव, विचार और शिल्प के सभी उपादानों का समन्वित रूप ही कविता है। कविता की गुणवत्ता भाव और विचार के श्रेष्ठ होने से ही नहीं होता बल्कि शिल्प और शैली पक्ष भी उसमें उतने ही मजबूत होने आवश्यक हैं। वर्ना किसी एक पक्ष का शिथिल हो जाने की स्थिति में कविता प्रभावी नहीं रह जाती है।

अत: शिल्प का संबंध रचना के अंतरवर्ती तत्वों के परस्पर संयोजन चयन तथा उनकी क्रमबद्धता से है। शिल्प के उपादानों द्वारा कविता का ढाँचा तैयार किया जाता है। अंग्रेजी के 'क्राफ्ट' (craft) शब्द का हिंदी पर्याय 'शिल्प' है। शिल्प से तात्पर्य किसी वस्तु के निर्माण की विधि से है। यानी हम किसी वस्तु की रचना, बनाना आदि को शिल्प कह सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि रचना निर्माण की पद्धति ही शिल्प है।

कवि मन की संवेदना, अनुभूति जो अमूर्त होती है और जो अभिव्यक्ति चाहती है, वह अमूर्त अनुभूति मूर्त रूप में शिल्प द्वारा ही प्रदान की जा सकती है। शिल्प में प्रतिभा की अधिक जरुरत रहती है। साहित्यिक शिल्प में प्रतिभा एवं कल्पना का अपेक्षाकृत अधिक महत्त्व है। कवि जोशी जी की रचना में शिल्प की उपस्थिति प्रबल है। इनकी कविताएँ पाठकों के बीच संप्रेषित होती है और इसका एक मुख्य कारण इनका शिल्प विधान है। उनकी कविताओं के शिल्प पक्ष का विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर किया जा सकता है:

5.1. भाषागत वैशिष्ट्य :

भाषा काव्य का मूल उपादान है। साहित्य में शिल्प को मूर्त रूप देने वाला तत्व भाषा है। भाषा के द्वारा ही हम किसी भी कवि की कविताओं की सहजता-कठिनता को समझ सकते हैं।

काव्य भाषा विज्ञान और दर्शन की भांति तथ्यात्मक या वैचारिक नहीं होती है। कवि भाषा के वाहन पर सवार होकर अपनी भावनाएं पाठक तक पहुंचाता है। मनुष्य जीवन भाषा के द्वारा संचालित है। रोजमर्रा की अभिव्यक्तियों में भाषा माध्यम बनती है। जीवन की धारणा और दृष्टिकोण में परिवर्तन होने पर भाषा व्यवहार में भी परिवर्तन होता है।

भाषा जीवन और साहित्य के बीच की कड़ी है। भाषा सुंदर, सशक्त और प्रांजल होगी तो उसके द्वारा प्रकट होने वाले भाव भी सुंदर और प्रभावशाली होंगे। कवि राजेश जोशी ने अपने भावों को श्रोताओं तक संप्रेषित करने में भाषा का एक सुंदर रूप उद्घाटित किया है। कवि ने अपने काव्य में प्रभावी मधुर एवं सरल भाषा का चयन किया है। उनके काव्य में मुहावरे-कहावतें, लोकोक्तियाँ, शब्द-समूह, भावानुरूप चिह्नों का प्रयोग, साधारण बोल-चाल के शब्द, प्रतीकात्मक, बिम्बात्मक, काल्पनिक, नाटकीय, संवादात्मक भाषा आदि का प्रयोग अवलोकित होता है।

इनकी भाषा में निहित सहजता और सरलता को इनकी काव्य पंक्तियों से समझ सकते हैं। इनकी भाषा में एक संवाद का प्रवाह है। गद्य की भाषा के करीब इनकी भाषा है परन्तु अपने भावों को वहन करने की अपूर्व क्षमता इनमें व्याप्त है। जैसे-

"चौथे की बेटी लगभग घर की देहरी तक आ चुकी थी

तीनों दोस्त बीच बीच में चौथे की तरफ देखते थे

चौथा तीनों से अपनी आँख चुरा रहा था

तीनों में जो सबसे ज्यादा अनुभवी था कह रहा था

की अभी तो चौथा आपने कू बहुत सँभाले हुए है

लेकिन बिदा के बाद इसे सँभालना होगा"[1]

कवि राजेश जोशी की सरल सहज भाषा में भी वह क्षमता मौजूद है कि वह समाज के भीतर व्याप्त असंगति को अपनी नज़र से पकड़ सकें और उसकी अभिव्यक्ति का सामर्थ्य बटोर सकें। उनकी भाषा आम आदमी की पीड़ा, राजनेताओं की अवसरवादिता, चाटुकारिता, वर्तमान विसंगतियों आदि को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती है। उन्होंने समाज में मौजूद बाल बेरोजगारी को भी अपनी सरल एवं सहज भाषा में पिरोने की कोशिश की है। इस संदर्भ में 'बच्चे काम पर जा रहे हैं, 'उनका भरोसा' आदि कविताएँ उदाहरणीय है। वर्तमान समय की राजनीति का वर्णन 'टॉमस मोर' जैसी कविता में कवि इस प्रकार वर्णन करते हैं-

"मैं टॉमस मोर का कटा हुआ सिर हूँ

उन्होंने मुझे लंदन ब्रिज पर लटका दिया है

उन्होंने कहा कि मैं राजसत्ता और धर्म के संबंधों का

विरोध करना बंद कर दूँ

मैंने इंकार कर दिया

वो चाहते थे की मैं राजा को धर्मसभा का अध्यक्ष मान लूँ

मैंने इंकार कर दिया"[2]

कवि राजेश जोशी ने अपनी सरल भाषिक संरचना के माध्यम से भी समाज के सच का उद्घाटन किया है। बहुत आसान भाषा का उपयोग के माध्यम से भी गंभीर भावों की पुष्टि उन्होंने की है। 'एक आदिवासी लड़की की इच्छा' से लेकर 'इत्यादि', 'सहायक क्रिया' और 'बेंड़ी किसनी' के भावबोध को अपनी कविता में दर्शाया हैं। भावानुकूल भाषा के प्रयोग के संदर्भ में एक और उदाहरण 'इस आत्महत्या को अब कहाँ जोडू' कविता में कवि स्पष्ट किया है। इसमें कवि ने देश में चल रहे किसान आंदोलन व किसान की आत्महत्या जैसे मुद्दों को चरितार्थ किया है। आज देश में किसान सब कुछ खेती के माध्यम से उपजाते हुए भी गरीबी की जिंदगी बिता रहे हैं एवं उनके बच्चे

खाने के लिए तड़प रहे हैं, जिसके चलते किसान रोज अपने देश में आत्महत्या कर रहे हैं। अतः इस प्रकार की समस्याएँ वर्तमान समय में हमारे देश में ज्वलंत रूप में उपस्थित है।

कविता में संप्रेषणीयता का गुण होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है वरना कविता में कोई अर्थ नहीं रहता। राजेश जोशी ने अपनी रचना को जनता तक पहुचाने के लिए आवश्यकतानुसार अन्य भाषाओं से भी शब्द ग्रहण किये हैं। ये शब्द ग्रहण कहीं पर भी कविता के भाव बोध में कठिनाई उत्पन्न नहीं करते हैं बल्कि ये एक प्रवाह में कविता की समझ को पुष्ट करती है। जोशी जी के काव्य में तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी, उर्दू, अंग्रेजी आदि कई भाषाओं के शब्द बेरोक-टोक मौजूद हैं। भावों को पुष्ट करने की प्रक्रिया में उन्होंने लोक प्रचलित कहावतें और मुहावरों का भी इस्तेमाल किया है।

तत्सम शब्द : कमल, सुर, दिन, सत्य, कवि, हरि, शत्रु, मति, अग्नि, कार्य, चंद्र, मुहूर्त, धर्म, जन्म, पत्र, अज्ञान, आक्रमण, पिता, बुद्धि, भक्ति, मन, रक्ष, विद्या, विज्ञान, जल, आदि।

तद्भव शब्द : काम, अंधेरा, खेत, ग्राहक, दही, सावन, घी, ओठ, दांत, रात, माँ, चाँद, कविता, जीभ आदि।

अंग्रेजी शब्द : प्लेटफार्म, प्लम्बर, टेलीफोन, काऊंटर, कॉलोनी, बैंक, रजिस्टर, स्कूल, अफसर आदि।

मुहावरे-कहावतें : 'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा का है जिसका अर्थ है बातचीत करना या उत्तर देना। राजेश जोशी ने कविता की भाषा को सरल करने हेतु कहावतें और मुहावरों का प्रयोग अधिक जगहों पर किया है। "खड़े-खड़े ऊंघाना"[3] "फूट-फूटकर रोना"[4] "चकनाचूर हो जाना"[5] आदि।

लोकोक्तियाँ : लोक या समाज में प्रचलित उक्ति को 'लोकोक्ति' कहा जाता है। लोकोक्ति को खंड-वाक्य, वाक्यांश या पद के अनुरूप माना जाता है। इन्होंने अपनी रचना में प्रसंगानुरूप इसका इस्तेमाल किया है। उदाहरणत: इन काव्य-पंक्तियों को अवलोकन कर सकते हैं– "आँख में

सुअर का बाल होना"[6] "एक अनार सौ बीमार"[7] आदि। जोशी जी की कई पंक्तियाँ, सूक्तियां एवं आंदोलनों में नारे के रूप में भी प्रयुक्त होती हैं। 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' 'मारे जायेंगे', आदि उदाहरण के तौर पर कविताओं को देखा जा सकता है।

5.2. **भावानुकूल चिह्नों का प्रयोग :**

भावानुकूल चिह्नों के जरिए जोशी जी ने अपनी कविताओं में अपनी भावनाओं और विचारों को पेश किया है, जिससे काव्य की दक्षता में वृद्धि होती है। कवि के भाव बोध की गहराई इन चिह्नों से और ज्यादा दिखाई पड़ती है। राजेश जोशी ने इसी संदर्भ में अलग-अलग प्रकार के चिह्नों का प्रयोग किया है। जिसके कुछेक उदाहरण निम्नलिखित हैं – पूर्ण विराम (।), अल्पविराम(,), उद्धरण(' '), अर्द्ध वाक्यसूचक(.....) आदि।

पूर्ण विराम : "एक दिन सारी जगह अतिरिक्तों से भर जाती है।"[8]

अर्द्ध वक्यसूचक : "मृत्यु सिर्फ़ मर गए आदमी के दुख और तकलीफ़ें दूर करती है\लेकिन बचे हुओं की तकलीफों में हो जाता है\थोड़ा इजाफ़ा और....."[9]

प्रश्नवाचक : "अब किसी के सामने किस मुहँ से डींग हाँकता\अपने शहर के तालाब की?"[10]

"सुनो शक्कर किस डब्बे में रखी है/और चाय की पत्ती कहाँ है?"[11]

विस्मयादिबोधक चिह्न : "अब वहीं कहीं रहना था\उन अनकही रह गई बातों को भी!"[12]

"ओ मेरे समय के लोगों!"[13]

इस प्रकार अपने काव्य में जोशी जी ने उपर्युक्त वर्णित सभी चिह्नों का इस्तेमाल किया है। जिसके द्वारा उनके काव्य और भी प्रभावी एवं सशक्त बन गए हैं।

5.3. प्रतीक योजना :

साहित्य या कला में प्रतीक अभिव्यक्ति को प्रभावशाली बनाने का एक हथियार है। प्रतीकों का प्रयोग आदिकाल से ही होता आ रहा है परन्तु परिवर्तित समय के साथ-साथ इसका भी रूप में बदलाव दिखाई पड़ने लगा है।

जोशी जी ने अपनी रचना में प्रतीकों का प्रयोग सशक्त एवं सुनियोजित रूप में किया है। कवि राजेश जोशी ने वर्तमान समाज में व्याप्त सामाजिक भयावहता, आम आदमी की कुंठा, संत्रास, व्यवस्था का यथार्थ रूप, बाजारवाद, नैतिकमूल्यों का विघटन आदि को उन्होंने विविध कविताओं में विभिन्न प्रतीकों द्वारा चित्रण किया है।

'छोटी नींद और सपने' इस कविता के माध्यम से कविवर ने हमारी समाज की भ्रष्ट व्यवस्था को दर्शाया है। 'जैसे-जैसे बढ़ती जाती है उम्र/छोटी हो रही है नींद' यह पंक्ति प्रतीकात्मक रूप में हमारी समाज की विषम परिस्थिति को दर्शाता है।

'जहर के बारे में कुछ बेतरतीब पंक्तियाँ' इस कविता में कवि ने जहर को एक प्रतीक के रूप में स्थापित करके हमारे देश की राजनीति के घिनौने रूप को अवलोकन कराया है जो जहर से भी विषैला हो चुका है। ऐसे जहरीले वातावरण में मानव समाज की दुर्गति का चित्रण उनकी कविताओं में हैं -

"सत्ताएँ इस जहर के बारे में अच्छी तरह जानती हैं
और इसका उपयोग करने में बहुत हुनरमंद होती हैं
धीमे जहर की यह तासीर होती है
की वह बहुत धीरे धीरे खत्म करता है जीवन को
क्या इस तर्क के आधार पर
समय को एक धीमा जहर कहा जा सकता है ?"[14]

इसी प्रकार जोशी जी ने अपनी रचना में अन्य प्रतीकों को भी इस्तेमाल में लाया है। जैसे – पहाड़, चाँद, बिल्ली, खटमल, खुजली, फूल, प्याज, तोता-मैना, नेलकटर, मोज़े, आदि। इस दृष्टि से अगर हम इनकी कविताओं का अवलोकन करते हैं तो कई प्रतीक योजना इनकी कविता में नज़र आती है। पलहे की काव्य रचना के समानंतर में समकालीन कविता में प्रतीक का प्रयोग कम हुआ है क्योंकि इस समय रचनाकार अपनी बात को सीधे सपाट ढंग से कहते हैं वहाँ किसी तरह का कोई लाग लपेट नहीं हैं। जैसे-

"हमारी भाषा कुछ बनक ही ऐसी है

कि बिना सहायक क्रिया के उसका काम लगभग नहीं चलता

काल को चिह्नित करती सहायक क्रिया अक्सर

शब्दों की पाँत में इस तरह अंत में आकर बैठती है

जैसे वह एक गरीब पावना हो

जो सिकुड़ कर बैठा हो पतंग के आखिरी कोने पर

कभी-कभी वक़्ता के मंतव्यों की व्यंजना भी छिपी रहती है उसमें

शासक अपने आदेशों में वृत्तिक सहायक क्रिया का

इस्तेमाल करते हैं अक्सर

संशय की गुंजाइश कम हो जाती है वाक्य में उसके आ जाने से

वह जितनी चुपचाप सी लगती है उतनी ही जिद्दी भी है

वह चाहे तो गड़बड़ा सकती है पूरे वाक्य को

अकेले !!"[15]

भाषा में प्रयुक्त सहायक क्रिया यहाँ सामान्य आम मनुष्य का प्रतीक है जिसका कोई महत्त्व नहीं समझा जाता जबकि यही अगर संगठित हो जाये तो क्रान्ति लाने का सामर्थ्य रखता है। इस प्रकार समाज में आम आदमी को उसका सही स्थान नहीं दिया जाता है जिसके चलते उसे हाशिए पर खड़ा कर दिया जाता है।

5.4. बिम्ब विधान :

रचनाकार अपनी अमूर्त भावों को बिम्बों के द्वारा ही मूर्त प्रदान करता है। इस समय के काव्य में बिम्ब का प्रयोग प्रबल रूप से कवियों द्वारा किया जा रहा है। कवि ने भी अपनी अधिकतर कविताओं में बिम्ब का बहुत सुंदर प्रयोग किया है। समाज में मौजूद विभिन्न विषम परिस्थिति को कवि ने अपनी कविता में बिम्बों के जरिए दर्शाया है। 'कौवा और मूर्ति' नामक कविता में इन्होंने बिम्ब का प्रयोग इस प्रकार से किया है –

"गांधीजी के माथे से आँख के पास तक

बह आई कौवा की बीट सूखकर सफेद हो रही है

अँधेरा इतना गहराता जा रहा है

कि गांधीजी की मूर्ति अँधेरे में विलीन हो गई है

और कौवा अब कहीं नहीं है

सिर्फ बीट का सफेद दाग चमक रहा है

अँधेरे में!"[16]

जोशी जी अपनी अनेक रचनाओं में बिम्ब के जरिए परिवार का टूटना, समाज में मूल्यों में हो रहे ह्रास आदि भाव बोध को चित्रित करते हैं। 'हमारे शहर की गलियाँ : एक' और 'हमारे शहर की गलियाँ : दो' कविता में कवि ने अपनी शहर भोपाल का जो चित्रण खींचा है। वे बहुत ही अद्भुत है।

'रात किसी का घर नहीं' काव्य के जरिए से इस समय की पारिवारिक समस्या का बिम्ब प्रस्तुत हुआ है। इस प्रकार की समस्याएँ आज प्रत्येक घर में हो रही है। जैसे-

"एक बूढ़ा मुझे अकसर रस्ते में मिल जाता है

कहता है कि उसके लड़के ने उसे घर से निकल दिया है

कि उसने पिछले तीन दिन से कुछ नहीं खाया है

लड़कों के बारे में बताते हुए वह अकसर रुआँसा हो जाता है

और अपनी फटी हुई कमीज को उघाड़कर

मार के निशान दिखाने लगता है

कहता है उसने बचपन में भी अपने बच्चों पर

कभी हाथ नहीं उठाया

लेकिन उसके बच्चे उसे हर दिन पीटते हैं"[17]

इस प्रकार राजेश जोशी ने पारिवारिक सम्बन्ध टूटते समाज में किस प्रकार की समस्याएँ उपस्थित हो रही है उसे अपनी कविताओं में रेखांकित किया है। इस प्रकार की विषम स्थिति के प्रति कवि सजक है।

इन्होंने अपनी रचना में बिम्ब विधान के जरिए हमें अनेक विषयों का अवलोकन कराया है। काम पर जाते हुए बच्चों की मज़बूरी का चित्रण भी बहुत ही सटीक रूप दिखाया है। वहीं खुशहाल जीवन बिताने वाले बच्चों का चित्रण भी बहुत ही सुंदर ढंग से खींचा है। अतः यह कहा जा सकता हैं कि वर्तमान कालीन कविताओं में कवियों ने बिम्ब के महत्त्व को उजागर किया है जिसके चलते कविता बहुत ही सहजता से ग्राह्य हो जाती है। बिम्ब के कारण कविता में प्रभावोत्पादकता झलकती है।

5.5. **भावात्मक शैली :**

राजेश जोशी ने मानवीय भावनाओं को बहुत ही संवेदनशील तरीके से व्यक्त किया है। इनकी भाषा मानव की मूल संवेदना से जुड़ी हुई है। राजेश जोशी को अपने शहर भोपाल से ज्यादा लगाव है। इन्होंने अपने शहर को लेकर बहुत सारी कविताएँ लिखी हैं। कविताओं के माध्यम से कवि अपने शहर से भावनात्मक जुड़ाव को अभिव्यक्त करता है। 'हमारे शहर की गलियाँ एक' 'हमारे शहर की गलियाँ दो' आदि कविताएँ इसी प्रकार की कविताएँ हैं। यथा -

"कुछ गलियाँ के रास्ते तो आसमान से होकर निकलते थे.....

बिना बात ही वो हमसे बतियाने लगते और कुछ दूर तक

हमें रास्ता दिखाने चले आते"[18]

इस कविता में कवि अपनी भावनाओं के जरिए से हमें भोपाल की गलियों तक पहुचाते हैं। भावनात्मक प्रभाव इनकी कविताओं में प्रबल रूप में दिखाई पड़ती है। इसी क्रम की अनेक कविताएँ हैं, जैसे 'अहद होटल', 'उस प्लम्बर का नाम क्या है', 'दो नन्हें मोज़े' आदि। कवि जिस भी विषय को उठाते हैं वह उनका अपना हो जाता है।

5.6. **व्यंग्यात्मक शैली :**

जोशी की रचना में व्यंग्यात्मक शैली स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। समाज के विभिन्न पक्ष पर इन्होंने अपने काव्य के द्वारा व्यंग्य किया है। कवि की कविताओं में राजनीतिक व्यंग्य ज्यादा दिखाई पड़ती है। 'चाँद की वर्तनी' काव्य संग्रह में संकलित 'यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' शीर्षक कविता में व्यंग्यात्मक शैली देखने को मिलता है। यथा -

"पानी को वाटर कहने से डूबने लगती है जिनकी संस्कृति की नब्ज

उन्हें गंगा के साबुन में बदल जाने से कोई एतराज नहीं

एक कवि ने कहा था कुछ बरस पलहे

की खतरनाक है सपनों का मर जाना

एक दोस्त पाठ को बदल कर कहता है

खतरनाक है सपनों का बिखर जाना

दूसरा दोस्त एक बार फिर बदलता है पाठ

सबसे खतरनाक है सपनों का बिक जाना"[19]

भ्रष्ट राजनीति और सत्ताधारी वर्गों पर कवि ने बहुत ही सुंदर व्यंग्य प्रहार किया है। राजेश जोशी एक समर्थ और सशक्त रचनाकार है। वे अपनी कविता में सत्ता की आलोचना करने से नहीं हिचकते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में एक उदाहरण प्रस्तुत है।

"सत्ताएँ इस जहर के बारे में बहुत अच्छी तरह जानती हैं

और इसका उपयोग करने में बहुत हुनरमंद होती हैं

धीमे जहर की यह तासीर होती है"[20]

इनके इस काव्य संकलन के अधिक अविताओं में व्यंगात्मक शैली दिखाई देती है। इन्होंने अपनी रचना को और चोटिल बनाने के लिए इस शैली का प्रयोग अधिक से अधिक किया है। आज की कविताओं में सबसे अधिक रचनाकार व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग करते हैं, जिसमें राजेश जोशी भी सफलता के साथ इस शैली का प्रयोग करते हुए नजर आते हैं।

5.7. वर्णनात्मक शैली :

जोशी जी की रचना को पढ़कर यह सहज ही महसूस किया जा सकता है कि उनकी कविता की प्रक्रिया अबाध और सतत् विकासमान है। उनकी कविताओं में एक बच्चे की दुनिया और जिज्ञासाओं से लेकर परिपक्व जीवनादर्श तक की यात्रा का क्रमिक वर्णन है। इनकी कविता 'नेलकटर' में हमें वर्णनात्मक शैली का पुट मिलता है।

"यह नेलकटर बरसों से हमारे घर में है

मेरे पिता भी हमेशा इसी से अपने नाखून काटते थे

वो नेलकटर के ऊपर लगी फाइल से घिसकर

नाखून की बीच हुई नोकों को गोल कर देते थे"[21]

इसी प्रकार इन्होंने अपनी रचना में वर्णनात्मक शैली का उपयोग अधिकतर स्थलों पर किया है। 'अहद होटल', 'चप्पलें', 'चित्रण में लड़की की उम्र', 'किस्सा काली धोबन का', 'संग्रहालय' आदि कविताएँ इसी शैली में लिखी गई कविताएँ है।

निष्कर्ष: जोशी जी के काव्य का भाव पक्ष जितना सबल एवं विस्तृत है शैली पक्ष भी उतना ही सशक्त और बेजोड़ है। इनकी रचनाओं में अंतर्वस्तु एवं शिल्प का सुंदर समन्वित रूप देखने को मिलता है। ये भावपक्ष की विविध प्रवृतियों के साथ शिल्प का समन्वय भी बहुत प्रभावी और गंभीर रूप से प्रस्तुत करते हैं। सहज सरल भाषा के साथ साथ भावानुकूल चिह्नों का प्रयोग, प्रतीक योजना, बिम्ब विधान एवं विविध प्रकार की शैली के प्रयोग से इनकी कविताएँ आज के समय में अत्यंत आकर्षित एवं प्रासंगिक है।

सन्दर्भ :

1. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.40
2. वही,पृ.87
3. जोशी,राजेश.*नेपथ्य में हँसी*.पृ.71
4. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.110
5. जोशी,राजेश.*एक दिन बोलेंगे पेड़*.पृ.179
6. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.73

7. जोशी,राजेश.*एक दिन बोलेंगे पेड़*.पृ.168

8. जोशी,राजेश.*ज़िद*. पृ.54

9. वही,पृ.85

10. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.23

11. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.40

12. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.45

13. जोशी,राजेश.*ज़िद*.पृ.66

14. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.26

15. वही,पृ.15

16. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.73

17. वही,पृ.13

18. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.67

19. जोशी,राजेश.*चाँद की वर्तनी*.पृ.91

20. जोशी,राजेश.*दो पंक्तियों के बीच*.पृ.26.

21. वही,पृ.56

उपसंहार

कविता साहित्यिक विधाओं में सबसे प्राचीन विधा है। अनादिकाल से ही साहित्यकार अपनी अन्तर्वेदना, चिंतन, उद्वेलन एवं संवेदनाओं को कविता के जरिए अभिव्यक्त करते आए हैं। हिंदी साहित्य के अंतर्गत काव्य विधा ने जितनी प्रसिद्धि हासिल की है, उतनी और किसी विधा ने नहीं की। वर्तमान समय की कविता वर्तमान जीवन के यथार्थ से संघर्षरत एक उत्कृष्ट साहित्यिक अभिव्यक्ति है। परिवर्तित समय के साथ-साथ हिंदी कविता में काफी बदलाव दिखाई पड़ता है। वर्तमान समय में कविता आम आदमी के साथ सीधा-सीधा जुड़ने का प्रयास कर रही है। आजादी के बाद और खास करके 1960 ई. के बाद हिंदी काव्य के क्षेत्र में अनेक प्रकार के काव्यांदोलन उपस्थित हुए। समकालीन साहित्य ने परंपरागत साहित्यिक रचनाओं को नकारते हुए नये अवधारणाओं को स्थापित किया। इसी काव्य जगत के आकाश में एक देदीप्यमान नक्षत्र के स्वरूप में राजेश जोशी का जन्म हुआ। इन्होंने अपनी रचना प्रकिया के माध्यम से साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान प्रस्तुत किया। इनकी रचनाएँ आम आदमी की चित्तवृतियों की अभिव्यक्ति है। समाज की गलत अवधारणाओं को इन्होंने अपने काव्य के जरिए प्रस्तुत किया है। अपने समय के सामाजिक, राजनीतिक आदि विविध पहलुओं को इन्होंने अपनी कविताओं में जोड़ने का काम किया है। बहुआयामी लेखक जोशी जी ने अपनी कलम चलाकर साहित्य के कई क्षेत्रों में अपनी अपार विद्वता का परिचय दिया है। इन्होंने कविता, कहानी, नाटक, पटकथा आदि विभिन्न क्षेत्र में अपनी कलम चलाई है। इनके साहित्य समाज में विद्यमान निम्न समुदाय की आवाज है। राजेश जोशी वर्तमान समय के एसे कवि है जिनकी कविताओं में सामान्य मनुष्य की आशा और आकांक्षाएँ पल्लवित होती है। आम लोगों के प्रति आत्मीयता, प्यार, अपनत्व, मानवीय रवैया उनके व्यक्तित्व का अहम हिस्सा है। जोशी जी की रचना में प्रगतिशील विचारधारा का असर दिखाई देती है। इनकी रचना संसार विपुल एवं व्यापक है जिसके चलते इनकी रचनाओं में हमें तोता-मैना के युग से लेकर वर्तमान समय का वर्णन दिखाई पड़ता है। इस प्रकार की रचना प्रकिया को दृष्टिगत करते हुए ए. अरविंदाक्षन कहते हैं कि 'राजेश जोशी की रचना सूक्ष्मतर चीजों से लेकर

बृहत्तर बहुलार्थी यथार्थ के आख्यानपरक वृत्तांतों और लोक कथाओं तक व्याप्त जीवनानुभवों की रचनाशीलता का पर्याय है'। राजेश जोशी ने समाज में उपस्थित हर एक समस्याओं को अपने काव्य के जरिए व्यक्त किया है। साहित्य के प्रति इनके योगदान को देखते हुए इन्हें विभिन्न राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाजा गया है।

इनकी रचना में युगबोध के विभिन्न पक्षों का सहज एवं सशक्त रूप में चित्रण दिखाई देता है। समाज में उपस्थित विकृतियों का चित्रण इन्होंने 'चाँद की वर्तनी' एवं 'ज़िद' कविता संग्रह में संकलित विभिन्न कविताओं के जरिए किया है। इनके द्वारा रचित अन्य काव्य-संग्रहों की तुलना में देखा जाए तो उपर्युक्त इन दोनों कविता-संग्रहों में संकलित अधिकतर कविताओं में हमारे युग के सभी पक्षों का वर्णन हुआ है। समाज मानव की जरूरतें और आवस्यकता पूर्ति के लिए निर्मित व्यक्ति समूह है। समाज और व्यक्ति एक दूसरे के परिपूरक है। गतिशील समय के साथ ही मनुष्य समाज में भी बदलाव दिखाई पड़ता है। युग में बदलाव आने से युगबोध की विशेषताएं भी बदलती रहती है। इसी गतिशील युगीन चेतना एवं सामाजिक प्रवृत्तियों को इन्होंने अपनी रचना के जरिए व्यक्त किया है। समाज में व्याप्त विकृतियाँ, अंतर्विरोध, वर्ग भेद, जातीय शोषण जैसी प्रवृत्तियों को कवि ने उपर्युक्त दोनों कविता संग्रह की अधिकांश कविताओं में वर्णन किया है। जोशी के काव्य में मशीनीकरण के प्रारंभिक दौर से उसके विकराल रूप धारण करने तक के सफ़र के दुष्प्रभावों का वर्णन है। बाजारवाद, शहरीकरण, भूमंडलीकरण जैसी आधुनिक प्रवृत्ति के कारण आज मानवीय समाज का स्वरूप ही पूर्ण रूप से बदल चुका है। इस प्रकार आज समाज के नैतिक मूल्य बिखर रहे हैं। राजेश जोशी अपने समय के महत्त्वपूर्ण कवियों में से एक हैं। जिनके काव्य में समाज में मौजूद हर एक पक्ष की प्रस्तुति हुई है। नवीन प्रवृत्ति और नवीन जीवन शैली के कारण ही आज समाज से संयुक्त परिवार बिखर रहा है। इसका यथार्थ वर्णन 'संयुक्त परिवार', 'रात किसी का घर नहीं' जैसी कविताओं में अवलोकन कर सकते हैं। उपर्युक्त कविताओं में समाज में उपस्थित सामान्य जन के प्रति इनकी संवेदना विशेष रूप में दृष्टिगत होती है। आम आदमी को केंद्र में इन्होंने अपनी कविताओं में रखा है साथ ही उनकी वास्तविक समस्याओं का विशेष रूप से वर्णन किया है।

आज सामाजिक एवं भौतिक रूप से हम निरंतर आगे बढ़ रहे हैं परन्तु इस समय भी हमारे समाज में पितृसत्तात्मक विचारधारा उपस्थित है। वर्तमान समय में भी देश के विभिन्न हिस्सों में स्त्री हिंसा, स्त्री शोषण जैसी घटनाएँ दिन प्रति दिन घटित हो रही है। राजेश जोशी की रचना प्रक्रिया उत्तर आधुनिक विमर्शों से होकर गुजरती है। वर्तमान में साहित्य जगत में विभिन्न विमर्शों को लेकर रचनाएं लिखी जा रही हैं। इसी क्रम में राजेश जोशी की रचना भी स्त्री, दलित, आदिवासी जैसे तमाम विमर्शों को विभिन्न रूप में उद्घाटित करती है। इसके साथ-साथ पर्यावरण एवं वृद्धों को लेकर भी इन्होंने कई कविताओं की रचना की है। राजेश जोशी ने इस समय नारी की सामाजिक स्थिति पर अपनी अवधारणा प्रकट की है। इन्होंने स्त्री विमर्श को लेकर कई महत्त्वपूर्ण कविताओं की रचना की है। 'उस औरत का घोड़ा', 'एक लड़की से बातचीत', 'रैली में स्त्रियाँ', 'आठ लफंगे और एक पागल औरत का गीत', 'उसकी गृहस्थी' आदि कविताएँ स्त्री चिंतन के नजरिए से सबल एवं प्रखर है। इन सारी रचनाओं में कवि ने स्त्री शिक्षा, स्त्री स्वाधीनता, नारी-पुरुष समानाधिकार जैसे विभिन्न मुद्दों पर अपनी अभिव्यक्ति दी है। इस प्रकार स्त्री को लेकर राजेश जोशी का दृष्टिकोण व्यापक एवं विस्तृत है।

मानव समाज को सहज एवं सशक्त रूप से चलने के लिए मजबूत आर्थिक स्थिति का होना भी आवश्यक है। अर्थव्यवस्था समाज के एक अभिन्न अंग के रूप में स्थापित है। वर्तमान समय में देश में बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई जा रही है, अधिक मात्रा में आलीशान भवनें बनाए जा रहे हैं, फिर भी हमारे देश के अधिकाशं लोग रोजी रोटी के लिए दर-दर भटक रहे हैं। इस प्रकार की आर्थिक असमानता एवं विषमताओं को जोशी जी ने अपनी रचना में उल्लेख किया है। भूमंडलीकरण एवं बाजारवाद के कारण समाज की परिभाषा ही बदल चुका है। औद्योगीकरण ने समाज के स्वरूप को पूर्ण रूप से अर्थोपजयी बना डाला है। जिसके चलते आज मनुष्य मानसिक रूप से प्रताड़ित हो रहा है। इस नवीन संस्कृति के कारण आज मानव समाज अकेलेपन का शिकार हो रहा है। आर्थिक नीति के दुरपयोग के कारण ही समाज में गरीबी, भुखमरी, बाल मजदूरी जैसी प्रवृत्तियां पनप रही है। आज का लोकतंत्र जनता का नहीं है पूंजीपतियों का है। इसी आर्थिक स्थिति के कारण ही आज

समाज में वर्ग भेद जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो रही है। राजेश जोशी ने निम्नवर्ग की गरीबी, मजदूरी, बेकारी, भुखमरी जैसी दयनीय स्थिति को अपने काव्य के जरिए प्रकट किया है। 'थोड़ी सी जगह', 'एक आदिवासी लड़की की इच्छा' जैसी रचनाएँ आर्थिक विषमताओं का ही चित्रण प्रस्तुत करती है।

राजनीति ने मानव जीवन को आज के समय में इस कदर प्रभावित किया है कि इससे तटस्थ रहना संभव नहीं है। वर्तमान समय की कविता ने अपने समय की घटनाओं को अपना वर्ण्य विषय बनाया है। वर्तमान समय में हम स्वतंत्र भारत में जी रहे हैं परन्तु आज भी व्यक्ति राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक एवं सामाजिक आदि अनेक क्षेत्रों में शोषण का शिकार होता हुआ हम देख सकते हैं। उन्होंने अपनी कविता में वर्तमान राजनीति की प्रकृति का चित्रण करते हुए उस पर व्यंग्य से प्रहार किया है। भ्रष्ट राजनीतिक परिस्थिति के यथार्थ रूप को उद्घाटित करते हुए जोशी जी ने 'यह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है' 'मारे जायेंगे',आदि विविध कविताओं की रचना की है। वर्तमान राजनीति का जो भयावह स्वरूप है उससे राजेश जोशी वाकिफ हैं। आज समाज में बर्बरता इतनी बढ़ गयी है कि अन्याय के विरोध में आवाज उठाने वालों को कुचल दिया जाता है। संप्रति राजनीति के उसूल बदल गए हैं। इनके काव्य में व्यापक रूप में राजनीतिक स्थिति का वर्णन अवलोकित होता है। जोशी जी अपनी रचना द्वारा आम लोगों की आवाज बनते हैं और सत्ता से सीधे सवाल करते हैं। 'टॉमस मोर' जैसी कविता के जरिए कवि ने इस समय की राजनीति की क्रूर व्यवस्था को दर्शाने की कोशिश की है। आज राजनीति का यथार्थ स्वरूप भयावह एवं घिनौना है। आज के समय में भ्रष्टचार किसी विशेष क्षेत्र व समुदाय तक सीमित नहीं है यह देशव्यापी रूप में हर एक जगह मौजूद है। इस प्रकार की भ्रष्ट व्यवस्था के प्रति आक्रोश इनके काव्य में तीव्र एवं प्रखर रूप में उपस्थित है।

राजनीतिक पक्ष के साथ-साथ आज समाज एवं देश में धार्मिक स्वरूप भी दूषित हो रहा है। धर्म ऐसी धारणा है, जिसे समाज अपने हित में निर्धारित करके उसे अपने लिए श्रेयष्कर समझता है। धर्म के कारण ही मानव में नैतिकता, सदाशयता, परोपकारिता जैसी भावनाएं उत्पन्न होती है।

वर्तमान समय में धार्मिक विसंगतियां समाज में विद्वेष उत्पन्न कर रही है। अन्धविश्वास, बाह्याडंबर, धर्मान्धता जैसी प्रवृत्तियों के कारण आज मनुष्य एक दूसरे से झगड़ रहे हैं। घार्मिक द्वन्द्वों के कारण हमारे समाज में किस प्रकार की घटनाएँ घट रही है इसका यथार्थ चित्रण राजेश जोशी ने अपनी विभिन्न कविताओं के जरिए से स्पष्ट किया है। 'मेरठ 87', 'घबराहट', 'नफरत करो', 'पागल', 'जब तक मैं अपील लिखता हूँ', 'सलीम और मैं और उनसठ का साल – 2', 'रफ़ीक मास्टर साहब और कागज के फुल' आदि कविताओं में कवि ने साम्प्रदायिकता के कारण किस प्रकार की समस्याएँ समाज में उपस्थित हो रही है उसका हुबहू वर्णन किया है। जोशी जी इस रूप के धार्मिक कट्टरपंथियों को कविता के माध्यम से फटकारते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी अवधारणा को आत्मसात करने को कहते हैं। साम्प्रदायिकता वर्तमान जीवन में एक भयंकर समस्या है। एसी प्रवृत्तियों के कारण ही आज मानवतावादी दृष्टिकोण समाज से लुप्त हो रही है। राजेश जोशी उस समुदाय के विपक्ष में खड़े रहते हैं जिसने समाज में बर्बरता को पुष्ट किया है। 'इत्यादि', 'पांव की नस', 'संग्रहालय', 'सहायक क्रिया' जैसी कविता के माध्यम से राजेश जोशी ने सामान्य जन के प्रति मानवीय संवेदना प्रकट किया है।

हम किसी देश या समाज के विकास का निरीक्षण संस्कृति के आधार पर कर सकते हैं। इसमें समाज की रीति-नीति, कला, ज्ञान-विज्ञान, विश्वास के साथ निजी प्रवृत्ति या विचार समाहित रहता है। आधुनिक प्रवृत्ति के कारण वर्तमान समय में समाज से नैतिक मूल्य घट रहे हैं। समाज में चल रही परंपरावादी नीतियाँ, रिश्ते-नाते, प्रेम, सौहार्द, सच्चाई आदि समाप्त हो चुके हैं। राजेश जोशी ने इस प्रकार के परिवर्तित सामाजिक मूल्य को अपनी कविता के माध्यम से दिखाया है। मूल्य परिवर्तन के कारण ही आज संयुक्त परिवार टूट रहा है और घर के बुर्जुगों की समस्याएँ बढ़ रही है। जिसके चलते कवि को अक्सर रास्ते में बूढ़ा मिल जाता है। नए मूल्य एवं जीवन शैली के कारण प्राकृतिक संपदा भी निरंतर बिखर रही हैं। यह भी वर्तमान समय में चिंता का विषय बन रहा है। मानव एवं प्रकृति का संबंध प्रारंभ से है। प्रकृति के बिना मानव जीवन अपूर्ण और अधूरी है। इस प्रकार मनुष्य एवं प्रकृति का संबंध अपरिहार्य है। इस विकास के दौड़ में शहरीकरण, औद्योगीकरण

जैसी योजनाएं पर्यावरण को प्रदूषित कर रहा है। राजेश जोशी ने पर्यावरण से संबंधित ऐसे ज्वलंत विषयों को अपने काव्य के जरिए उद्घाटित किया है। 'विलुप्त प्रजातियां', 'किस्सा उस तालाब का' जैसी कविताएँ प्रकृति से संबंधित विषय वस्तु को लेकर ही प्रस्तुत होती है।

राजेश जोशी मूलतः मानवतावादी कवि है उनकी समग्र रचनाओं में मानवतावाद दिखाई देता है। इनकी रचनाओं का भाव पक्ष जितना मजबूत है कला पक्ष भी उतना ही सशक्त है। जोशी जी अपने विचारों को उद्घाटित करने हेतु कोमल एवं सहज भाषा शैली का प्रयोग किया है। परिवर्तनशील समय के साथ-साथ कविताओं की भाषा शैली भी परिवर्तित हो रही है। राजेश जोशी ने इस समय युगीन स्थितियों को उद्घाटित करने के लिए युग अनुकूल भाषा शैली का प्रयुक्त किया है। इनकी रचनाओं की भाषिक संरचनाओं का अध्ययन करके हम अपने समय एवं समाज की भाषिक युगबोध को जान सकते हैं। वर्तमान समय में भ्रष्टचार, बेकारी, दरिद्रता जैसी समस्याएँ समाज में उपस्थित है। क्रूर राजनीतिक स्थिति के प्रति इन्होंने अपनी आवाज बुलंद की है। इनके काव्य के जरिए हम वर्तमान भारत का चित्र देख सकते हैं। इनकी कविताएँ अपने युग के हर एक पक्ष को दर्शाते हुए उसके प्रति चिंतित भी है। अतः इनकी कविताएँ व्यापक जीवनानुभूति तथा सूक्ष्म दृष्टि के कारण वर्तमान समय की कविता में विशेष स्थान दर्ज कराती है। इनकी रचना प्रक्रिया आम आदमी, शोषित पीड़ित तथा समाज के निचले तबके के लोगों से सीधा-सीधा जुड़ती हुई दिखाई देती है। समाज एवं देश के हर एक पक्ष को प्रस्तुत करने वाला जोशी की रचना क्षेत्र असीमित है। इसप्रकार इनकी कविताओं के जरिए वर्तमान समय की युगीन चेतना को जान सकते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि जोशी इस समय के रचनाकारों में विशेष उपस्थिति रखने वाले सर्जक है। आम मनुष्य की पीड़ा, शोषित पीड़ितों के प्रति हमदर्दी, मध्य वर्ग की समस्याओं को प्रस्तुत करने वाले राजेश जोशी के काव्य देश एवं राष्ट्र में जनप्रिय होता जा रहा है। युगबोध की नजरिए से जोशी के काव्य अत्यंत उपयोगि है। अतः इनकी कविता अपने युग से संपृक्त होकर युगबोध के विविध पक्षों पर सजग और गहनता से विचार करती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आधार ग्रन्थ :

जोशी,राजेश.(2006).*चाँद की वर्तनी*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

जोशी,राजेश.(2015).*ज़िद*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

सहायक ग्रन्थ :

अग्रवाल,केदारनाथ.(2013).*प्रतिनिधि कविताएं*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

अम्बुज,कुमार.(2018).*प्रतिनिधि कविताएँ*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

इल्लत,डॉ. प्रभाकरन हेब्बार.(2019).*पर्यावरण और समकालीन हिन्दी साहित्य*.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

उपाध्याय,डॉ.पशुपतिनाथ.(2013).*समकालीन हिन्दी कविता : दशा और दिशा*.मथुरा:जवाहर पुस्तकालय.

उपाध्याय,विश्वम्भरनाथ.(1976).*समकालीन कविता की भूमिका*.नई दिल्ली:मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया प्रकाशन.

अरविन्दाक्षन,ए.(2018).*समकालीन हिंदी कविता*.नई दिल्ली:राधाकृष्ण प्रकाशन.

कथूरिया,सुंदरलाल.(2015).*साहित्य आधुनिक अत्याधुनिक*.दिल्ली:साहित्य प्रकाशन.

कमल,अरुण.(2016).*प्रतिनिधि कविताएं*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

कल्याण चन्द्र.(1996).*समकालीन कवि और काव्य*.कानपूर:चिंतन प्रकाशन.

कुमार,आशुतोष.(2010).*समकालीन कविता और मार्क्सवाद*.दिल्ली:शिल्पायन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स.

कुमार,डॉ.अनुपम.(2013).*समकालीन कविता और राजेश जोशी*.दिल्ली:शिवालिक प्रकाशन.

गणेशन,एस.एन.(2019).*अनुसंधान प्रविधि सिद्धान्त और प्रक्रिया*.प्रयागराज:लोकभारती प्रकाशन.

गहलोत,डॉ.शीला.(2014).*समकालीन कविता सामाजिक चेतना के संदर्भ में*.उत्तर प्रदेश:हिंदी साहित्य निकेतन.

गायकवाड़,डॉ.पंडित साहेबराव.(2016).*राजेश जोशी-सृजन के आयाम*.कानपुर:विद्या प्रकाशन.

घोरपड़े,डॉ.पद्मजा.(2013).*1960 से 2009 तक समकालीन हिन्दी कविता की नयी सोच*.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

जैन,डॉ.रवीन्द्र कुमार.(2008).*साहित्यिक अनुसंधान के आयाम*.नयी दिल्ली:नेशनल पब्लिशिंग हाउस.

जोशी,राजेश.(2002).*एक दिन बोलेंगे पेड़*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

जोशी,राजेश.(2004).*एक कवि की नोटबुक*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

जोशी,राजेश.(2004).*नेपथ्य में हँसी*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

जोशी,राजेश.(2012).*कवि ने कहा*.दिल्ली:किताब घर प्रकाशन.

जोशी,राजेश.(2014).*दो पंक्तियों के बीच*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

जोशी,राजेश.(2015).*समकालीनता और साहित्य*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

जोशी,राजेश.(2017).*प्रतिनिधि कविताएँ*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

ठाकुर,डॉ.उषा.(1998).*हिन्दी और नेपाली साहित्य के प्रतिनिधि हस्ताक्षर*.नयी दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

डबराल,मंगलेश.(2017).*प्रतिनिधि कविताएं*.नई दिल्ली:राजकमल पेपरबैक्स.

डॉ.अमरनाथ.(2012)*हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

डॉ.नगेंद्र एवं डॉ.हरदयाल.(संपा.).(2017).*हिन्दी साहित्य का इतिहास*.नयी दिल्ली:मयूर प्रकाशन.

डॉ.पी. रवि.(2011).*कविता का वर्तमान*.नयी दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

तिवारी,अजय.(2015).*उत्तर-आधुनिकता कुलीनतावाद और समकालीन कविता*.दिल्ली:नयी किताब.

तिवारी, डॉ.अनन्तकीर्ति.(1996).*रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा*.वाराणसी:विश्वविद्यालय प्रकाशन.

तिवारी,डॉ.भोलानाथ.(2017).*भाषा विज्ञान*.नई दिल्ली:किताब महल.

तिवारी,विश्वनाथप्रसाद.(2018).*समकालीन हिंदी कविता*.नई दिल्ली:लोकभारती प्रकाशन.

त्रिपाठी,डॉ.शम्भुनाथ एवं डॉ.श्रद्धानंद.(संपा.).(2011).*समकालीन प्रतिनिधि कविता और उनकी कविताएँ*.वाराणसीःविश्वविद्यालय प्रकाशन.

देशमुख, डॉ.वर्षा.(2017).*राजेश जोशी का काव्य संवेदना और शिल्प*.कानपुर:विद्या प्रकाशन.

नवल,नंदकिशोर.(2014).*हिंदी कविता: अभी,बिल्कुल अभी*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

नागर,डॉ.विमल शंकर.(1985).*हिंदी के आँचलिक उपन्यास: सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ*.मुरादाबाद:प्रेरणा प्रकाशन.

नारायण,कुँवर.(2017).*प्रतिनिधि कविताएं*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

निश्चल,डॉ.ओम.(2020).*कविता के वरिष्ठ नागरिक*.कानपुर:अमन प्रकाशन.

नीरज.(संपा.).(2013).*राजेश जोशी स्वप्न और प्रतिरोध*.नई दिल्ली:स्वराज प्रकाशन.

पचौरी,सुधीर.(2010).*उत्तर-आधुनिक साहित्यिक विमर्श*.नयी दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

पाण्डेय,मनोज.(संपा.).(2017).*समकालीन साहित्य वैचारिक चुनौतियाँ*.दिल्ली:ए.आर.पब्लिशिंग कम्पनी.

प्रेमचंद,मुंशी.(2017).*साहित्य का उद्देश्य*.वाराणसी:विश्वविद्यालय प्रकाशन.

पाण्डेय,मैनेजर.(2013).*साहित्य और इतिहास दृष्टि*.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

भ्रमर,रवीन्द्र.(1972).*समकालीन हिन्दी कविता*.बिहार:राजेश प्रकाशन.

मिश्र,डॉ.राजेन्द्र.(2006).*भारतीय साहित्य की अवधारण*.नई दिल्ली:तक्षशिला प्रकाशन.

मिश्र,रवीन्द्रनाथ.(2013).*अंतिम दशक की हिन्दी कविता*.इलाहाबाद:लोकभारती प्रकाशन.

मेहेर,डॉ. छबिल कुमार.(संपा.).(2018).*राजेश जोशी संचयिता*.पंचकूला:आधार प्रकाशन.

यशपाल.(2016).*मार्क्सवाद*.इलाहाबाद:लोकभारती प्रकाशन.

वाजपेयी,अशोक.(संपा.).(2017).*प्रतिनिधि कविताएं गजानन मा. मुक्तिबोध*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

विश्वास,विनय.(2009).*आज की कविता*.नयी दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

वर्मा,.हरिश्चंद्र.(1978).*तुलसी साहित्य में शारीरविज्ञान और मनोविज्ञान*.रोहतक:अर्चना प्रकाशन.

शर्मा,रामविलास.(2010).*भाषा, युगबोध और कविता*.नयी दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

शुक्ल,आचार्य रामचन्द्र.(2012).*चिंतामणि*.नई दिल्ली:लोकभारती प्रकाशन.

शुक्ल,आचार्य रामचन्द्र.(2013).*हिन्दी साहित्य का इतिहास*.वाराणसी:विश्वविद्यालय प्रकाशन.

श्रीवास्तव,जगदीश नारायण.(2016).*इक्कीसवीं सदी कविता और समाज*.दिल्ली:अमरसत्य प्रकाशन.

श्रीवास्तव,परमानंद.(2015).*कविता का अर्थात्*.नयी दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

श्रीवास्तव,परमानन्द.(2018).*कविता का उत्तर जीवन*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

सराफ,डॉ.रमकली.(1997).*समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ*.वाराणसी:विश्वविद्यालय प्रकाशन.

सहाय,रघुवीर.(2018).*प्रतिनिधि कविताएं*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

सिंह,केदारनाथ.(2014).*जमीन पक रही है*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

सिंह,डॉ.नामवर.(संपा.).(2018).*प्रतिनिधि कविताएं नागार्जुन*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

सिंह,नरेंद्र.(2012).*साठोत्तरी कविता में जनवादी चेतना*.नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन.

सिंह,नामवर.(2013).*कविता के नए प्रतिमान*.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन.

सुमेष,डॉ.ए.एस.(संपा.).(2016).*समकालीन हिन्दी साहित्य में पर्यावरण विमर्श*.कानपुर:अमन प्रकाशन.

सेंगर'ज्योतिर्मयी',डॉ.निशा.(2018).*हिन्दी की वर्तमान काव्य परंपरा में राजेश जोशी की काव्य-सृष्टि का अध्ययन*.इलाहाबाद:साहित्य भंडार.

सोनटक्के,डॉ.माधव.*समकालीन नाट्य विवेचन*.कानपूर:विकास प्रकाशन.

पत्र-पत्रिकाएँ:

पचौरी,सुधीर(संपा.).(2016).वाक.अंक-21.

पचौरी,सुधीर(संपा.).(जून,2017).वाक.अंक-26.

लकड़ा,मुकुल(संपा.).(अप्रैल,2017).आदिवासी.अंक-100.

आनन्द,मधुसुदन(संपा.).(मार्च ,2019).*नया ज्ञानोदय*.अंक-193.

सिंह,नलिन रंजन(संपा.).(मई-अक्टूबर,2021).*कविता बिहान*.अंक-4

कोश-ग्रन्थ एवं इंटरनेट से प्राप्त सामग्री :

दास,श्यामसुंदर.(संपा.).(1968).*हिन्दी शब्द कोश*.काशी:काशी प्रचारिणी सभा.

पाण्डेय,डॉ.पृथ्वीनाथ.(2015).*मानक सामान्य हिन्दी*.नई दिल्ली:अरिहंत पाब्लिकेशन्स.

वर्मा,आचार्यरामचंद्र.(संपा.).(2014).*बृहत् प्रामाणिक हिंदी कोश*.नई दिल्ली:लोकभारती प्रकाशन.

वर्मा,रामचन्द्र.(2012).*मानक हिन्दी कोश*.इलाहाबाद:लोकभारती प्रकाशन.

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/307071

https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/307188?mode=full

अनुसंधित्सु का विवरण

नाम : भानुभक्त बस्नेत

शिक्षा : एम.ए. हिंदी

लघु शोध-प्रबंध का शीर्षक : "राजेश जोशी की कविताओं में युगबोध : विशेष संदर्भ 'चाँद की वर्तनी' और 'ज़िद' काव्य-संग्रह"

प्रवेश की तिथि : 22\06\2019

शोध प्रस्ताव की संस्तुति

(1) पंजीकरण संख्या : 19\M.Phil\HND\01

(2) पंजीकरण तिथि : 13\08\2020

अध्यक्ष
हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक

शोध निर्देशक
हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक